प्रज्ञा

2018-19

College Accredited with
CGPA of 3.46 on Four Point Scale
at 'A' Grade

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद

(संघटक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, ALLAHABAD

(Constituent College of University of Allahabad)

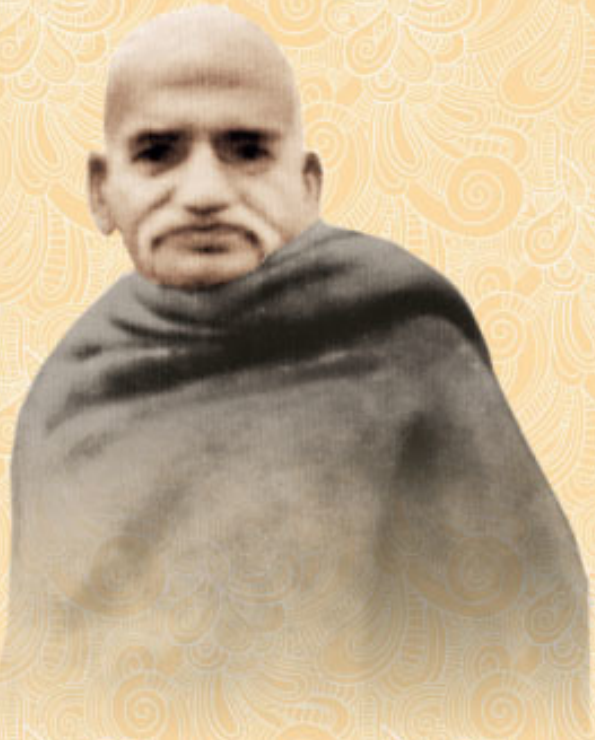

महाविद्यालय-आधार

यशः काय सदनलाल खन्ना जी
संस्थापक - सारस्वत खत्री पाठशाला, इलाहाबाद

स्मृति शेष प्रो. दामोदर दास खन्ना
(पूर्व अध्यक्ष एस के पी सोसायटी एवं
एस एस खन्ना महिला महाविद्यालय)

डॉ0 आशा सेठ
चेयर पर्सन
महाविद्यालय - अधिशासी निकाय

श्रीमती सरल टण्डन
मैनेजिंग ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

श्री विनय मेहरोत्रा
ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

प्रो.लालिमा सिंह
प्राचार्या

सम्पादकीय

मकान की पहली खिड़की

आज स्त्री विचार के केन्द्र में है। स्त्री के स्वप्न, संघर्ष, संकट, इच्छाएं और जरूरतों एवं उपलब्धियों को लेकर पूरे विश्व में एक नया दर्शन रचे जाने की प्रक्रिया में है। अपने देश के सन्दर्भ में यह प्रक्रिया अधिक जटिल है क्योंकि यहां महिलाओं की स्थिति बहुत पहले से जटिल रही है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिवारिक कारणों के चलते यहां औरत का 'निर्माण' कुछ अलग ढंग से हुआ। यह सत्य है कि विश्व के किसी भी देश में पिछड़े समुदाय को समान तरह के संकट, संत्रास एवं दंश झेलने पड़ते हैं, भारतवर्ष में यह विसंगति ज्यादा गुम्फित रही है।

तकनीकी और संचार क्रान्ति के दौर में सूचनाओं और ज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ अपने देश की स्त्रियों में भी जागरूकता बढ़ी है। शिक्षा के विस्तार और आर्थिक मुक्ति की संभावनाओं ने स्त्री को अपने बारे में स्वतन्त्र रूप से सोचने का अवसर और साहस दिया है। लेकिन यह भी सत्य है कि जब आज तक राजनीतिक-सामाजिक स्वतन्त्रता की ही व्याख्या नहीं हो सकी है फिर स्त्री स्वतन्त्रता की बात उस परिप्रेक्ष्य में कैसे की जा सकती है। स्वतन्त्रता का मूल अभिप्राय है 'निर्णय की स्वतन्त्रता'। स्वतन्त्रता का रूप क्या होगा यह स्वयं स्त्रियों को ही तय करना है, यह निर्णय कुछ 'विशिष्ट' महिलाओं द्वारा नहीं किया जा सकता। स्त्री के स्वतन्त्र होने की संभावना और उससे उत्पन्न होने वाले काल्पनिक पारिवारिक, सामाजिक असंतुलन को लेकर अभी समाज पूरी तरह निर्णायक, निर्भीक, सदाशयी और प्रेरक की अपनी भूमिका नहीं तय कर पा रहा है जबकि एक मृदुल सत्य यह है कि स्वावलम्बी होती स्त्री परिवार और समाज के लिए अधिक सकारात्मक एवं सहयोगी रूप में सामने आ रही है।

भारत में तो संस्कृति के बदलाव की लड़ाई तभी शुरू हो गयी होगी जब 'पहली' स्त्री ने अपने अधिकारों की मांग की होगी ओर वर्चस्वशाली संस्कृति के समक्ष प्रतिरोधात्मक संस्कृति की शुरूआत की होगी। कविता की भाषा में कहें तो स्त्री ने अपनी सकारात्मक स्वतन्त्रता पहली बार तब महसूस की होगी जब किसी मकान में पहली खिड़की खुली होगी। पुंसवादी सत्ता-विमर्श की विद्रूपता के विरोध में उठने वाले छोटे से छोटे स्वर को भी सांस्कृतिक वर्चस्व के प्रतिरोध के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

आशा उपाध्याय

संरक्षिका
प्रो. लालिमा सिंह
प्राचार्या

छात्रा प्रतिनिधि
रानी सोनी
नयना मिश्र
अफ़जून जाफरी
तृप्ति कौशल
शिवानी त्रिपाठी

सम्पादक
डॉ. आशा उपाध्याय
सम्पादक मण्डल
डॉ. ज्योति कपूर
डॉ. मंजरी शुक्ला
डॉ. रुचि मालवीय
डॉ. आरिफ़ा बेगम
डॉ. सौम्या कृष्ण
डॉ. अनुराधा सिंह
डॉ. शालिनी रस्तोगी
डॉ. तनुश्री रॉय

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
179 डी, अतरसुइया, इलाहाबाद 211 003, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 0532-2659124, 2451692, 2451791
E-mail : khanna_girls_dc@yahoo.co.in
Website : sskhannagirlsdc.com

इलाहाबाद विश्वविद्यालय
सीनेट हाउस, इलाहाबाद (उ.प्र.)- 211 002, भारत
University of Allahabad
Senate House, Allahabad (U.P.)- 211 002, India

Professor Rattan Lal Hangloo
Vice-Chancellor

प्रोफेसर रतन लाल हंगलू
कुलपति

दिनांक: 16.04.2019

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 'सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद' अपनी वार्षिक पत्रिका **'प्रमा'** प्रकाशित कर रहा है। आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालय के विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की रूप रेखा तथा शिक्षक व शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के विभिन्न लेखों से परिपूर्ण होगी। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना व्यक्त करता हूँ साथ ही प्रकाशक मण्डल को भी धन्यवाद।

(रतन लाल हॉंगलू)

Former Vice-Chancellor / पूर्व कुलपति
University of Kalyani / कल्याणी विश्वविद्यालय
Nadia - 741235 (West Bengal) / नादिया - 741235 (पश्चिम बंगाल)

Camp Office / शिविर कार्यालय:
Tele. / दूरभाष : (0532) 2545020
Fax / फैक्स : (0532) 2545733

Main Office / मुख्य कार्यालय:
Tele. / दूरभाष : (0532) 2461089, 2461157
Tele. / Fax टेली. / फैक्स : (0532) 2461157
e-mail / ई मेल : vcoffice@allduniv.ac.in

निवर्तमान न्यायमूर्ति अरुण टण्डन
इलाहाबाद उच्च न्यायालय
इलाहाबाद

संदेश

महाविद्यालय पत्रिका के प्रकाशन की सफलता इस दायित्वबोध में है कि वह अपने समन्वित प्रयास से छात्राओं की अन्तर्निहित प्रतिभा को विकास का अवसर प्रदान कर पूर्णता के पथ पर अग्रसर करे। हर्ष का विषय है कि अपने उद्देश्य के अनुरूप गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय पत्रिका 'प्रमा' छात्राओं की सृजन यात्रा और समाज के मध्य संवाद स्थापित कराने के लिए तत्पर है। ईश्वर से प्रार्थना है महाविद्यालय की छात्राएं नैतिकता के उदात्त आदर्श और तर्क पूर्ण चिन्तन को हथियार बनाकर अपने समय की चुनौतियों को स्वीकार करें, सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक हो, उनका अध्ययन और शोध, विषयों के नये–नये आयाम प्रस्तुत करे। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(अरुण टण्डन)

डॉ. आशा सेठ
चेयर पर्सन, अधिशासी निकाय
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
इलाहाबाद

संदेश

महाविद्यालय की पत्रिका 'प्रमा' से मेरा शुरू से विशेष लगाव रहा है। शायद इसलिये कि इसके जन्म, इसके नामकरण, प्रारम्भिक संघर्षों से जूझ कर आगे से आगे बढ़ने को मैने स्वयं देखा ही नहीं है, उसकी सहभागी भी रही हूँ। प्रारम्भ में महाविद्यालय में छात्राओं की संख्या बहुत कम थी। समाज के पिछड़े वर्ग से आयी उन छात्राओं का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिये महाविद्यालय ने उनमें छिपी प्रतिभाओं को उजागर किया, उनको विकसित किया और 'प्रमा' के माध्यम से उनको समाज में स्थान दिला कर उनका मनोबल बढ़ाया। इस गुरुतर कार्य का मुख्य श्रेय महाविद्यालय परिवार और विशेषकर उसके संपादक मंडल को जाता है जिनके अथक प्रयास से 'प्रमा' अपने स्थायी वार्षिक रूप को ग्रहण कर सकी और फिर महाविद्यालय की उन्नति के साथ वर्ष दर वर्ष निखरती ही गयी। 'प्रमा' के प्रति वर्ष के अंक मानो महाविद्यालय की वार्षिक प्रगति के आईना हैं और अपने संयुक्त रूप में महाविद्यालय का गौरवपूर्ण इतिहास बन गये हैं। समाज और महाविद्यालय के बीच एक स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करने में पत्रिका 'प्रमा' ने सदैव एक दृढ़ सेतु का कार्य किया है जिससे दोनों को ही लाभ पहुँचा है। मात्र कला संकाय से प्रारम्भ होकर, विज्ञान संकाय, वाणिज्य संकाय, बी.एड. तथा अन्य अनेकानेक नये विषयों और परास्नातक शिक्षा की ओर बढ़ते–बढ़ते महाविद्यालय अब पाँच वर्षीय विधि संकाय की ऊँचाई तक पहुँच चुका है। इस संपूर्ण प्रगति की साक्षी है पत्रिका 'प्रमा' जो साधुवाद की पात्र है।

आशा सेठ

Sar-La Education Trust

Admin Office : 316, Navneelam, B-wing (3rd Floor), 108, R. G. Thadani Marg, Worli, Mumbai 400 018, India. Tel: +91 22 6660 7631 Email : info@sar-la.in

Message

The name of the magazine 'Prama' may seem different, but it just means The Best; Knowledge of Truth. This magazine gives an insight into the way of life of students, their creativity and activities. It is a platform that exhibits the literary skills and innovative ideas of teachers and students.

It is firmly believed that the quality of teachers in educational institutions determines the eventual quality of education. The role of the colleges in preparing high quality teachers therefore is imperative. S. S. Khanna Girls Degree College is a perfect example.

Students are nation builders of tomorrow. During college, the knowledge that you gain, the fine qualities that you imbibe and the technical skills that you learn to apply will be your major contribution to your parents, your society and your nation. You do not have to be an achiever to start but you have to start to become an achiever.

I convey my best wishes to the Students, Faculty and Staff of the college for a brighter future.

With Best Regards,

Chetan Mehrotra
Executive Trustee

April 10, 2019

Regd Office : 35, Paschimi Marg, Vasant Vihar, New Delhi-110057, India.

सदनलाल सांवलदास खन्ना स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
Accredited 'A' grade by NAAC

क्रमांक ..... दिनांक .....

दिलीप मेहरोत्रा
कोषाध्यक्ष, **अधिशासी निकाय**
एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
इलाहाबाद।

सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महाविद्यालय पत्रिका 'प्रमा' का नया अंक प्रकाशित होने जा रहा है। वर्ष पर्यंत की शैक्षिक और अकादमिक गतिविधियों की सुव्यवस्थित आख्या के प्रकाशन के साथ 'प्रमा' वह मंच भी है जहाँ छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को विकास का अवसर मिलता है । इस सृजनात्मक मंच के माध्यम से हमारी छात्राएँ निरंतर राष्ट्र, समाज, साहित्य और इतिहास से जुड़े विषयों पर वैचारिक विमर्श का सार्थक हिस्सा बनें यही शुभकामना है। इस नए अंक के प्रकाशन के लिये मेरी ढेरों शुभकामनाएँ।

(दिलीप मेहरोत्रा)

179-डी, अतरसुइया, इलाहाबाद-211003
E-mail : khanna_girls_dc@yahoo.co.in
Website : www.sskhannagirlsdc.com
2659124
(0532) 2451692
2451791

FROM THE PRINCIPAL'S DESK

The year has turned a full circle and the college has been able to accomplish 44years of its service to the cause of girl education. The ride in the journey of the session 2018-19 was full of events and activities that lead to the growth and progress of the students and faculty as well. I sincerely acknowledge and applaud the sincere efforts of my students and the staff in letting me lead the institution a step forward and extend my best wishes to them in all future endeavours. I would continually seek their cooperation and coordination in steering the college towards achievement of the vision set by the founders. From my desk I assure them of creating diverse opportunities for expression of their innate potential and all-round development of their personality. The Editorial Team deserves appreciation for showcasing a glimpse of all the activities carried out in the session and highlighting the achievements of the College. On the threshold of the new academic session, I would again take hold of the steering wheel to lead the ceaseless journey with my sincere and humble gratitude to all those people who have been a part in taking the institution through the path of success. Wish you good luck and success ahead.

L. Singh

Prof. Lalima Singh

आलेख

ऐसे ही कोई 'नामवर' नहीं होता

हुजैमा शहंशाह
एम.ए. द्वितीय वर्ष, हिन्दी

भवानी प्रसाद मिश्र ने लिखा कि–

जिस तरह हम बोलते हैं
उस तरह तू लिख
और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख
चीज ऐसी दे कि जिसका स्वाद सिर चढ़ जाय
बीज ऐसा बो कि जिसकी बेल बन बढ़ जाय।

नामवर सिंह जी के द्वारा आलोचना के बीज साहित्य में इस तरह बोए गये हैं कि आज उसकी 'बेल' साहित्य के वन में अत्यन्त विस्तृत हो चुकी है। बनारस से तीस मील दूर एक छोटे गाँव जीवनपुर में 28 जुलाई 1926 में जन्मे डॉ. नामवर जी 19 फरवरी 2019 को चिर निद्रा में लीन हो गये। उनका जाना साहित्य जगत की एक अपार क्षति हैं। परन्तु साहित्य और साहित्यकार कभी मरते नहीं।

नामवर सिंह जी ने जहां भी हस्तक्षेप किया है, वह चाहे जितना संक्षिप्त हो, कोई न कोई नई बात, नई दृष्टि अथवा उसे देखने समझने का नया नज़रिया जरूर मिल जाएगा। चाहे वे कबीर पर लिखे गये लेख हों या मैथिलीशरण गुप्त पर। हिन्दी की नयी कविता से लेकर आज तक की कविता के साथ अगर किसी एक आलोचक का नाम अभिन्न रूप से जुड़ा रहा है तो वे थे– डॉ. नामवर सिंह। उनके लेखन के विस्तृत भू-भाग में कविता सम्बन्धी अध्ययन, लेखन और चिंतन का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। नामवर जी ने कविता के सिद्धान्त पक्षों का रचनात्मक विश्लेषण भी किया तो सृजनात्मक काव्य लेखन की आलोचना भी।

नामवर जी का मानना था कि हर लेखक का अपना सच होता है जिसे वह व्यक्त करता है। नामवर जी के जीवन का भी अपना सच है। उनका जीवन भी आरम्भ से संघर्षों वाला रहा। बनारस से निकलकर दिल्ली में रहते हुए उन्होंने खुद स्वीकार किया था कि 'मेरे जीवन की रेखा भी कहीं टेढ़ी हो गई, मेरे जीवन में परिवार का सुख नहीं मिला.... क्या बताऊँ मैं तो सब से कटकर परदेशी हो गया हूँ' असफलताओं, विफलताओं, बेरोजगारी और विरोध से दो-चार नामवर सिंह को भी होना पड़ा। नामवर जी जीवन क्षेत्र के हर विरोध को स्वीकार करते हैं, और विरोध करने वाली जगह पर अड़कर खड़े रहते हैं। अपनी मार्क्सवादी-प्रगतिवादी विचारधारा के हथियार को वे कभी छोड़ते नहीं। उन्होंने साहित्य और आलोचना के लोक धर्मी तत्त्व को कभी अलग नहीं होने दिया। जमीन से उनका जुड़ाव प्रेमचन्द की तरह हमेशा विद्यमान रहा। प्रसिद्ध आलोचक विजय बहादुर सिंह जी मानते हैं कि मैं अगर अनुमान लगाना चाहूँ तो नामवर के निर्माण में एक तरफ उनके घोषित गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तो दूसरी तरफ मान्य आचार्य पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र दिखाई देते हैं। किन्तु यह जोड़े बगैर अधूरा बना रहेगा कि नामवर जी की आधार शक्ति लोक-प्रज्ञा है।' लोकवाद न केवल उनके सम्पूर्ण आलोचना कर्म का, बल्कि उनके सम्पूर्ण जीवन का संचालक है। इसी कारण आलोचना में उन्होंने योद्धा की भूमिका निभाई तथा अपने लेखन और जीवन की राजनीति से घनिष्ठ रूप से जोड़कर चलते रहे। इस संघर्ष में उन्होंने सिर्फ अपनी कलम से ही नहीं, अपनी वाणी से भी काम किया हैं।

समीक्षक प्रायः साहित्य को अपनी समग्रता में समेटता है। चिंतक साहित्य को पहले संस्कृति के संदर्भ में परखता है। तदुपरांत उसे इतिहास के बृहत्तर प्रकरण में पुनर्विवेचित करता हैं। इससे चिंतक अपनी सौन्दर्य-दृष्टि का परिचय देता है। जब एक चिंतक समय के पूरे परिदृश्य को समेटता है तभी सौन्दर्यानुभूति अपनी गतिशीलता के साथ अनुभूत होती है। नामवर सिंह अपने प्रखर चिंतन के माध्यम से सामान्य समीक्षक से भिन्न सक्षम रचनाकार की भूमिका में उतर आते हैं और रचना के संघर्ष को पूरे समय के संघर्ष के साथ जोड़ पाते हैं। इससे दो कार्य सम्पन्न होते है पहला है आलोचना का रचना में परिवर्तित होना। यह एक ऐसा रासायनिक परिवर्तन है जिससे आलोचना अपनी जड़ता से मुक्त हो जाती है और अपनी अन्तरंग दृष्टि सम्पन्नता का परिचय दे पाती है। दूसरा है आलोचना समय की जड़ता के विपक्ष में खड़ी होती है। यह उसकी सांस्कृतिक भूमिका भी है और उसकी संस्कृति पर हस्तक्षेप भी।

'कविता के नए प्रतिमान' श्रेष्ठ कविता को परिभाषित करने का प्रतिफल है। श्रेष्ठ कविता की खोज आलोचक को कभी-कभी व्याख्या से परे जाकर करनी पड़ती है। आलोचक यह खोज संवेदना और संरचना से परे जाकर करता है। ऐसे ही खोज नामवर सिंह जी ने मार्क्सवादी समीकरणों को लांघकर की है। परिणाम-स्वरूप उन पर रूपवादी होने का आरोप भी लगा। उन्होंने कलावाद का विरोध किया, पर कलात्मक या काव्यात्मकता का नहीं। कविता के संदर्भ में उन्होंने स्थूल सामाजिकता का विरोध किया, लेकिन सामाजिक संस्कृति या मार्क्सवादी दृष्टि का नहीं। कविता के स्वधर्म के प्रति नामवर सिंह जी समर्पित हैं।

आज से लगभग 65 वर्ष पूर्व नामवर जी की 'छायावाद' पुस्तक प्रकाशित हुई। पहले यह सरस्वती प्रेम बनारस से और बाद में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई। इस दौर में नामवर जी काशी विश्वविद्यालय में पढ़ा रहे थे। यह देखना कितना महत्त्वपूर्ण है कि नामवर जी साहित्यिक मूल्यों के स्तर पर प्रगतिवादी आन्दोलन के पक्षधर रहे हैं, पर उन्होंने प्रगतिवाद पर कोई स्वतन्त्र पुस्तक लिखने के स्थान पर 'छायावाद' पर पहली मौलिक पुस्तक लिखी। प्रगतिवादी विचारधारा के पक्षधर होने के बावजूद उन्होंने छायावाद की उदार दृष्टि से मौलिक व्याख्या की तथा छायावाद को कुंठित रूप-भाववादियों तथा हठी मार्क्सवादियों के गलत-सलत व्याख्याओं के धुंध से बचाया।

नामवर जी का आत्मसंघर्ष मुक्तिबोध जैसा है किसी और से नहीं स्वयं अपने आपसे। उस संघर्ष को सही शब्द मिला 'दूसरी परम्परा की खोज' पुस्तक में जो उनके पूरे जीवन काल और रचनाकर्म के संघर्ष की सुन्दर अभिव्यक्ति है। बीमारी की पस्त हालत में उन्हें मैना वाली लोककथा याद आती है, जिसमें एक तोता था और एक मैना। दोनों ने मिलकर बड़ी मेहनत से घूरे से एक चना ढूंढ़ निकाला। उसे चक्की में दला। उस चने की एक दाल खूंटे में अटक गई और दूसरा तोता लेकर उड़ गया। दाल खूँटा में अब क्या करे मैना ? पर मैना हार नहीं मानती वह संघर्ष का रास्ता चुनती है। वह बढ़ई, राजा, सर्प, समुद्र, रस्सी, चूहा आदि सब तक जाती है पर कोई मदद नहीं करता– इस तर्क के साथ कि एक दाने के लिए कौन इतनी जहमत उठाए। यह एक दाल ही गरीबों का हक है जो व्यवस्था के खूँटे में फँसा हुआ है। नामवर जी अपनी रचनाधर्मिता से जीवन पर्यन्त दाल के उसी एक दाने को ढूंढ़ते रहे।

वस्तुतः नामवर सिंह का जाना उनके साहित्यकर्म रचनाधर्म का अंत नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि नामवर स्वयं बिकने वाली नहीं टिकने वाली कला के उपासक थे। उनका मानना था कि जो जीवन की याद न दिलाए वह कला कैसी। नामवर जी आप अपने नाम और काम से साहित्य जगत में हमेशा 'नामवर' रहेंगे।

कविता

मातृभाषा-हिन्दी

ज्योति बरनवाल
एम.एस-सी. द्वितीय वर्ष, रसायन विज्ञान

ज्ञान, शील, समानता, प्रेम की हिन्दी है आधार
जन-जन भारतवासी दिल से, करें हिन्दी स्वीकार
सहज, मधुर, सुन्दर यह भाषा भाव करे झंकार
पर स्वार्थ भरे लोगों से लड़-लड़ हिन्दी है गई हार।।
सभा समिति और सम्मेलन में हिन्दी क्यों शर्माती
अंग्रेजी भाषण में घूस कर झूठा धौंस जमाती
स्वयं कई भाषा की जननी करती है ये पुकार
तुम मेरा सम्मान दिलाकर मेरा करो उद्धार।।
हिन्दी की बातें करने वाले हिन्दी को ही दबाते
हिन्दी की रोटी बेच-बेच, इंग्लिश की पूरी खाते
यही निवेदन है तुमसे इस तरह भरो हुंकार,
जन-जन भारतवासी दिल से, करे हिन्दी स्वीकार।।
निश्छल प्रेम निःस्वार्थ भाव से यह संस्कार सिखाए
माँ जैसा यह प्रेम देकर अपना अधिकार जमाए
संतान-धर्म का पालन कर आ मिल के करें आभार
जन-जन भारतवासी दिल से करें हिन्दी स्वीकार।।

आलेख

सूर्य किरणों द्वारा चिकित्सा

अतिथि द्विवेदी
एम.एस-सी. द्वितीय वर्ष, रसायन विज्ञान

इस चिकित्सा में सूर्य की किरणों को शरीर पर सीधे लेकर या सूर्य की किरणों से प्रभावित जल, चीनी, तेल, घी, ग्लिसरीन आदि का प्रयोग करके रोगों का निवारण किया जाता है।

इस चिकित्सा का आविष्कार एवं प्रचार जनरल पंलिझन होन ने किया था उसके पश्चात् डॉ. पेन स्कॉट, डॉ. राबर्ट बोहलेंड तथा डॉ. एडविन ने इस पद्धति को आगे बढ़ाया।

सूर्य की सात रंग की किरणों का उल्लेख हमारे वेद (अथर्ववेद, ऋग्वेद) में किया गया है। इन सात रंगों की प्रकृति भिन्न-भिन्न है इन सात रंगों को मिला देने पर ये सफेद हो जाता है।

सात रंगों के किरणों की तरंग दैर्घ्य और आवृत्ति अलग-अलग है, अपनी गति एवं प्रकृति के अनुसार ये विभिन्न रोगों को दूर करते है।

इन किरणों को संक्षेप में VIBGYOR/**बैनी आह पी नाला** कहते हैं। बैगनी किरण शीतल एवं क्षय रोग का नाशक है। नीला किरण शीतल, पित्त रोग नाशक है, आसमानी शीतल एवं पित्त तथा ज्वर नाशक, हरी किरण समशीतोष्ण, वातरोगों की नाशक एवं रक्त शोधक, पीली किरण उष्ण, कफ रोग नाशक एवं हृदय तथा उदर रोग नाशक है। इस प्रकार हम इन सात रंगों के बोतल का पानी औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं।

1. लाल (Red) रंग– लाल रंग की बोतल में शुद्ध जल भर कर 6 से 8 घंटे धूप में रखकर यदि उसके जल का सेवन करें तो यह रक्त को उत्तेजित करता है। यह सभी प्रकार के वात एवं कफ रोग में लाभ देता है, परन्तु लाल रंग की बोतल का पानी अत्यन्त गर्म होता है इसे पीना वर्जित है इसका प्रयोग केवल शरीर के बाहरी भाग में लगाने में किया जाता है।

2. नारंगी (Orange) रंग– इस रंग की बोतल का पानी पीने से हमारे रक्त संचार की वृद्धि करता है। मांसपेशियों को स्वस्थ रखता है मानसिक शक्ति को बढ़ाता है बुद्धि एवं साहस को विकसित करता है यह खाँसी, बुखार निमोनिया, हृदय रोग एवं RGB की कमी में लाभप्रद है।

3. पीला (Yellow) रंग– पाचन तन्त्र को ठीक करता है, हृदय एवं उदर रोग नाशक है। यह पेट दर्द, कृमि रोग में लाभप्रद है।

4. हरा (Green) रंग– यह प्रकृति का रंग है यह मन को प्रसन्नता देता है। शरीर की मांसपेशियों का निर्माण एवं शक्ति प्रदान करता है। टायफॉयड, मलेरिया, चर्मरोग, नेत्ररोग, मधुमेह, कैंसर, एक्जिमा में लाभप्रद है।

5. आसमानी (Blue) रंग– यह शीतल होता है प्यास तथा आमाशयिक उत्तेजना को शान्त करता है। यह ज्वर, खाँसी, दमा, सिरदर्द, पथरी, चर्मरोग, मस्तिष्क रोगों में लाभप्रद है।

6. नीला (Indigo) रंग– यह शीतलता एवं शक्ति प्रदान करता है। यह आमाशय, अण्डकोश वृद्धि, प्रदर आदि रोगों में विशेष उपयोगी है। इस रंग के बोलत की क्रिया शरीर पर अतिशीघ्र होती है।

7. बैगनी (Violet) रंग– यह लाल रक्त कणिकाओं की वृद्धि करता है। यह खून की कमी को दूर करता है। क्षय रोगों में उपयोगी है। इससे नींद अच्छी आती है।

अतः हमें नीरोग रहने के लिए सूर्य की शरण में जाना चाहिए।

सुविचार

वैष्णवी विश्वकर्मा
एम.एस-सी. प्रथम वर्ष, रसायन विज्ञान

1. कामयाबी के सफर में धूप का महत्त्व बड़ा होता है, क्योंकि छाँव मिल जाती है तो कदम रुक जाते है।
2. नदी जब निकलती है, तो नक्शा पास नही होता कि सागर कहाँ है। बिना नक्शे के सागर तक पहुँच जाती है। ऐसा नहीं है कि नदी कुछ नही करती उसको सागर तक पहुँचने के लिए बहना अर्थात् कर्म करना पड़ता है। इसलिए कर्म करते रहिए, नक्शा तो ईश्वर पहले ही बनाकर बैठे है, हमको तो सिर्फ बहना है।
3. वृक्ष कभी इस बात पर व्यथित नहीं होता कि उसने कितने पुष्प खो दिये, वह सदैव नए फूलों के सृजन में व्यस्त रहता है। जीवन में कितना कुछ खो गया, इस पीड़ा को भूलकर, क्या नया कर सकते है, इसी में जीवन की सार्थकता है।
4. रिश्तों की डोर तब कमजोर हो जाती है, जब इंसान गलतफहमी में अपने मन में आए प्रश्नों के उत्तर खुद ही ढूंढ़ लेता है।

आलेख

सूफी काव्य धारा और जायसी की प्रेम भावना

पूजा सिंह
एम.ए. प्रथम वर्ष, हिन्दी

जायसी सूफी प्रेमाख्यानक परम्परा के कवि हैं। अवधी भाषा में रचा महाकाव्य 'पद्मावत' सूफी काव्य धारा का प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं जिसमें चित्तौड़ के रतनसेन एवं उनकी रानी पद्मावती के प्रेम का श्रेष्ठ चित्रण किया गया हैं। जिस तरह सभी सूफियों ने हिन्दू घरों में प्रचलित लोकप्रसिद्ध प्रेम गाथाओं को अपनी काव्य वस्तु तथा लौकिक प्रेम के मार्फत अलौकिक प्रेम की व्यंजना की उसी तरह जायसी ने पद्मावत में राजा रतनसेन और रानी पद्मावती के प्रेम सन्दर्भ को अपना माध्यम बनाया। जायसी ने प्रेम की महत्ता को स्वीकार ही नहीं वरन् उसे प्रतिष्ठित भी किया। इन्होंने प्रेम को ईश्वर की प्राप्ति का साधन माना। और इश्क मजाजी से इश्क हकीकी तक पहुंचने का सन्देश दिया। "डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार– "सूफी मत में ईश्वर की भावना स्त्री रूप में की गयी हैं। वहाँ पुरुष बनकर उस स्त्री की प्रसन्नता के लिए निसार होता है, उसके द्वार पर जाकर प्रेम की भीख माँगता है। ईश्वर एक दैवी स्त्री के रूप में उसके सामने उपस्थित होता है। इस तरह सूफी मत में ईश्वर स्त्री और भक्त पुरुष है। पुरुष ही ईश्वर से मिलने की चेष्टा करता हैं, जिस प्रकार रतनसेन सिंघलद्वीप जाकर पद्मावती से मिलने की चेष्टा करता हैं। जायसी की मान्यता है कि लौकिक प्रेम के द्वारा ईश्वरीय प्रेम को पाया जा सकता है।"

ईश्वर स्वयं प्रेम है। संसार की रचना भी प्रेम ही है। प्रेम के सहारे संसार की इकाइयाँ प्रेम के महास्रोत में, जो पूर्ण सौन्दर्य और सर्वोत्तम भी हैं, निमग्न होने के लिए पूर्णतः जुड़ी हुई हैं।

जुनैद के अनुसार– "प्रेमी के गुणों के स्थान पर प्रियतम के गुणों की प्रतिष्ठापन का नाम प्रेम हैं।"

अल शिबली के मतानुसार– "प्रेम अग्नि के सामान है, जो परमात्मा की इच्छा के सिवा अन्य सभी वस्तुओं को जलाकर भस्मीभूत कर देता हैं।

'जायसी ने प्रेम को एक कठोर साधना भी कहा है", जायसी प्रेम को विरह मिलन का खेल मात्र नहीं समझते। उनके अनुसार वह साधना है जिसमें तन और मन की क्रियाओं में एकता हो, यदि दोनों एक-दूसरे के विपरीत होंगी तो प्रेम साधना में कच्चापन रह जाता है। प्रेमी की एक ही आकांक्षा रहती हैं कि प्रेम पथ पर अग्रसर होने के पश्चात्य उसकी दृढ़ता में न्यूनता न आ जाये–

"राजै कहा कि हसो प्रेमा जेहि रे कहां कर कूसल खेमा।

मोरि कुसल कर सोच न ओता, कुसल होत जब जनम न होता।"

जायसी ने फारसी प्रेम पद्धति का आधार ग्रहण करते हुए प्रेम की पीर अर्थात् विरह वेदना का अत्यन्त मार्मिक चित्रण पद्मावत में किया है। नागमती की विरह वेदना सम्पूर्ण संसार में व्याप्त दिखाई देती है, यहां तक कि उनकी विरह अग्नि में जलकर बादल भी काले हो गए हैं। राहु केतु सूर्य चन्द्रमा भी उस विरह अग्नि में जल उठे-

"अस प्रजार विरह कर गठा।

मेघ सैम भये धुआं जो उठा।"

कोई प्रेम को सर्वग्रासिनी अग्नि मानकर उससे बचना चाहता है तो कोई उसे अधिकाधिक पाने की आकांक्षा में रत है मानो वहां पर शीतलता प्रदान करने वाला कोई अनुपम है।

समस्त विचार, समस्त भाव सारा आनन्द और मानव जीवन की समस्त प्रेरणा और उसे उच्चतम बनाने वाली शक्तियां प्रेम की अनुचरी हैं।

"सूफी मत में प्रेम के विचार में अल फराबी का कथन हैं कि "भौतिक वस्तु तथा ज्ञान और बुद्धि से परे यह एक विशिष्ट वस्तु है।"

प्रेमी के हृदय में प्रिय के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए चित्र दर्शन, स्वप्न दर्शन या सौंदर्य प्रशंसा का आश्रय लिया जाता है तथा प्रेमी प्रिय को पाने के लिए सर्वस्व त्यागकर विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ अंत में उसे प्राप्त कर लेता है। हीरामन तोते के द्वारा पद्मावती के रूप प्रशंसा सुनकर राजा रत्नसेन उसे पाने को व्याकुल हो उठता है और सिंघल द्वीप जाकर उसे अंततः अनेक कष्ट झेलने के बाद प्राप्त ही कर लेता है।

जायसी ने पद्मावती को परमात्मा मानकर उसके रूप सौंदर्य की अलौकिक छटा का वर्णन इस प्रकार किया है जैसे कि वह सम्पूर्ण संसार में व्याप्त हो। संसार में जो कुछ सुन्दर है वह सब उसी का रूप है। जैसे–

"रवि ससि नखत दिपही ओहि जोती

रतन पदारथ मानिक मोती।

जायसी जी कहते हैं प्रेम के इस क्षीर सागर को जो पार सकते हैं वे जीव संज्ञा को त्यागकर शुद्ध आत्मा स्वरूप हो जाते हैं–

''जो एही खीर समुद्र माह परे।
जीव गवाई हंस होई तरे।''

जायसी प्रेम को चिरंतन तत्त्व मानते हैं। वह प्रेम ही कैसा जो देह के साथ विदा हो जाये ? सच्चा प्रेम वह है जो प्राण के साथ जाता है–

''कासो प्रति तन माह विदाई
सोई प्रीति जिय साथ जो जाई।''

जायसी की मान्यता है कि प्रेम मार्ग इतना दुर्गम और दुखदायी होते हुए भी जो इसे पार कर लेता है उसके दोनों लोक सुधर जाते हैं। इस मार्ग में दुःख तब तक है जब तक कि प्रियतम से भेंट नहीं होती।

कविता

बेटी की आवाज

पूजा ओझा
बी.ए. प्रथम वर्ष

कर दूँगी पापा का सिर ऊँचा
मुझे इस दुनिया में आने तो दो
उड़ जाऊंगी आसमान तक
पंख फैलाने तो दो
बाँट लूँगी माँ तुम्हारा हर-दुख
मुझे कोख में मरने मत दो
बाँधूगी भईया को राखी
मुझे बहन बन कर रहने तो दो
पढ़-लिखकर बनूंगी डॉक्टर-अफसर
मुझे किताबों के बीच रहने तो दो
रखूंगी घर परिवार का मान-सम्मान
मुझे भी सम्मान पाने तो दो
मुझे इस दुनिया में आने तो दो।

आलेख

बेटी को सामान न समझा जाय

नैना मिश्रा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

ममता का सम्मान हो तुम, संस्कारों का जान हो तुम,
स्नेह प्यार और त्याग की, इकलौती पहचान हो तुम ।।

भारतीय संस्कृति का व्यापक उदात्त चिन्तन विश्व को अभिनव आलोक प्रदान करता रहा है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** एवं **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** की सुखद संकल्पना का सम्पादन करने वाले देश में नारी वन्दनीय मानी जाती है। **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'** लोपामुद्रा, विश्वरा, गार्गी, सरस्वती, अपाला, यमी, घोषा, सीता, सावित्री, अनुसूया, अरुन्धती आदि नारियों पर देश को आज गर्व है। हमारे यहाँ पंच कन्याओं का नाम स्मरण, समस्त पापों का विनाशक माना गया है।

अहिल्या, द्रौपदी, सीता, तारा, मन्दोदरी यथा,
पंच कन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक-नाशिनी

हमारे देश में प्राचीन काल से शिक्षा-प्राप्ति के लिए माँ सरस्तवी, धन प्राप्ति के लिए लक्ष्मी एवं शत्रु शमन हेतु माँ काली की पूजने का विधान है। आज नारी के साथ हो रहे असम्मान सम्पूर्ण उज्ज्वल इतिहास से विरोधाभास रखते हैं। सही मायने में स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। महीयसी महादेवी वर्मा जी कहती है कि "स्त्री जाति को अपने स्त्रियोचित गुणों पर गर्व करना चाहिए और मुक्तता अर्थात् चरित्रहीनता का अनुकरण नहीं करना चाहिए। स्त्रियों को शिक्षित और नये संस्कार से दीक्षित करने की आवश्यकता है।"

अब मुझको कुछ इतना आसान न समझा जाय,
घर के किसी कोने का, सामान न समझा जाय
मैं भी दुनिया की तरह जीने का हक माँगती हूँ
इसको गद्दारी का ऐलान न समझा जाय
अब तो बेटे भी रुखसत हो जाते हैं घर से,
केवल बेटी को ही घर का मेहमान न समझा जाय।।

बेटे और बेटी के अन्तर की खाई को पाटने की आवश्यकता है। तभी नारी को उसकी वैदिक कालीन गरिमा पुनः प्राप्त होगी। आज की नारी डरती नहीं बल्कि अपने हक के लिए लड़ती है। रेहाना रूही कहती हैं– नारी पूजनीय है, सम्मान करने के लिए साक्षात् देवी है। चाहे! दुःशासन, चाहे रावण सभी का समूल नष्ट हुआ, इससे यह शिक्षा मिलती है कि नारी का अपमान करने वाला, दैव कृपा से वंचित रहता है।

नारी के हृदय में जहाँ चन्दन की तरह शीतलता विद्यमान होती है, जिससे वात्सल्य एवं ममत्व का उत्स फूट पड़ता है, वही वक्त पड़ने पर ज्वाला भी बन जाती है रण चण्डी दुर्गा की तरह–

''चन्दन की सी शीतलता में, छिपी चमकती चिन्गारी,
समय पड़े ज्वाला बन जाये, जल जाये अत्याचारी,
महिषासुर को समरांगण में
धूल चटा देने वाली, शक्तिस्वरूपा, सिंहवाहिनी,
दुर्गा है, जाग्रत नारी।।

आलेख

'एड्स' के प्रति नजरिया बदलने की जरूरत है

कोमल यादव
एम.ए. प्रथम वर्ष, समाजशास्त्र

एड्स दुनिया में आज किसी महामारी से कम नहीं है। भारत के साथ अन्य देशों के लिए भी यह सामाजिक त्रासदी और अभिशाप है। लोगों को इस महामारी से बचाने और जागरूक करने के लिए 1 दिसम्बर को 'विश्व एड्स दिवस' मनाया जाता है। HIV यानी 'Human pmmunodeficieny Virus' वायरस से संक्रमण के बाद की स्थिति एड्स है। एचआईवी संक्रमण को एड्स की स्थिति तक पहुँचने में 8-10 साल और कभी-कभी इससे ज्यादा वक्त भी लग जाता है।

एचआईवी को लेकर चौंकाने वाला तथ्य यह भी सामने आया है कि दुनिया में एचआईवी से पीड़ित होने वालों में सबसे अधिक संख्या किशोरों की है, और यह संख्या 20,00000 से ऊपर है। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार एड्स से पीड़ित होने के मामलों में तीन गुना इजाफा हुआ है। एड्स से पीड़ित दस लाख से अधिक किशोर सिर्फ 6 देशों में रह रहे हैं और भारत उनमें से एक है।

इसके साथ ही भारत में एड्स से सम्बन्धित अनेक भ्रान्तियां फैली हैं। एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। बहुत सारे लोग समझते है कि एड्स पीड़ित व्यक्ति के साथ खाने-पीने, उठने-बैठने से होता है, जो कि गलत है। सच तो यह है कि रोजमर्रा के सामाजिक सम्पर्कों से H.I.V. नहीं फैलता जैसा कि–

- पीड़ित के साथ खाने-पीने से
- बर्तनों की साझेदारी से
- हाथ मिलाने या गले मिलने से
- एक ही टायलेट का प्रयोग करने से
- मच्छर या अन्य कीड़ो के काटने से
- पशुओं के काटने से
- खांसी या छींकों से।

इसके साथ ही, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) की एक रिपोर्ट में यह बताया गया कि 74 प्रतिशत H.I.V. पाजिटिव व्यक्ति कामकाज की जगह पर अपनी बीमारी की बात छिपाकर रखते हैं, ज्यादातर मामलों में H.I.V. संक्रमण होने पर उन्हें घर छोड़ने को कह दिया जाता है। पत्नियों से अपेक्षा की जाती है वे अपने H.I.V. पॉजिटिव पति का साथ निभाए।

अतः इस तरह की समस्याओं के प्रति हमें नजरिया बदलने की जरूरत है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन वर्ष 2020 तक तीन करोड़ लोगों को उपचार सुविधा उपलब्ध कराने के अपने लक्ष्य की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। हालांकि एक सुखद आँकड़ा यह भी है कि नाको और विभिन्न संगठनों के प्रयासों, लोगों में जागरूकता से H.I.V. संक्रमित मामलों में कमी आई है। वर्ष 2018 में संक्रमण के 18 लाख नए मामले आए हैं जो 1997 में दर्ज 35 लाख मामले के मुकाबले आधे है। परन्तु अब भी जरूरत है H.I.V. के प्रति दृष्टिकोण बदलने की, अधिक से अधिक लोगों को इसके प्रति सजग करने की और कुछ राजनीति प्रयास की भी जिससे इस महामारी को जड़ से खत्म किया जा सके!

कविता

संकल्प

तृप्ति कौशल
एम.एस-सी. द्वितीय वर्ष

संकल्प हमारा ऐसा हो
पृथ्वी भी स्वर्ग के जैसा हो
जहाँ हरे पेड़ की डाली हो
जहाँ सभी ओर हरियाली हो
जहाँ एक तरफ नदियाँ हो बहती
वृक्षों पर कहीं चिड़ियाँ हों रहतीं
बारिश की बूँदें जब कहीं गिरें
ये देख, सखी! मन-पुष्प खिले
ना धरती पर अत्याचार करो
तुम जीवों से भी प्यार करो
कुदरत पर जुल्म जो ढाओगे
सुख-चैन कहीं ना पाओगे
हम सब का बस ये नारा हो
पृथ्वी भी स्वर्ग से प्यारा हो।

भारत और वर्तमान राजनीति

वर्षा सिंह यादव
एम.ए. प्रथम वर्ष, समाजशास्त्र

देश बदल रहा है, भारत की राजनीतिक स्थिति बदल रही है, कभी देश के नेताओं की पहचान खादी से हुआ करती थी लेकिन अब इनकी पहचान का स्वरूप बदलता जा रहा है, आज वे लाखों का सूट-बूट पहनने लगे है। कभी नेता जनता की आवाज हुआ करता था लेकिन अब भीड़ में एक नामी या चर्चित चेहरा बन कर रह गया है, आज का नेता आदर्शो की बातें नहीं करता, वो दूसरों पर कीचड़ उछालता है। जहाँ कभी सत्ता पक्ष भी विपक्ष को आदर और सम्मान की भाषा से सम्बोधित करता था, वही आज के नेताओं में नैतिक मूल्यों में भी कमी आती जा रही है, नेता किसी को पप्पू, चोर, सूपर्नखा तो किसी को औरंगजेब और टीपू के नाम से सम्बोधित कर रहे हैं। नेताओं की इस तरह की भाषा राजनीति के स्तर को नीचे गिरा रही है।

बदलते समय के कारण राजनीति के दिग्गजों की तस्वीर भी बदलती जा रही है। विडम्बना तो, देखिए जो राजनेता अपने आप को जनता का प्रतिनिधि और शुभचिंतक मानते हैं, वह भी केवल चुनाव तक। लोकसभा और विधानसभा में पहुँचने के बाद उनके विचारों में जनता की कोई तस्वीर नहीं बचती, रह जाता है तो सिर्फ उनका व्यक्तिगत स्वार्थ।

आज राजनीतिक सत्ता पर धर्म का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। वर्तमान स्थिति यह है कि राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव जीतने के लिए धर्म का सहारा लिया जा रहा है। आज राजनीतिक दल साधु-सन्तों तथा मुल्ला-मौलवियों को चुनावों में उतारते हैं, क्योंकि ऐसा करके वह हिन्दुओं तथा मुस्लिमों का एकमुश्त

वोट प्राप्त करना चाहते हैं। इसके अलावा भी राजनीतिक दलों के नेता अपने को हिन्दुओं, मुस्लिमों तथा अन्य धर्मों का हितैषी साबित करने के लिए जगह-जगह मन्दिरों, मस्जिदों तथा अन्य धार्मिक स्थलों के चक्कर लगा रहे हैं और ध्रुवीकरण की राजनीति कर रहे हैं। 70 वर्षों के लोकतान्त्रिक आदर्शो, संवैधानिक मूल्यों को गहरा आघात पहुँचाने का प्रयास करते हैं।

कई वर्षों से राम-मन्दिर निर्माण का मुद्दा नेताओं के लिए वोट का काम कर रहा है। तथाकथित हिन्दु धर्मावलाम्बी अयोध्या में राम-मन्दिर तथा मुस्लिम धर्मावलम्बी मस्जिद निर्माण के लिए आपस में संघर्ष कर रहे हैं। इस मामले पर कई वर्षों से सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई चल रही है तथा इस पर कोई भी निर्णय अभी तक सर्वोच्च न्यायालय ने नहीं दिया है। क्या यह अधिक उचित नहीं होगा कि राजनीतिक दल राम-जन्म भूमि पर मन्दिर या मस्जिद निर्माण के बजाय उस भूमि पर कोई अस्पताल, कॉलेज या कोई अन्य कल्याणकारी संस्थान निर्माण की माँग करे ? जो अधिक सर्वजन के हित में होगा। चुनावी मौसम में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता राम-मन्दिर निर्माण के मुद्दे से जनता को रोजगार, शिक्षा किसान जैसे मुद्दों से ध्यान भटका रहे हैं।

कहा जाता है कि मीडिया लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ है, इस नाते लोकतन्त्र के बचाव के लिए उसे सरकार की नीतियों तथा योजनाओं की अच्छाई व खामियों को जनता के समक्ष उजागर करना उसका कार्य है, न कि सत्ताधारी राजनीतिक दल की चाटुकारिता करना।

आज ऐसा प्रतीत होता है कि चाहे कोई भी मीडिया क्यों न हो सभी सरकार की चापलूसी करने में लगे हैं जिससे वे लोकतन्त्र के प्रति अपने कर्तव्य से अलग हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि वर्तमान मीडिया विपक्ष की भूमिका को कम महत्त्व दे रहा है। वर्तमान की राजनीतिक परिस्थितियों में जिस प्रकार से संवैधानिक संस्थाओं के विवाद सामने आ रहे हैं वह भी हमारे लोकतान्त्रिक मूल्यों का ह्रास करते हैं चाहे वह बहुचर्चित विवाद सुप्रीम कोर्ट का विवाद हो या CBI का विवाद।

क्या इस तरह की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों में हमारे देश के लोकतान्त्रिक मूल्य एवं व्यवस्था बचे रहेंगे।

विशेष

वक्त लगता है

वैष्णवी विश्वकर्मा
एम.एस-सी. प्रथम वर्ष, रसायन विज्ञान

पानी को बर्फ में, बदलने मे वक्त लगता है!
ढले हुए सूरज को, निकलने में वक्त लगता है!
थोड़ा धीरज रख, थोड़ा और जोर लगाता रह!
जो तूने कहा, कर दिखायेगा रख यकीन!
गरजे जब बादल, तो बरसने में वक्त लगता है!

कविता

मेरा देश

शिप्रा पाण्डेय
एम.एस-सी. प्रथम वर्ष, जन्तु विज्ञान

तिरंगे की शान में चाहे जान मेरी चली जाए,
एक और शहादत हो जिसमें मेरा नाम आए।
हजारों गोलियां खाके भी देश की मिट्टी को बचाऊँगी,
उफ तक ना करूँगी, चाहे मर ही जाऊँगी।
देश है मेरी जान, मेरी शान और मेरा ईमान,
बुरी नजर डाल के देखे कोई ले लूँगी उसकी जान।
महान चन्द्रशेखर, भगत सिंह की मिट्टी को अब हमें ही बचाना है,
डर के नही बल्कि डट के दुश्मनों को हराना है।
ना केवल विदेशी बल्कि स्वदेशी दुश्मनों से भी अब हमें लड़ना है,
रंग, जाति और भाषा के भेद को छोड़कर अब
सभी के साथ मिलकर कदम आगे बढ़ाना है।
हर एक क्षेत्र को भ्रष्टाचार से बचाना है,
और सफाई करके हर एक कीटाणु को दूर भगाना है।
चाहे कितनी भी ऊंची पहचान हो, नाम हो या जाति हो,
एक इंसान को इंसान समझना है
बुरा काम करने वालों को मिलकर सजा दिलाना है,
और अच्छे लोगों को आगे बढ़ना है।
ये देश मेरा है इसकी सुरक्षा बस मेरी जिम्मेदारी है,
जिसे तन, मन एवं धन से अब मुझे ही निभाना है।
खुदा करे एक नहीं हर जन्म अपने देश के नाम करूँ,
अपने रक्त के कण-कण से इसे हरियाली से भरूँ,
अगर कुछ ना कर सकती तो जीवन निरर्थक है।
तेरी माटी, तेरी खुशबू, तू ही मेरी शान है,
हिन्दुस्तानी हूँ मैं, ये देश मेरी जान है।

DAMODARSHREE –2018

विशेष

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह – 2018

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी और सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में संकल्पित यह परम विशिष्ट सम्मान है। सारस्वत खत्री पाठशाला एवं उससे संचालित शिक्षण संस्थाओं (नवीन शिशु वाटिका, टैगोर पब्लिक स्कूल, शिवचरण दास कन्हैया लाल इंटरमीडिएट कॉलेज तथा सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय) के उन्नायक स्मृतिशेष प्रो. दामोदर दास खन्ना की स्मृति को समर्पित है यह सम्मान। इस राष्ट्रीय सम्मान के लिये उच्च शिक्षा स्तर पर 'अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता' के आयोजन का निर्णय सोसायटी द्वारा दो अक्टूबर 2011 से लिया गया है। वर्ष 2018 के 'दामोदर श्री' राष्ट्रीय सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि थीं – प्रो. उमा दास गुप्ता (कोलकाता, विश्वविद्यालय)। प्रो. संजय देशमुख पूर्व कुलपति मुंबई विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि ने दामोदर श्री व्याख्यान श्रृंखला के अन्तर्गत आठवां व्याख्यान दिया। अध्यक्ष थे – प्रो. के.एस. मिश्रा (कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)।

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक निबन्ध प्रस्तुति सत्र के मुख्य अतिथि थे– प्रो. आर.एन. मिश्र (नेत्र चिकित्सक एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, मोती लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद)। चिकित्सीय तथा सामाजिक और मानवीय कार्यों में अमूल्य योगदान के लिये उन्हें सम्मानित भी किया गया। विशिष्टता सम्मान–2018 के निबन्ध का विषय था – **'तकनीकी और मानव मन'**। इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त कश्मीर, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, सिक्किम, तमिलनाडु, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, नागालैंड और छत्तीसगढ़ के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों से 285 निबन्ध प्राप्त हुए। इन निबन्धों का मूल्यांकन तीन चरणों में किया गया।

इन निबन्धों के लिए गठित प्रथम एवं द्वितीय चरण की निर्णायक समिति के कुल 12 सदस्य थे –

1. माननीय न्यायमूर्ति श्री ए.पी. साही (इलाहाबाद उच्च न्यायालय)
2. प्रो. गौरी चट्टोपाध्याय (दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
3. प्रो. प्रतिमा गौड़ (जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
4. प्रो. संजय दत्ता रॉय (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
5. प्रो. कोमिला थापा (मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
6. प्रो. के.के. भूटानी (निदेशक, यू.पी.टेक)
7. प्रो. अलका अग्रवाल
8. प्रो. यू.सी. श्रीवास्तव

9. प्रो. आर.के. नायडू

10. डॉ. क्षितिज श्रीवास्तव (एम.एल.एन. मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद)

11. प्रो. आशा लाल (दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

12. प्रो. रंजना प्रकाश (भौतिक विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

इन निबन्धों को दो चरणों में निर्णायक मंडल ने जांचा–परखा और जिन दस प्रतिभागियों को अंतिम निर्णय सूची के लिए नामित किया उनके नाम हैं –

1) सुचिश्मितो खटुआ, (एम.ए.) कोलकाता विश्वविद्यालय
2) पुजारिनी दास, (पी.एचडी. दर्शनशास्त्र) आई आई टी, कानपुर
3) पॉलमी चक्रवर्ती, (एम.ए. अंग्रेजी) विश्वभारती शांतिनिकेतन
4) सर्वेश सिंह, (डी.फिल., प्राचीन इतिहास) – इलाहाबाद विश्वविद्यालय
5) अनहद नारायण, (एल.एल.बी.) राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, बेंगलूरू
6) आदित्य जीवन्नावर, (बी.एस.–एम.एस. बायोलॉजिकल साइंस) – आई आई टी, मद्रास
7) स्वर्नाली सरकार, (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) बेंथुन कालेज, कोलकाता
8) अभिनव श्रीवास्तव, (एम.ए., अर्थशास्त्र) इलाहाबाद विश्वविद्यालय
9) शक्ति नंदन जायसवाल, (एम.ए., राजनीतिशास्त्र)– इग्नू, इलाहाबाद
10) आकाश सिंह, (डी.फिल., दर्शनशास्त्र) – इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

इन सभी प्रतिभागियों को दो अक्टूबर 2018 को महाविद्यालय परिसर में निबन्ध प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। इन्हें निबन्ध प्रस्तुति के साथ–साथ निर्णायकों के प्रश्नों और जिज्ञासाओं का भी समाधान करना था। तीसरे और अन्तिम चरण के निर्णायक मंडल में दो चरणों के निर्णायकों के अतिरिक्त अन्य दो सम्मानित निर्णायकों को भी रखा गया। उनके नाम हैं –

1. श्रीमती अर्चना राम सुन्दरम (सदस्य गृह मंत्रालय, भारत सरकार)
2. प्रो. शंकर दत्त (पटना विश्वविद्यालय, बिहार)

अंतिम चरण में पुरस्कार के लिए जिन पाँच प्रतिभागियों का चयन किया गया उनके नाम हैं –

1. सुचिश्मितो खटुआ – 'दामोदर श्री' सम्मान एवं ₹ दो लाख का नगद पुरस्कार।
2. अनहद नारायण – प्रथम उपजेता – ₹ एक लाख का नगद पुरस्कार।
3. आकाश सिंह – द्वितीय उपजेता – ₹ 50 हजार का नगद पुरस्कार।
4. पॉलोमी चक्रवर्ती – विशेष पुरस्कार (संयोजन समिति द्वारा निर्णीत) – ₹ 30 हजार का विशेष नगद पुरस्कार।
5. स्वर्नाली सरकार – सर्वश्रेष्ठ स्नातक वर्गीय प्रतिभागी – ₹ 30 हजार का नगद पुरस्कार।

इस अवसर पर 'DONOR'S REPORT' स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया।

प्रतिभाएं

शिवानी त्रिपाठी
सर्वोच्च स्थान, कला संकाय
प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक (चारों संकाय के मध्य)

शादमा जुल्फिकार
सर्वोच्च स्थान
विज्ञान संकाय

खदीजा नाबिया
सर्वोच्च स्थान
वाणिज्य संकाय

रितिका अधिकारी
सर्वोच्च स्थान
बी० एड० संकाय

हुमैरा नाज
सर्वोच्च स्थान
बायोटेक्नोलॉजी

गतिविधियाँ–शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं

रिपोर्ट

शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं

1975 अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष मे स्थापित सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय प्रोफेसर दामोदर दास खन्ना कला संकाय, सरोज लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय, नन्द किशोर खन्ना वाणिज्य संकाय व डॉ. मधु टण्डन बी. एड. संकाय के साथ उन्नत शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी गतिविधियों को संचालित करते हुए निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। 2016-17 से कला और विज्ञान संकाय में विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के साथ साथ आगामी सत्र 2019-20 से शोध कराने की अनुमति उल्लेखनीय उपलब्धि है।

महाविद्यालय के शैक्षिक वातावरण और संसाधन सम्पन्न परिसर में छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हुए महाविद्यालय द्वारा देय विभिन्न सम्मान और पदक प्राप्त किया। सम्मान एवं पुरस्कार सदैव छात्राओं को प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते है। वार्षिकोत्सव 'उदिता' में मुख्य अतिथि निवर्तमान न्यायमूर्ति श्रीमती भारती सप्रू द्वारा सत्र 2017-18 में प्रत्येक संकाय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली निम्न छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया :

छात्रा का नाम	संकाय	पदक
शिवानी त्रिपाठी	कला	मनोहर दास खन्ना स्मृति स्वर्ण पदक
शादमा जुल्फिकार	विज्ञान	डॉ. मधु टण्डन स्मृति स्वर्ण पदक
खदिज़ा नाबिया	वाणिज्य	गायत्री राजनारायण धवन स्मृति स्वर्ण पदक
रितिका अधिकारी	बी. एड	अशोक मोहिले स्मृति स्वर्ण पदक
शिवानी त्रिपाठी	सर्वतोन्मुखी (सभी संकायों के मध्य)	प्रो. डी.डी. खन्ना प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक

कला संकाय में बी.ए. प्रथम वर्ष मे नैना मिश्रा, अशरा फातिमा और मानसी केशरीय द्वितीय वर्ष मे दिव्या पाण्डेय, सुप्रिया राव एवं अनमता नकवी तथा तृतीय वर्ष मे शिवानी त्रिपाठी, दीप्ती राजपूत व प्रज्ञा पाण्डेय ने श्रेष्ठता सूची में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया जिन्हें स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विज्ञान संकाय की श्रेष्ठता सूची में बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की हलिमा खान, शिवि श्रीवास्तव व फैज़ा सिद्दीकी, द्वितीय वर्ष की सानिया रिज़वान, अलीशा नसरीन एवं महनाज़ रिज़वी तथा तृतीय वर्ष की शादमा जुल्फिकार, आकांक्षा यादव एवं सौम्या तिवारी को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान अर्जित करने हेतु स्वर्ण, रजत व कांस्य पदकों से सम्मानित किया गया।

वाणिज्य संकाय की श्रेष्ठता सूची में बी. कॉम. प्रथम वर्ष में आंचल मिश्रा को प्रथम, मुस्कान मेहरोत्रा को द्वितीय एवं विनि संगल व अफजून जाफरी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। बी. कॉम द्वितीय वर्ष में प्रज्ञा तिवारी ने प्रथम, रकीबा खान ने द्वितीय एवं वर्निता श्रीवास्तव ने तृतीय स्थान अर्जित किया। बी. कॉम तृतीय वर्ष मे खदिज़ा नाबिया ने प्रथम, अमीशा अग्रहरि ने द्वितीय व अलीमा उमर ने तृतीय स्थान प्राप्त

किया। उन्हें भी स्वर्ण, रजत व कांस्य पदकों से सम्मानित किया गया।

बी. एड. प्रथम वर्ष में छात्राध्यापिका दिव्या शास्त्री, अनुपमा शुक्ला एवं शिफा रिज़वान ने तथा बी. एड. द्वितीय वर्ष में रितिका अधिकारी, शीतल गिरि गोस्वामी व सौम्या जयसवाल को भी श्रेष्ठता सूची में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने के कारण स्वर्ण, रजत व कांस्य पदको से सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त बायोटेक्नोलॉजी डिप्लोमा कोर्स में हुमैरा नाज़ ने प्रथम, सूफिया अंसारी ने द्वितीय व रानी श्रीवास्वत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्हें भी क्रमशः स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान किए गए।

पुस्तकालय ज्ञान के अमूल्य भण्डार तक पहुँचने का एक उत्तम साधन है। एक विद्यार्थी की ज्ञान पिपासा कभी भी शान्त नहीं होती। उसे अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने हेतु अनेक पुस्तकों का अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ती है। छात्राओं की इसी ज्ञान पिपासा की संतुष्टि हेतु महाविद्यालय में लगभग 27,000 पुस्तकों से युक्त 'श्यामनाथ कक्कड़' केन्द्रीय पुस्तकालय के साथ ही बी. एड. संकाय मे भी एक पृथक पुस्तकालय है जो लगभग 3,000 पुस्तकों से युक्त है। पाठ्य पुस्तकों के साथ ही पुस्तकालय में श्रेष्ठ उपन्यासों का वृहद् संग्रह, विभिन्न विषयों पर सन्दर्भ ग्रन्थ और इनसाइक्लोपीडिया भी उपलब्ध है जो छात्राओं के गहन ज्ञान वृद्धि में उत्तरोत्तर सहायक है। ज्ञान के नवीन तकनीकी स्त्रोतों को आत्मसात् करने के लिए पुस्तकालय में e-books एवं e-journals भी उपलब्ध है। इसके साथ ही पुस्तकालय N-LIST, DELNET एवं INFLIBNET तथा National Digital Library से भी जुड़ा हुआ है ताकि ज्ञान के नवीनतम एवं वृहद् भण्डार तक पहुँचने में छात्राओं को कोई असुविधा न हो। इसके अतिरिक्त लगभग 15 समाचार–पत्र, 43 पत्रिकाएं एवं 53 से भी अधिक जर्नल नियमित रुप से आते है ताकि देश–विदेश में घट रही घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सके। छात्राओं के अध्ययन हेतु वातानुकूलित अध्ययन कक्ष उपलब्ध है। पुस्तकालय में छात्राओं तथा शिक्षक वर्ग को इंटरनेट सहित कमप्यूटर एवं लैपटॉप सेवा प्रदान की जाती

है। पुस्तकालय में उपलब्ध वाई–फाई की सुविधा की सहायता से छात्राएं विश्व स्तर की ज्ञान विज्ञान की सूचनाएँ प्राप्त कर सकती हैं। छात्राओं की सुविधा के लिए पुस्तकालय में कम से कम मूल्य में फोटोकॉपी कराने तथा बुक बैंक से निःशुल्क पुस्तकें प्राप्त करने की भी व्यवस्था है।

महाविद्यालय सदैव ही महिलाओं के सशक्तीकरण को केन्द्र में रखकर छात्राओं के सर्वांगीण उन्नयन हेतु विशेष रुप से तत्पर रहता है। छात्राओं की समस्याओं का समाधान करने और उन्हें सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों से अवगत कराने के लिए महाविद्यालय में 'महिला प्रकोष्ठ' वर्षों से निरंतर सक्रिय है। प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी महिला प्रकोष्ठ ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं व्याख्यानों का आयोजन किया। 'स्टार प्लस' चैनल के तत्वावधान में 'हिन्दुस्तान' ने महाविद्यालय के सभागार में 'अनोखी क्लब' का कार्यक्रम आयोजित किया जिसका विषय था– 'दिल है हिन्दुस्तानी'। छात्राओं ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक एकल गीत, एकल नृत्य एवं फैशन शो की प्रस्तुति की। 13 फरवरी 2019 को महिला प्रकोष्ठ ने 'The Gender Discrimination-

Issues & Challenges' विषय पर परिसंवाद आयोजित किया। इस परिसंवाद में मुख्य वक्ता के रुप मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के 'Women Studies' की अध्यक्ष एवं अंग्रेजी विभाग की प्रोफेसर सुमिता परमार, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. अनीता गोपेश एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ही अंग्रेजी विभाग के प्रो0 सर्वजीत मुखर्जी ने सहभागिता की।

विद्यार्थी जीवन की समस्त उपलब्धियों का आधार उत्तम स्वास्थ्य है। स्वास्थ्य संबंधी जानकारी एवं परामर्श हेतु महाविद्यालय में स्वास्थ्य सेवा प्रकोष्ठ सक्रिय है। जिसमें पूरे सत्र डॉ. वन्दना राज गुप्ता छात्राओं को स्वास्थ्य संबंधी मूल्यवान जानकारी प्रदान करने के साथ साथ उनका स्वास्थ्य परीक्षण और आवश्यकता पड़ने पर प्राथमिक चिकित्सा व विशेष परामर्श भी देती है। आवश्यकतानुसार समय–समय पर विशेष विधा के चिकित्सकों द्वारा व्याख्यान और स्वास्थ्य मेले का आयोजन प्रकोष्ठ की विशिष्टता है।

छात्राओं के चतुर्मुखी विकास के साथ उन्हें रोजगार के उपयुक्त अवसर उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से महाविद्यालय में प्लेसमेंट सेल का गठन किया गया है। विगत सत्र में इस प्रकोष्ठ ने दो आयामों पर कार्य किया। प्रथम, छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु कार्यशाला आयोजित करना व द्वितीय ओरिएन्टेशन प्रोग्राम व डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से छात्राओं को रोजगार संभावनाओं की समय–समय पर समुचित जानकारी उपलबध कराना। सितम्बर माह में छात्राओं के व्यक्तित्व विकास व करिअर काउंसिलिंग के लिए महाविद्यालय में महिन्द्रा प्राइड के सहयोग से नन्दी फाउंडेशन द्वारा 25 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यूनाइटेड कॉलेज में आयोजित 'जॉब उत्सव' में महाविद्यालय से 30 छात्राओं ने भाग लिया जिनमें से 22 छात्राएं साक्षात्कार के माध्यम से विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में चयनित हुई। प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित ओरिएन्टेशन प्रोग्राम में छात्राओं को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अलावा अन्य क्षेत्रों मे रोजगार की संभावनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। बी.एड. संकाय की 10 छात्राध्यापिकाओं का चयन विभिन्न विद्यालयों में हुआ है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय की छात्राओं ने अजीम जी ग्रुप द्वारा परिचालित 'कैम्पस रिक्रूटमेंट ड्राइव' तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित 'कैम्पस टू कॉरपोरेट स्कीम' में भी प्रतिभागिता की।

शिक्षकों एवं अभिभावकों के परस्पर सहयोग द्वारा ही विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक अभिभावक संघ द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी प्रत्येक संकाय में पृथक–पृथक शिक्षक अभिभावक सभा आयोजित की गयी जिससे अभिभावकों को महाविद्यालय में उपलब्ध विविध सुविधाओं तथा आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी जा सके और अभिभावकों से सुझाव भी प्राप्त किए जा सके। अभिभावकों को महाविद्यालय के विविध नियमों जैसे हेलमेट की अनिवार्यता, अनुशासनपूर्ण आचरण का महत्व इत्यादि से अवगत कराया गया तथा अभिभावकों से छात्राओं को

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रेरित करने का आग्रह किया।

पुराछात्र परिषद् सदैव ही विविध कार्यक्रमों एवं बैठक के माध्यम से पुरा छात्राओं को महाविद्यालय से जोड़ने के लिए प्रयत्नशील है। शिक्षक दिवस के अवसर पर पुराछात्र परिषद् द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पुराछात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पुरा छात्र शहवर इकबाल, स्मिता त्रिपाठी, यास्मीन खान, अल्मास आब्दी, शिवांगी श्रीवास्वत आदि ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सभी पुरा छात्राओं ने पुराने अनुभव भी साझा किए। अप्रैल माह में पुरा छात्राओं की वार्षिक बैठक आयोजित की गई। क्वींसलैण्ड विश्वविद्यालय, बिस्बन आस्ट्रेलिया के ''स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल एण्ड फिलॉसफिकल इन्क्वायरी' में अध्ययापन कर रही महाविद्यालय की पुरा छात्रा समीमा जेहरा ने व्यक्तित्व और सामाजिक विकास पर दर्शनशास्त्र विभाग में व्याख्यान दिया।

पठन–पाठन हेतु अनुरुप वातावरण निर्माण करने की आधारभूत शर्त अनुशासन है। इसी उद्देश्य से गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रॉक्टोरियल बोर्ड द्वारा महाविद्यालय की सभी छात्राओं को अकादमिक कैलेन्डर मे अंकित तिथियों पर प्रॉक्टोरियल मीट के आयोजन में महाविद्यालय के अनुशासन संबंधी नियमों एवं निर्देशों की जानकारी प्रदान की गई। छात्राओं में अनुशासन संबंधी व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए छात्र परिषद् का गठन किया गया। मतदान प्रणाली द्वारा छात्राओं ने सत्र 2018–19 में अध्यक्ष पद पर मोनिशा मिश्रा, उपाध्यक्ष के रूप में फरज़ान शमीम, सचिव शिवांगी बनर्जी, संयुक्त सचिव पद पर हेरा इरशाद का चयन किया गया। शपथ ग्रहण समारोह में प्राचार्या प्रो0 लालिमा सिंह एवं वरिष्ठ प्रॉक्टरगण द्वारा पदाधिकारियों को सैश–बैज प्रदान किया गया तथा चीफ प्रॉक्टर द्वारा दायित्व निर्वहन की शपथ दिलाई गई और छात्राओं में यह संदेश प्रसारित करने का निर्देश दिया गया कि महाविद्यालय में किसी भी रुप में रैगिंग सख्त रुप से प्रतिबन्धित है और रैगिंग दण्डनीय अपराध है। यू. जी. सी. द्वारा निर्देशित Anti Ragging के नियमों के अनुपालन में सभी संकायों की छात्राओं और उनके अभिभावकों द्वारा Online शपथ पत्र भरवाया गया। स्वतंत्रता दिवस, दामोदरश्री अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह, वार्षिकोत्सव, संगोष्ठी, कार्यशाला, विशिष्ट व्याख्यानों, गणतंत्र दिवस, फ्रेशर समारोह, शुभकामना समारोह आदि अवसरों पर छात्र परिषद् के पदाधिकारियों ने छात्र प्रतिनिधियों की सहायता से अनुशासन व्यवस्था सम्भाली। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय परिसर में पूरे सत्र हेलमेट, परिचय पत्र, टोकन इत्यादि अनुशासन संबंधी नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित किया। दिनांक 25 जनवरी 2019 को मतदाता दिवस एवं स्वच्छता सर्वेक्षण पंजीकरण कार्य हेतु अपर नगर आयुक्त श्रीमती ऋतु सुहास व नगर निगम से आये अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर महाविद्यालय में छात्राओं का पंजीकरण कराया गया। प्रयागराज में आयोजित दिव्य कुम्भ महाकुंभ में शैक्षिक भ्रमण हेतु महाविद्यालय से लगभग 296 छात्राओं को ले जाया गया जहाँ छात्राओं ने अनुशासन व्यवस्था के साथ–साथ 'गंगा बहती हो क्यों ? सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभागिता भी की। प्रॉक्टोरियल बोर्ड द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम का सीधा प्रसारण ऑडीटोरियम के अतिरिक्त कान्फ्रेन्स हॉल एवं वाणिज्य संकाय के व्याख्यान कक्ष में दिखाया गया।

प्रतिभाशाली छात्राओं की मेधा को सम्मानित करने तथा जरुरतमंद छात्रओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए महाविद्यालय में छात्रवृत्ति, शुल्क मुक्ति तथा विशेष परिस्थितियों में शुल्क प्रतिपूर्ति की भी व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त छात्राओं को कम्पयूटर साक्षर बनाने के लिए एवं पेन्टिंग तथा संगीत, गायन एवं वादन प्रतिभा को विशेष रुप से प्रोत्साहन देने के लिए विशिष्ट छात्रवृत्तियां भी दी गई। सोसायटी एवं महाविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियों में दानदाताओं का आर्थिक सहयोग अप्रतिम है।

महाविद्यालय में सामाजिक विज्ञान परिषद् साहित्य परिषद्, वाणिज्य परिषद्, संगीत परिषद् एवं विज्ञान परिषद् क्रियाशील है जो पूरे सत्र विविध प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों के आयोजन के माध्यम से शैक्षिक वातावरण को उन्नत बनाने हेतु प्रयासरत रहा है। इन क्रियाकलापों का विस्तृत वर्णन विभागीय गतिविधियों के अंतर्गत किया गया है।

गुणवत्तापरक शिक्षा एवं उन्नयन के लिए महाविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता मूल्यांकन प्रकोष्ठ **(IQAC)** विभिन्न क्रियाओं एवं परियोजनाओं के माध्यम से निरंतर प्रयत्नशील रहा है। इस उद्देश्य हेतु निर्दिष्ट आवश्यकताओं का अनुपालन करते हुए IQAC की नियमित बैठक आयोजित की गयी एवं कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। शिक्षक वर्ग से शोध परियोजना हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किए गए एवं बाह्य विशेषज्ञों से इनका मूल्यांकन करवाने के पश्चात् दो शोध परियोजनाएं स्वीकृत की गयीं। जिनमें संगीत विभाग की एशोसिएट प्रोफेसर कैप्टन डॉ. रेखा रानी एवं अर्थशास्त्र विभाग के असिस्टेन्ट प्रोफेसर श्री सुगंध कुमार चौधरी के प्रस्ताव सम्मिलित थे। IQAC के अधीन प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 16 मई से 30 जून तक प्रतियेागी परीक्षाओं की तैयारी हेतु ग्रीष्मकालीन कोचिंग कक्षाएं संचालित की गयी। इस वर्ष 289 छात्राओं ने इस हेतु अपना पंजीकरण करवाया। महाविद्यालय के लिए यह अत्यन्त गर्व का विषय है कि इसका चयन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 'परामर्श' योजना के अधीन 'Mentor' के रूप मे किया गया। प्रयागराज के 5 शैक्षणिक संस्थाओं का चयन 'Mentee' के रूप मे किया गया जिन्हें महाविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा मूल्यांकन करवाने में मार्गदर्शन करेगा। गुणवत्तापरक शोध की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने की दिशा में एक सार्थक कदम महाविद्यालय द्वारा इसके प्रथम वार्षिक जर्नल 'अन्वीक्षा' के प्रकाशन के रुप में फलीभूत हुआ। प्रगतिशील शिक्षा की दिशा में एक और कदम मानव संसाधन प्रबंध मंत्रालय की 'स्वयं' योजना में प्रतिभागिता के रुप में प्रस्फुटित हुआ जिसमें ऑनलाइन कोर्सेस में छात्राओं के पंजीकरण हेतु महाविद्यालय की वेबसाइट पर लिंक निर्मित किया गया।

छात्र कल्याण परिषद् वर्ष भर छात्राओं के समस्याओं की समाधान के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से उनकी प्रतिभाओं को निखारने में भी संलिप्त रहा है। छात्र कल्याण परिषद् द्वारा नवागत छात्राओं के स्वागत में 'नवोन्मेष' कार्यक्रम 8 सितम्बर 2018 को आयोजित किया गया। जिसमें शबी फातिमा को मिस फ्रेशर 2018 घोषित किया गया। जस्मित सलूजा प्रथम उप–विजेता एवं नमरा उस्मानी द्वितीय उप–विजेता रही। 25 जनवरी को प्रॉक्टोरियल बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में छात्र कल्याण परिषद् की सदस्य छात्राओं द्वारा मतदाता जागरुकता दिवस मनाया गया। छात्राओं ने रैली निकाल कर सभी को अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया 16 फरवरी 2019 को छात्र कल्याण परिषद् द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'शुभकामना' में छात्राओं की आकर्षक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। अंतिमा पाण्डेय को 'मिस एस एस के 2019' चुना गयाा। मार्गरेट प्रथम उप–विजेता एवं ईरम द्वितीय उप–विजेता रही।

महाविद्यालय सदैव ही समावेशी एवं सर्वांगीण विकास की विचारधारा में प्रबल विश्वासी रहा है। इसी कारणवश विस्तार कार्य समिति महाविद्यालय परिसर के भीतर एवं परिसर के बाहर भी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अपने सामाजिक दायित्व के निर्वाह में तत्पर रहा है। विस्तार कार्य के अधीन महाविद्यालय की छात्राओं ने राज अन्ध विद्यालय इसराजी देवी शिक्षण संस्थान में जाकर वहाँ के बच्चों को पर्यावरण स्वच्छता, स्वास्थ्य, सामान्य ज्ञान की जानकारी दी। साथ ही स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत वहाँ के परिसर, सड़क एवं कक्षाओं की सफाई में भी भाग लिया। विस्तार कार्य के अंतर्गत ही महाविद्यालय की छात्राओं एवं शिक्षकों ने कुष्ठ आश्रम में जाकर भी स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया। इसके अतिरिक्त सदियापुर मलिन बस्ती में जाकर छात्राओं ने 'दो बूंद हर बार, पोलियो पर जीत रहे बरकरार' जन जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया। साथ ही सदियापुर मलिन बस्ती में ही महाविद्यालय की छात्राओं ने बाल शिक्षा कार्यक्रम के तहत 'दीप से दीप जले, पढ़े सब बढ़े सब'' कार्यक्रम संचालित कर अक्षर ज्ञान का प्रशिक्षण प्रदान किया। विस्तार कार्य के अंतर्गत प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा प्रौढ़ नागरिकों को साक्षर करने के साथ डिजिटल इण्डिया अभियान से लाभान्वित होने के लिए

मोबाइल, राशन कार्ड, आधार कार्ड के प्रयोग का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। परिसर के भीतर भी कई कार्यक्रम संचालित किये गये। 30 अक्टूबर को महिला अल्प बचत योजना पर सिंडिकेट बैंक, अतरसुइया शाखा, प्रयागराज की ओर से एक दिवसीय शिविर लगाकर छात्राओं को खाता खुलवाने की जानकारी प्रदान की गयी। इसी कड़ी मे 21 दिसम्बर को विस्तार कार्य के अंतर्गत ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स शाखा मीरापुर प्रयागराज के वरिष्ठ प्रबन्धक अजीत कुमार सिन्हा एवं सहायक अंकुर कुमार श्रीवास्तव ने छात्राओं को बैंक द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे अल्प बचत योजना, प्रधानमंत्री जन धन योजना इत्यादि सहित अन्य सामाजिक सुरक्षा से सम्बन्धित बैंकिंग सेवाओं की जानकारी प्रदान की एवं साथ ही एक दिवसीय शिविर लगाकर छात्राओं को शून्य शेष पर खाता खुलवाने के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त विस्तार कार्य के अंतर्गत बाल विकास अधिकारी श्री विमल चौबे का बाल शिक्षा के महत्व पर एवं सामाजिक कल्याण विभाग के श्री आशोक चौहान का प्रौढ़ शिक्षा के महत्व पर व्याख्यान आयोजित किया गया। विस्तार कार्य समिति अपने सामाजिक दायित्व के निर्वाह के साथ ही पर्यावरण के प्रति भी अपने दायित्व हेतु सजग रही है। इसी कड़ी में छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया एवं वृक्ष लगाकर पृथ्वी को हरा भरा रखने का संकल्प लिया। पूरे महाविद्यालय मे शिक्षाशास्त्र परिषद् ने पर्यावरण जागरुकता के अनुशीर्षक (captions) लगाये। वॉल मैगजीन पर छात्राओं द्वारा 'पॉलीथीन का प्रयोग बन्द हो' (Say no to Polythene) से सम्बन्धित कैप्शन्स लगवाए गये। 'Save the nature to save the future' विषय पर एक अन्तर्महाविद्यालयीय पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय और सभी संघटक महाविद्यालय के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

शैक्षिक भ्रमण विद्यार्थियों के व्यावहारिक पक्ष को प्रत्यक्ष रुप से समझने का अवसर प्रदान करती है। इसी उद्देश्य से इस वर्ष विभिन्न विभागों की छात्राओं को सारनाथ, कौशाम्बी, क्योटी जलप्रपात मध्यप्रदेश, बायोवेद शोध संस्थान श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद संग्रहालय, गंगा गैलरी इत्यादि के शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया गया।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं समस्त संसाधन युक्त शैक्षिक वातावरण प्रदान करने के लिए संकल्पबद्ध महाविद्यालय अपनी भावी यात्रा में छात्राओं के सर्वतोमुखी विकास हेतु देश काल के अनुरुप नये–नये आयाम संयुक्त करने के लिए प्रयासरत है।

स्वानुभूति और स्त्री विमर्श

सुमव्या
एम.ए. प्रथम वर्ष - हिन्दी

कविता के केन्द्र में स्त्री सदैव रही है। लेकिन साहित्य के इतिहास में पुरुष की तुलना में स्त्रियों द्वारा लिखित कविता बहुत ही कम मात्रा में है। डॉ. सुमन राजे ने 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' में अतीत में महिला लेखन की तलाश की है। इसी तरह सावित्री सिन्हा ने मध्यकालीन कवयित्रियों पर अनुसन्धान कार्य किया। आधुनिक युग में नवजागरण की चेतना के साथ स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा एवं उनकी सामाजिक सांस्कृतिक भागीदारी में गुणात्मक एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। स्वतन्त्रता के बाद भारतीय संविधान में स्त्री-पुरुष दोनों को पूर्ण समानता का अधिकार मिलनके बाद तथा स्त्री शिक्षा के व्यापक प्रसार के कारण स्त्रियों में अपने दायित्व के प्रति अधिक जागरूकता आयी। यही नहीं वे पुरुषों के बराबर के अधिकार के लिए स्वयं संघर्षशील हुई। लैंगिक आधार पर किये जाने वाले किसी भी प्रकार का भेदभाव उन्हें मान्य नहीं है और जीवन के किसी भी क्षेत्र में वे पुरुषों से अपने को कमतर मानने को भी तैयार नहीं है। नारी सशक्तीकरण की प्रक्रिया नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में ही शुरू हो गई थी किन्तु नारी की शक्ति, उसकी श्रेष्ठता एवं वृहत्तर क्षेत्र में उसकी सम्मानजनक उपस्थिति, घर से बाहर निकलकर शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, सेना, पुलिस आदि में उसकी सेवाओं की वकालत बहुत वर्षों तक पुरुषों द्वारा की गयी। बहुत से साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में नारी की आधुनिक और नयी चेतना से युक्त नायकत्व की तस्वीर प्रस्तुत की। विविध क्षेत्रों में कुछ गिनी-चुनी नारियाँ अपनी मजबूत उपस्थिति से अन्य नारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं। सामाजिक साहित्यिक क्षेत्रों के अलावा सत्ता के शीर्ष पर स्त्रियों की उपस्थिति से अन्य नारियों के लिए उत्प्रेरक रहीं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु से शुरू करके, मैथिलीशरण गुप्त, निराला, प्रसाद, पन्त आदि कवियों ने नारी की स्वतन्त्रता पर, उसके योगदान पर प्रकाश डाला। नयी कविता, प्रगतिवादी कविता, जनवादी कविता से जुड़े रचनाकारों ने भी माँ, स्त्री, लड़की पर कविताएँ लिखी हैं। आन्दोलन मुक्त कवियों ने भी इन विषयों पर कलम चलायी है। आधुनिक युग में महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, विद्यावती कोकिल छायावाद के समय तक की मुख्य कवयित्रियाँ है जिन्होंने कविता के द्वारा पुरुष के बराबर अपनी श्रेष्ठता को प्रमाणित किया। सप्तकों में शकुन्त माथुर, कीर्ति चौधरी, सुमन राजे केवल तीन स्त्रियाँ ही जगह पा सकीं।

स्त्री-विमर्श की धूम मची है उत्तर-आधुनिक युग में यद्यपि सीमोन द बोउवार की विश्व चर्चित पुस्तक 'द सेकण्ड सेक्स' का प्रकाशन 1949 में हुआ। 1970 में इसी लेखिका ने 'ओल्ड एज' नामक पुस्तक लिखी। इन्होंने फ्रांस में नारी मुक्ति आन्दोलन की अगुवाई की। इनकी रचनाओं का भारत के स्त्री-विमर्श पर गहरा प्रभाव पड़ा है। प्रभा खेतान ने सीमोन के विषय में लिखा है कि "फ्रांस की राज्य क्रान्ति हो या विश्व युद्ध स्त्री से पुरुष सहारा लेता है और पुनः उसे घर लौट जाने को कहता है। वह सदियों से ठगी गयी है। यदि उसने कुछ स्वतन्त्रता हासिल भी है, तो उतनी ही, जितनी की पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देना चाहा। अतः सीमोन का मुक्ति सन्देश उसी आधी दुनिया के लिए है जो स्त्री कहलाती है।"

सीमोन ने बड़े तार्किक तथा रोचक ढंग से स्त्री के अधीनस्थ बने रहने के कारणों की व्याख्या जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और जातीय इतिहास के दृष्टिकोणों से किया है, साथ ही अनेक मान्यताओं का सतर्क खण्डन भी किया है। कविता के क्षेत्र में जिन महिलाओं ने अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति न केवल दर्ज की है बल्कि कविता को उँचाई दी है उनमें इन्दु जैन, सुनीता जैन, स्नेहमयी चौधरी, अमृता भारती, अनामिका, उमा सिंह, कात्यायनी, प्रभा खेतान, अजन्ता देव, कमल कुमार आदि उल्लेखनीय है। इन्दु जैन ने जीवन के अनुभवों को समसामायिक नारों से अप्रभावित रहते हुए शब्दबद्ध किया है। इनके काव्य संकलन हैं– "हमसे पहले भी लोग यहाँ थे– बुनती आवाजें, कोना तेरा कौन सा, यहाँ कुछ हुआ हो तो था, सबूत क्यों चाहिए और कुछ न कुछ टकरायेगा जरूर।" सुनीता जैन प्रेम, प्रकृति और परिवार से जुड़े अपने अनुभवों को काव्य में उकेरती है। उन्होंने माँ को लेकर अनेक कविताएँ लिखी है। इनके प्रकाशित काव्य संकलन है– 'हो जाने दो मुक्ति', 'जाने लड़की पगली', दूसरे दिन, इन्होंने वंचितों तथा शोषितों के प्रति भी मार्मिक कविताएँ लिखी हैं। प्रकृति के सुन्दर बिम्बों से इनकी कविता अधिक भावव्यंजक हो गयी है।

स्त्री विमर्श में बढ़-चढ़कर भागीदारी

करने वाली कवयित्रियों में अनामिका की कविताएँ अनुभव की ऊष्मा तथा सज और सहज भाषा में तीखी भावव्यंजना के कारण चर्चित हुई हैं। अनामिका के चार काव्य-संकलन प्रकाशित हैं–गलत पते की चिट्ठी, बीजाक्षर, अनुष्टुप, कविता में औरत, खुरदरी हथेलियाँ। उनकी कविता "अबला जीवन हलो तुम्हारी यही कहानी" में नये मुहावरे में आज की औरत की दशा का चित्रण देखिये–

हंसती हुई दीखती है वे/हर ओर / टी.वी. में / सारे मुख्य पृष्ठों / चौराहों पर / पिटकर भी निकली हो घर से / तो जाहिर नहीं होने देती।

अनामिका बाजारीकरण में औरत की मनोदशा का चित्र खींचते हुए अन्त में सवाल उठाती है कि 'जाल बिछा ही रहा जायेंगे क्या भाई/सारे चुग्गे/खुद ही जायेंगे क्या चुनकर/ भूखे बहेलिये।

इनकी 'वृद्धाएँ शीर्षक कविता महिला की पारिवारिक स्थिति की विडम्बना को उद्‌भासित करती है। वृद्धाएँ परिवार के लिए वरदानस्वरूप हैं, उनकी उपयोगिता आज के सन्दर्भ में कम नहीं हुई है। सहज आत्मीय लगाव, आदर सम्मान, श्रद्धा के बदले उनकी उपस्थिति मात्र उपयोगिता की दृष्टि से है। घर में वह विशिष्ट नौकरानी से अधिक नहीं रहती है– "वृद्धाएँ घर में रहती है / लेकिन ऐसे जैसे अपने होने के खातिर हो क्षमा प्रार्थी / लोगों के आते ही बैठक से उठ जाती है / छुप-छुप कर रहती हैं, छाया-सी माया-सी।"

प्रभा खेतान प्रसिद्ध कथा लेखिका है। उन्होंने स्त्री विमर्श को कविताओं में भी उजागर किया है। अपरिचित उजाल, सीढ़ियां चढ़ती हुई मैं, एक और आकाश की खोज में, कृष्णधर्मा मैं, हुस्न बानो और अन्य कतिवाएँ एवं अहल्या, उनके प्रकाशित काव्य संकलन हैं।

गगन गिल, सविता सिंह, कमल कुमार, वन्दना केंगरानी, यशोधरा मिश्र, अनीता वर्मा, माधुरी भटनागर, नीलिमा सिंह आदि अनेक कवयित्रियाँ स्त्री-विमर्श में रचनात्मक साझेदारी कर रही हैं।

उमा सिंह के दो काव्य-संकलन 'अन्तर्द्वन्द्व' तथा 'अनुभूति' प्रकाशित हैं। इनमें नारी जीवन के विविध अनुभवों की गहरी अभिव्यंजनाएँ हैं। नारी का उद्‌घोष कविता में ये कहती हैं–

मैं हूँ-अंतरिक्ष परी कल्पना चावला
राजनीति की इन्दिरा गाँधी।
रणक्षेत्र में रानी झाँसी।

सम्बन्धों को आत्मीयता तथा दिल के अन्दर से उमड़ने वाले प्रेम के साथ जीना और बात है, सामाजिक दबाव के कारण रिश्तों का नकली निर्वाह उससे भिन्न है। औरत की मजबूरी रिश्तों को सामाजिक दबाव में स्वीकार करने की है–

जहाँ न थी रिश्तों की अनुभूति / उनकी स्मृति में बनानी पड़ी / अपने हाथों से मजार / उस पर जलाने पड़े चिराग। एक माँ जब बेटों और बेटियों द्वारा बाँट ली जाती है तो उसका दर्द कितना गहरा होता है, इसे भुक्तभोगी माँ ही अनुभव कर सकती है। 'बँटवारे की माँ' कविता इसी पीड़ा को व्यक्त करती है। पिता विदेश में माँ स्वदेश में, एक-दूसरे से बहुत दूर। बेटे और बहुओं के बीच डरे-सहमे, उनके अनुसार जीवन जीने को विवश पति-पत्नी पत्र के द्वारा एक-दूसरे से अपने मन की पीड़ा को उजागर करते हैं। 'पाती का उत्तर' ऐसी ही कविता है। उमा ने नारी-जीवन के ऐसे प्रसंगों को उजागर किया है जो हृदयस्पर्शी है।

कवयित्रियों में सर्वाधिक सशक्त एवं सुलझी हुई रचनाशीलता में अग्रगण्य विनय राजाराम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बहुभाषाविद् श्रीमती विनय राजा राम के पाँच काव्य-संकलन प्रकाशित है 'झर-झर-झर', 'उत्तर दो सप्तवर्णी', 'किसी को तो शिव बनना होगा', प्रमुख संकलन हैं। वे द्रोपदी, कुन्ती, अहल्या, गान्धारी, नये रूप में पहचानने की कोशिश करती हैं। भ्रम, छलावे की अन्य पट्टिका आज भी गान्धारी की तरह नारी की आँखों में बँधी है। औरत, माँ, आदि शीर्षकों में इन्होंने नारी की आकांक्षाओं तथा पुरुष की छोटी नियति को अंकित किया है। नारी से मनुष्य यन्त्रवत् आचरण की सदैव चाह रखता है– किन्तु वह नहीं जानता / जानकार भी कोई नहीं जानता / उस औरतनुमा मशीन में / एक सुलगती आग भी है / भरपूर प्राणवान् ज्वलनशील आग / 'तुम अहल्या नहीं हो' कविता में विनय कहती है– छलावे की परतों दबी / ओ नारी!/ तुम प्रस्तर नहीं हो / परमाणु हो / उठो / जागो / अपने को पहचानो / अपने लिये आप ही राम बनो।

विनय राजाराम ने प्रकृति-सम्बन्धी सुन्दर गीतों का प्रणवन किया है। वर्तमान राजनीतिक विडम्बनाओं एवं स्वार्थ की अन्ध दौड़ में राष्ट्रीयता तथा मानवता की रक्षा कैसे हो, इन प्रश्नों पर भी वह नितान्त संवेदनशील तरीके से विचार करती हैं और उन भावों को काव्यात्मक परिणति देती हैं।

आलेख

भारतीया साहित्य में गांधी

डॉ० आशा उपाध्याय
हिन्दी विभाग

विश्व के इतिहास-क्षितिज पर महात्मा गांधी का आगमन वस्तुतः विराटत्व का अवतरण था। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व ने अपनी श्रेष्ठता से पूरे जन मानस को अभिभूत कर दिया था। साहित्य भला इससे कैसे अछूता रहता। युग चेतना साहित्य सृजन में प्रेरणा का कार्य करती है। भारतीय साहित्य में उस युग के आन्दोलनों, वैचारिक क्रान्ति और स्पन्दनों को भली-भाँति देखा जा सकता है। साहित्य ओर गांधी दोनों का ही केन्द्र बिन्दु 'मनुष्य और मनुजता' है। यही कारण है कि गांधी ने जब आर्थिक शोषण, राजनीतिक अधिकार, समानता, स्वतन्त्रता और विश्व बन्धुत्व का स्वर तेज किया तब साहित्य भी इससे प्रभावित हुआ। गांधीवादी विचारधारा के परिणाम स्वरूप ही साहित्यकारों ने भी सर्वव्यापी अनास्था और आत्मघाती व्यक्तिवाद के मार्ग को छोड़ दिया। सामाजिक दायित्व उनके लेखन का मुख्य स्वर बन गया और यह भारतीय साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि है। यह भी उल्लेखनीय है कि साहित्यकारों ने कहीं भी गांधी की विचारधारा को सीधे-सीधे साहित्य में नहीं रखा है बल्कि उनके सिद्धान्तों से अनुप्राणित होकर साहित्य की सर्जना की है।

गांधी ने राष्ट्रीय चेतना की अलख हिन्दी के माध्यम से जगायी और हिन्दी को पूरे भारत की वाणी बनाया। साहित्य वही चिरन्तन होता है जिसमें जन-जीवन के शाश्वत सत्य, मान्यताएं और आकांक्षाएं अभिव्यक्त होती हैं और गांधी के विचारों से प्रभावित साहित्य इस प्रकार अनुप्राणित हुआ। हम यों भी कह सकते हैं कि महात्मा गांधी से प्रभावित रचनाकार भी पहली बार चन्दबरदाई के बाद इस युग में पुनः युद्धरत हुए। महात्मा गांधी से प्रभावित साहित्यकारों ने साहित्य में वैचारिक स्वातन्त्र्य को प्रमुखता दी और स्वशासन एवं स्वाधीनता की मांग साहित्य में तीव्र हुई। युगबोध के परिप्रेक्ष्य में धर्म एवं तत्त्व ग्रंथों की सामयिक व्याख्याएं होनें लगी। इस विचारधारा के परिणामस्वरूप ही साहित्य सर्जकों में विचार-स्वातन्त्र्य का जन्म हुआ। रूढ़िग्रस्त विचारों का परित्याग कर साहित्यकारों ने देश को नयी आँखों से देखना प्रारम्भ किया।

हिन्दी साहित्य के सन् 1921 से 1940 तक की रचनाओं में गांधी जी का अहिंसात्मक राष्ट्र प्रेम का सिद्धान्त और आत्म बलिदान का महत्त्व अधिक प्रतिभासित हुआ है। देशभक्ति, अछूतोद्धार, हिन्दु-मुस्लिम एकता, नारी स्वातन्त्र्य, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि प्रवृत्तियाँ भारतेन्दु युग से लेकर छायावाद युग तक के रचनाकारों की रचनाओं के केन्द्र बिन्दु थे। सेठ गोविन्द दास का राम से गाँधी, दलित कुसुम, अंगूर की बेटी एक तरफ था तो दूसरी ओर हरिकृष्ण प्रेमी का आर्थिक शोषण पर आधारित 'बंधन', और शिव प्रसाद गुप्त के 'धरती माता' में जमींदारी प्रथा का पुरजोर विरोध था। इनके अतिरिक्त भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मी नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और चन्द्रगुप्त विद्यालंकार जैसे अनेक रचनाकार अपनी कृतियों में गांधी के विचारों से लैस थे लेकिन प्रेमचन्द्र की रचनाओं में तो गांधी का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा था। प्रेमचन्द्र ने 'गांधी युग की आत्मा' के साथ साक्षात्कार किया था। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में सत्य, अहिंसा, प्रेम के अलावा अस्पृश्यता निवारण, ग्राम-सुधार, आर्थिक विषमता, नारी जागरण और उद्धार जैसी अनेक समस्याओं को रखकर उनका समाधान भी दिया गया। उनका प्रथम कहानी संग्रह 'सोज़ेवतन' राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत है। रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्म भूमि, निर्मला, गबन, गोदान आदि सभी रचनाएं गांधी के विचारों को सर्वोपरि मानती हैं। चाहे ज़मींदारों-किसानों का परस्पर सम्बन्ध हो या वर्ग संघर्ष, मशीनीकरण का विरोध हो या पूंजीवाद की उपेक्षा, सामन्तवादी संस्कृति के प्रति लोगों का आकर्षण हो अथवा सूत-कताई, हरिजनोद्धार, शराब बन्दी सब इनमें स्पष्टतः परिलक्षित होती है। जैनेन्द्र ने भी 'परख', 'सुनीता', 'सुखदा', 'विवर्त' आदि कृतियों के द्वारा गांधीवाद और मनोविज्ञान का समन्वय किया है। सियाराम शरण गुप्त की 'गोद', 'अंतिम आकांक्षा' में भी अहिंसा की पूर्ण छाप है। 'नारी' में जमुना जब अपने पुत्र से कहती है–"सह ले इसे, सह ले। कमज़ोर क्यों पड़ता है ? जितना ही अधिक सह सकेगा उतना ही बड़ा होगा" इस वाक्य में गांधी के सन्देश को स्पष्ट सुना जा सकता है।

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' हो या मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' इनके पात्र श्रद्धा और मांडवी भी चरखा कातते हैं। लक्ष्मी नारायण मिश्र, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने अपनी रचनाओं में सत्य, अहिंसा को संघर्ष तथा कर्ममय जीवन का महान धर्म एवं आवश्यक कर्तव्य माना है। प्रसाद के 'विशाख', 'कामना' और 'जनमेजय का नागयज्ञ' पन्त की ज्योत्स्ना और आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'धर्मराज' पर गांधी चिंतन का स्पष्ट प्रभाव है। फणीश्वरनाथ रेणु का "मैला आँचल' हो या गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' या फिर निर्मल वर्मा के निबन्ध हों सब गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित दिखाती देते हैं।

भारतीय जीवन-दर्शन भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता को अधिक महत्त्व देता है। गांधी जी के राष्ट्रीय दर्शन का मुख्य तथ्य था आध्यात्मिकता और नैतिकता की पुनर्प्रतिष्ठा। गांधी दर्शन का सत्य

साध्य एवं अहिंसा साधन है। गांधी की दृष्टि में 'सत्य' ही ईश्वर हैं। इस सत्य और अहिंसा की पुष्टि श्रीधर पाठक, सियाराम शरण गुप्त, मैथिलीशरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमार चौहान और रामनरेश त्रिपाठी की रचनाओं में मिलती है। मैथिली शरण गुप्त का काव्य 'सत्याग्रह' तो गांधी के सत्याग्रह का पूरा विवेचन है। माखनलाल चतुर्वेदी की 'अदालत में सत्याग्रह के नाते बयान' कविता में भी गांधी जी द्वारा अपनाये गये सत्याग्रह तथा अहिंसा का वर्णन किया गया है। रामनरेश त्रिपाठी ने 'पथिक' नामक प्रेमाख्यान खंड काव्य में गाँधी जी की सत्य-अहिंसा की पुष्टि की है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', वियोगी हरि, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में गांधी का देश प्रेम, सर्व धर्म समन्वय एवं कर्म सिद्धान्त को सहजता से देखा जा सकता है। रामधारी सिंह दिनकर का काव्य संग्रह 'बापू' इसका जीवन्त उदाहरण है। जैसे–

मानवता का इतिहास विकल, हांफता हुआ, लोह लहुान
दौड़ा तुझसे मांगता हुआ, बापू! दु:खों से सपदि त्राण।।

ʘ ʘ ʘ

बापू जो हारे, हारेगा, जगती तल का सौभाग्य क्षेम
बापू जो हारे, हारेंगे श्रद्धा, मैत्री, विश्वास, प्रेम।।

'कातें सो पहनें और पहनें सो कातें' गांधी के इस चरखा क्रांति के सन्देश को भवानी प्रसाद मिश्र जैसे श्रेष्ठ रचनाकारों ने अपनी कविता का मुख्य स्वर बनाया–

दो सूत कातो, और चार दाने उपजाओ।। **अथवा**

कई बार जब क्रोध उमड़ता है मैं पागल हो जाता हूं
और फेंक कर हाथ फाड़कर गला चीखता चिल्लाता हूँ
ऐसा लगता है कि काट कर थर दूं शत्रुगणों को अपने
और सांग कर डालूं पल में युगो-युगों तक देखे सपने
किन्तु तभी स्वर शांत तुम्हारा मुझे सुनाई पड़ जाता है
क्रोधोन्मत्त शीश लज्जा से गड़ जाता है।।

हिन्दी से इतन अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी गांधी के प्रभाव को परिलक्षित किया जा सकता है। गुजराती के उमाशंकर जोशी, मराठी के दिनकर पेंडाकर हों या तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम जैसी दक्षिणी भाषाओं के कवि सुब्रह्मण्यम भारती, टी०वी० कल्याण सुन्दरम, आलूर वैंकटराव, बल्ललोल और बामक्कल रामलिंगम एवं के० सच्चिदानन्दन इन सबने गांधी के विचारों को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है।

बंगला, असमी और उड़िया भाषा के रचनाकारों जैसे अंबिका गिरी राव चौधरी, जी० शंकर कुरूप, बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, शरत चन्द्र, रवीन्द्र नाथ टैगोर, काजी नज़रूल इस्लाम– इन सबके साहित्य पर गांधी के असहयोग आन्दोलन का गहरा प्रभाव दिखायी देता है।

गांधी ने समाज और प्रकृति से जिस प्रकार संवाद स्थापित किया, वही संवाद समूचे भारतीय साहित्य में मिलता है। दलित एवं शोषितों के प्रति उनकी सहानुभूति हमारे भारतीय साहित्य का बीज मंत्र है। भारतीय समाज गांधी दर्शन के बिना अधूरा है। गांधी की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी सौ वर्ष पहले थी।

आलेख

महिला सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका

रानी सोनी
एम.ए. द्वितीय वर्ष-हिन्दी

शिक्षा है जीवन का अमूल्य उपहार
शिक्षित नारी ज्ञान भण्डार।

देश की प्रगति में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भागीदारी अत्यावश्यक है। संसार के सृजन एवं संचालन में नारी का स्थान पुरुष से बढ़कर है। पुरुष ने तो मात्र बीज को संजोकर शिशु जन्म दिया। उसे पाल-पोस कर समाज का भावी सदस्य बनाया नारी ने। इस सृजन और पालन की प्रक्रिया में नर से नारी का अंशदान श्रेष्ठ है। समाज में सभी क्षेत्रों में पुरुष और महिला दोनों को बराबरी में लाना होगा। देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए **महिला सशक्तीकरण** बेहद आवश्यक है। महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण की जरूरत है जिससे कि वह हर क्षेत्र में अपना खुद का फैसला ले सकें चाहे वो स्वयं, देश, परिवार या समाज किसी के लिए भी हो। देश को पूरी तरह से विकसित बनाने तथा विकास के लक्ष्य को पाने के लिए एक जरूरी हथियार के रूप में है महिला सशक्तीकरण। शिक्षा किसी भी राष्ट्र को उन्नति के पथ पर लाने के साथ मनुष्य जीवन के महत्त्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने में उपयोगी साधन है, जिसके माध्यम से व्यक्ति के बुद्धि व व्यक्तित्व में निखार आता है। अपने व्यक्तित्व में समाहित गुणों के माध्यम से व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र को उन्नतशील बनाता है। साथ ही शिक्षा व्यक्ति को आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक कार्यों को सम्पन्न करने के योग्य बनाती है। दूसरे शब्दों मे कहा जा सकता है कि जिस शिक्षा को ग्रहण कर मनुष्य राष्ट्र और समाज का उत्थान करे तथा इसके माध्यम से जीविकोपार्जन करे, इसी में शिक्षा की सार्थकता है।

शिक्षा आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण के लिए पहला और मूलभूत साधन है। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती है। दुनिया के जो भी देश आज समृद्ध और शक्तिशाली है, वे शिक्षा के बल पर ही आगे बढ़े हैं। इसीलिए आज समाज की आधी आबादी अर्थात् महिलाएं जो कि विकास की मुख्य धारा से बाहर हैं, उन्हें शिक्षित बनाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। इस संदर्भ में राधाकृष्णन आयोग ने कहा है–

''स्त्रियों के शिक्षित हुए बिना किसी समाज के लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि सामान्य शिक्षा स्त्रियों या पुरुषों में से किसी एक को देने की विवशता हो, तो यह अवसर स्त्रियों को ही दिया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा होने पर निश्चित रूप से वह शिक्षा उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक पहुंच जाएगी।''

इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह बात स्वीकार की गई है कि महिला शिक्षा का महत्त्व न केवल समानता के लिए, बल्कि सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तेज करने के लिये भी जरूरी है।

शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए कहा जाता है कि यदि एक पुरुष को शिक्षित किया जाये तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन अगर एक महिला को शिक्षित कर दिया जाये तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। अर्थात् एक महिला का शिक्षित होना उसके पूरे परिवार की शिक्षा और कल्याण से जुड़ा है। परिवार में महिला शिक्षा से बच्चे विशेष रूप से प्रभावित होते हैं, क्योंकि बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं। इसीलिए भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा अधिकारों के प्रति उदासीनता, आर्थिक निर्भरता, तकनीकी एवं पुरुषों का महिलाओं पर प्रभुत्व आदि समस्याओं को दूर करने के लिए शिक्षा का महत्त्व और बढ़ जाता है।

'महिला सशक्तीकरण' के बारे में जानने से पहले हमें ये समझ लेना चाहिए कि हम **सशक्तीकरण'** से क्या समझते है। **'सशक्तीकरण'** से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तीकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे है जहाँ महिलाएं परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हों। महिला सशक्तीकरण के अन्तर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। सशक्तीकरण की प्रक्रिया में समाज को पारम्परिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है, जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है, महिला सशक्तीकरण भौतिक आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक, सभी स्तर पर फैसले लेने के लिए प्रत्येक स्तर पर महिलाओं में आत्म-विश्वास पैदा करने और उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फैसले लेने के लिए महिलाओं को अधिकार देना ही **महिला सशक्तीकरण** है। देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए महिला सशक्तीकरण बेहद जरूरी है।

''महिलाओं को दे शिक्षा का उजियारा,
पढ़-लिख करें रोशन जग सारा।''

महिला सशक्तीकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि महिला सशक्तीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनती है।

गाँधी जी और महिला सशक्तीकरण– महात्मा गाँधी के विचार महिला शिक्षा के साथ-साथ महिला सशक्तीकरण पर भी प्रासंगिक है। महात्मा गाँधी ने कहा है– **''महिलाएँ जिनको अपना शृंगार समझती है, उन बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के बारे में मेरे विचार बड़े क्रान्तिकारी हैं। मुझे यकीन है कि अगर ईश्वर ने चाहा तो एक दिन जब मेरी खोज पूरी हो जायेगी, मैं अपने निष्कर्षों को जनता के सामने रख पाऊंगा। अपने अनुभव से मुझे इस बात पर यकीन हो गया है कि महिलाओं की असली तरक्की उनके अपने प्रयासों से ही हो सकती है।''**

महिलाओं को पुरुषों के बराबरी के मुद्दों पर गाँधी जी एकदम स्पष्ट है। इस संदर्भ में गाँधी ने स्पष्ट कहा है कि– **हमारे लिए विचार करने की बात यह है कि पुरुषों के मुकाबले हमारी महिलाओं की स्थिति हीन क्यों हो गयी है ?** सदियों की दासता से पैदा हुई मनोवृत्ति की बेड़ियों को तोड़ने के लिए आत्म सम्मान की भावना को वे बहुत ही आवश्यक मानते थे। उन्होंने देखा कि अगर महिलाओं की दशा में बदलाव लाना है तो शिक्षा, सामाजिक सुधार और अर्थनीति एवं राजनीति को देश की प्रतिभा के अनुरूप बनाना होगा। गाँधी जी चाहते थे कि महिलाएँ अन्याय का मुकाबला अन्याय और हिंसा से करने के बजाय अपनी आन्तरिक शक्ति और क्षमता का विकास करें। उन्होंने भारतीय महिलाओं को भय से मुक्त किया।

महिला सशक्तीकरण में शिक्षा की अहम भूमिका– महिला सशक्तीकरण की जब भी बात की जाती है, तब सिर्फ राजनीतिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण पर चर्चा होती है पर सामाजिक सशक्तीकरण की चर्चा नहीं होती। ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता रहा है। उन्हें सिर्फ पुरुषों से ही नहीं बल्कि जातीय संरचना में सबसे पीछे रखा गया। महिलाओं का जब तक सामाजिक सशक्तीकरण नहीं होगा, तब तक वह अपने कानूनी अधिकारों का समुचित उपयोग नहीं कर सकेंगी। सामाजिक अधिकार या समानता एक जटिल प्रक्रिया है कई प्रतिगामी ताकतें सामाजिक यथा स्थितिवाद को बढ़ावा देती है और कभी-कभी तो वह सामाजिक विकास को पीछे ढकेलती हैं। सामाजिक सशक्तीकरण का प्रमुख जरिया है– **शिक्षा।** शिक्षा एक ऐसा कारगर हथियार है, जो सामाजिक विकास की गति को तेज करता है, समानता, स्वतंत्रता के साथ-साथ शिक्षित व्यक्ति अपने कानूनी अधिकारों का बेहतर उपयोग भी करता है और राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त भी होता है। इसलिये माना जाता है कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में ज्ञान, कौशल, दक्षता और क्षमताओं का विकास होता है, जो महिला सशक्तीकरण के लिए आवश्यक है। स्वनिर्णय लेने की क्षमता, सशक्तीकरण का एक बड़ा मानक है। शिक्षा का निर्णय लेने की क्षमता से धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा अन्य पक्षों जैसे समाज, धर्म, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व स्वास्थ्य के बारे में जानकारियाँ रखना आवश्यक है। इसलिये भारत में महिला शिक्षा एवं सशक्तीकरण की जागरूकता एवं विकास के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

नोबल पुरस्कार प्राप्त प्रो. अमर्त्य सेन का कथन है– **''यदि सबके लिए बुनियादी शिक्षा अनिवार्य रूप से उपलब्ध हो जाये तो विश्व में निश्चित ही बदलाव लाया जा सकता है।''** इसी प्रकार से भारत की प्रथम राष्ट्रपति महिला श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने भी शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है– **''मैं शिक्षा के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध हूँ और प्रत्येक शख्स स्त्री-पुरुष, लड़का-लड़की को आधुनिक शिक्षा से लाभान्वित होते देखना चाहती हूँ।''**

इस तरह से हमारे संविधान के अनुच्छेद 15(1)ए, 16(1) एवं 16(2) में उल्लेख है कि **किसी भी नागरिक से लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जायेगा। संविधान की धारा 15 के अनुसार–राज्य किसी नागरिक के प्रति केवल जाति, धर्म, लिंग, जन्म स्थान आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा। दसवीं योजना में लैंगिक भेदभाव को दूर करने की प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से उजागर होती है। योजना के दस्तावेज में उल्लेखित है– 'दसवीं योजना के अन्तर्गत महिला घटक योजना एवं जेण्डर बजटिंग की इन प्रभावी संकल्पनाओं को एक साथ जोड़ने के लिए तत्काल कार्यवाही प्रारम्भ की जायेगी, ताकि वे एक-दूसरे के प्रति पूरक भूमिका अदा कर सके तथा इस प्रकार निवारण एवं कार्योत्तर कार्यवाही को सुनिश्चित किया जा सके और इसके फलस्वरूप महिलाओं को महिला सम्बन्धी सभी विकासात्मक क्षेत्रों में अपना उचित हिस्सा प्राप्त हो सके।''** महिला सशक्तीकरण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण आधार है। शिक्षा का अर्थ साक्षरता न होकर चिन्तन शक्ति एवं व्यक्तित्व का विकास है। शिक्षा के माध्यम से ही महिला सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्रों में न केवल स्वयं को सबला बना सकती है अपितु अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर समाज में अपनी स्वतंत्रता पहचान भी बना सकती है। शिक्षा के अभाव मे महिला सशक्तीकरण की योजना कल्पनीय ही

होगी। नारी सशक्तीकरण का असली अर्थ तब समझ में आयेगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जायेगी और उन्हें इस काबिल बनाया जायेगा कि वे हर क्षेत्र में स्वतंत्र फैसले कर सके।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महिला सशक्तीकरण द्वारा ही राष्ट्र एवं समाज का विकास उसके इतिहास, मातृ भाषा, शिक्षा, महिला शिक्षा प्रगति एवं समृद्धि के आधार पर परिलक्षित होता है। समाज के विकास में महिलाओं की अहम भूमिका होती है। इसीलिये महिलाओं को समाज की रचनात्मक शक्ति कहा जाता है। अतः महिला सशक्तीकरण को सफल बनाने के लिए शिक्षा की अहम आवश्यकता है।

'नारी सशक्तीकरण' पर कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है–

कल तक थी जो नादान,
बना रही आज खुद की पहचान,
मिला नहीं उन्हें कभी सम्मान,
होता रहा सदा घोर अपमान,
शिक्षा से बन रही अब महान,
समाज में बढ़ रहा उनका सम्मान।।
लड़कों से आगे है नारी,
शिक्षा से हर क्षेत्र में बाजी मारी,
अपनी भूमिका निभाती सारी,
इनसे ही होती दुनिया प्यारी,
शिक्षा से आई नई जान,
बन रही आज खुद की पहचान।।
चुप नही रहेगी अब बहुत हुआ सहना,
तोड़ दी बेड़ियाँ, मन लुभावन वाला गहना,
अनेकों नारियों ने किया प्रयास,
बढ़ती रहे आजादी बढ़ता रहे विश्वास,
कर रही अब हर बाधा का सामना,
बढ़ता रहे शिक्षा का प्रसार करती यही कामना,
कल तक जो थी नादान, देश में अब हो रहा उनका सम्मान।।

विशेष

माँ

हेना जेहरा
बी.एड. प्रथम वर्ष

फ्रिक में बच्चों के कुछ इन तरह घुल जाती है माँ
नौजवाँ होते हुए बूढ़ी नजर आती है माँ

क्या होती है माँ ? ये प्रश्न बहुत साधारण है पर यदि इस प्रश्न की गहराइयों में देखा जाये तो कोई भी शब्द इस प्रश्न को उत्तर देने में समर्थ नहीं है।

क्या होती है माँ ? माँ भी तो होती है एक बेटी, वो बेटी जो होती है बेपरवाह सी, चंचल सी, हर समय आजाद पक्षी की तरह उड़ने को आतुर पर जब बन जाती है यही बेटी एक माँ, क्यों बदल जाता है उसका जीवन, जो कल तक लापरवाह थी आज हर पल अपने बच्चों की परवाह करती है। जिसे अपनी नींद सबसे अधिक प्रिय होती है तो बेटी क्यों माँ बनते ही रातों को जागकर अपने बच्चों का ख्याल रखती है, वो बेटी जो सबसे पहले खाना खा लेती थी क्यों माँ बनते ही खाना कम होता देखकर यह कहती है कि मुझे भूख नहीं है।

माँ धरती पर ईश्वर का रूप है। वो माँ ही होती है जिसके गोद में सिर रखकर दुनिया का सुकून मिलता है। माँ वो है जो हमें बोलना सिखाती है पर जब हम बोलना सीख जाते हैं तो यही कहते हैं कि आपने हमारे साथ किया क्या है ? माँ तो वह है जो बच्चों को खाना खिलाने के लिए हर कोशिश करती है पर जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो ये भी पूछना भूल जाते हैं कि माँ ने खाना खाया या नहीं ? माँ वो है जो हमें चलना सिखाती है पर जब हम चलना सीख जाते हैं तो उन्हें बहुत पीछे छोड़ देते हैं। माँ वो है जो हमे अपने आँचल में छुपा कर रखती है पर जब हम बड़े हो जाते हैं तो उन्हें अपने बड़े से घर में नहीं रख पाते हैं। माँ वो होती है जो अपने बच्चों की हर पसंद, नापसंद का खयाल रखती है पर जब माँ को हमारी जरूरत होती है तो वो आवाज देती रहती है और हम सुनकर भी अनसुना कर देते हैं अर्थात् हम सुनना ही नहीं चाहते।

संसार में कोई सबसे बड़ा कार्य है तो वह जीवन देना है और यह या तो ईश्वर देता है या माँ। इसलिए माँ की ममता का वर्णन करना असम्भव है। अतः हम सब को माँ का मूल्य समझना चाहिए क्योंकि माँ वह अनमोल रत्न है जो एक बार हमसे जुदा हो गयी तो फिर दुनिया की दौलत से भी दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

कहानी

अन्धविश्वास

ज्योति मिश्रा
बी.एड. द्वितीय वर्ष

जूफू अपने छत पर खेल रही थी कि अचानक उसका भाई आकर उससे गेंद छीन लेता है और डाँटने व चिढ़ाने के लहजे से कहता है– "ये तेरी नहीं मेरी गेंद है, पिछले हफ्ते ही माँ यह गेंद मेरे लिए लायी थी। तूने इसे हाथ भी कैसे लगाया वो भी बिना मुझसे पूछे ?"

बिना कुछ कहे जूफू अपने बड़े भाई जैम्स की बातें सुने जा रही थी। इतने में माँ आ जाती है और दोनों को नीचे लेकर चली जाती है।

जूफू के घर के एक तरफ रोहन और दूसरी तरफ मुनिया का घर था; थोड़ी दूर में सुरतिन काकी रहती थीं। सुरतिन काकी कभी-कभी घर आती जाती रहती थीं। जब भी आतीं माँ और दीदी से घण्टों बातें करतीं, कभी बतातीं, 'सोनवा की बिटिया को फुलवारिया (जो किसी हादसे में तीन-चार वर्ष पूर्व मर चुकी है) ने पकड़ रखा है, तो कभी कहतीं मोहनवा पर किसी ने काला जादू कर दिया है। बेचारा मरे के कगार पर है, तो कभी बता जातीं लल्लनवा को किसी ने वश में कर लिया है। जूफू भी ये सारी बातें बड़े मजे से सुनती, पर रात में ये सारी बातें उसे डराती व परेशान करती थीं।

जूफू की माँ व दादी अन्धविश्वासों में घिरी हुई थीं। पिता कार्यालय के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण घर पर बहुत कम समय व्यतीत कर पाते थे। जिससे उन्हें, गाँव-घर की बहुत कम बातें ही पता होती थीं।

एक दिन जूफू और जैकस अपनी छत पर खेल रहे थे कि जूफू ने देखा कि मोहित, मुनिया और काकी का बेटवा सुमितवा सब नीचे खेल रहे हैं, जूफू और जैम्स भी खेलने के लिये नीचे आग गए, जैसे ही खेल शुरू होने वाला था कि अचानक जैम्स ने कहा– "मेरी आँखों में कुछ पड़ गया है।" सब जैम्स की आँखे साफ करने में जुट गए, थोड़ी देर बाद जैम्स ने कहा–"मुझे कुछ भी दिखाई नही दे रहा है, बस अंधेरा ही अंधेरा दिख रहा है।" सभी ने समझा जैम्स मजाक कर रहा है, पर यह कुदरत का कड़वा सच था।

इन दिनों जूफू के पिता शहर से बाहर कार्यालय के काम से गए थे तो जैम्स की दवा की जिम्मेदारी माँ और दादी पर आयी, तब जूफू 12-13 वर्ष की थी। सुरतिन काकी और दादी के कहने पर माँ ने डॉक्टर को दिखाने की बजाय जैम्स को ओझा एवं अनेक सिद्ध-बाबाओं के पास ले गयी। एक सिद्ध बाबा ने बताया कि जैम्स के शरीर पर मुनिया की माँ का साया है।

"वही जिसने कुछ महीने पहले ही रोहन के भाई सुमितवा को वश में कर लिया था। पूजा-पाठ न हो पाने के कारण बेचारे सुमितवा की बड़ी दर्दनाक मौत हुई।" सुरतिन काकी ने माँ से बताया।

यह सुन माँ का दिल बहुत घबरा गया, माँ ने जूफू को करुणा भरी नज़रों से देखते हुए कहा– "सुन जूफू तू कुछ दिनों के अपने मामा के यहाँ चली जा।" जूफू ने प्रत्युत्तर दिया "मैं कहीं नहीं जाने वाली।" माँ ने लगभग रोते हुए स्वर में कहा "पर यहाँ रहेगी तो कहीं तुझ पर भी उस डायन का साया न पड़ जाए, राँड खुद तो जामुन खाने की लालच में दुनिया से चली गई और अब मेरे बच्चों को पता नहीं क्यों चूस रही है।"

"भूत-प्रेत जैसा कुछ नहीं होता माँ भइया को अच्छे डॉक्टर को दिखाना चाहिए" जूफू ने निवेदन के स्वर में माँ से कहा।

"तू अभी बहुत छोटी है रे, तू ये सब अभी नही समझेगी।" गले से जूफू को लिपटा कर माँ बोली।

बर्रैया बाबा बड़े सिद्ध, चमत्कारी और पहुँचे हुए बाबा हैं। सुरतिन काकी ने दूसरे दिन माँ को बताया।" जूफू तू घर पर ही रहना, दरवाज़ा अन्दर से बन्द रखना, जब तक हम लोग वापस न आ जाए दरवाजा मत खोलना। माँ ने जूफू को समझाते हुए कहा। फिर माँ-दादी, सुरतिन काकी के साथ जैम्स को बर्रैया बाबा के यहाँ ले गयी। बर्रैया बाबा की कुटी जूफू के गाँव से लगभग चालीस-पचास किमी० दूर थी, सो माँ लोगों को घर लौटने में देर हो गई।

माँ के घर वापस आकर कहा, "जूफू तूने भी कुछ खाया न होगा चल मैं रोटियाँ बना देती हूँ तू सबको खाना देकर खुद भी खा ले।" जूफू ने सबको खाना दे खुद भी खा लिया। जूफू को अभी नींद भी आयी थी कि उसने माँ-दादी को बातें करते सुना- "इक्कीस दिन की हवन सामग्री और 'एक्यावन सौ रूपये" कहाँ से देंगे बर्रैया बाबा को और न दिए तो जैम्स ठीक कैसे होगा ? मेरा जी तो बहुत घबरा रहा है।" माँ ने चिन्ता और घबराहट से दादी से कहा।

"हाँ बड़कवा का भी तो नही बता सकित है, काहे की एक तो उ परदेस में है दूसर ई सब सुनके बड़कवा बहुत परेशान हो जाई, और जब बर्रैया बाबा कहिन हैं कि इक्कीस दिन की पूजा, चढ़ावा के बाद जैम्सवा ठीक हो जाई तो काहे इतना ज्यादा चिन्ता करत हौ दुलहिन।" दादी ने माँ को समझाते हुए कहा। "हाँ शिवनिया का भाई भी वहीं से ठीक हुआ था।" माँ ने खुद को दिलासा दी।

जूफू के मन ने इन बातों का विरोध किया पर सही, गलत का फैसला न कर पाने एवं भाई के ठीक होने के मोह में कारण जूफू के मन में उठ रहे उस विरोध पर अन्धविश्वास ने अपना आधिपत्य जमा लिया और वह इस अन्धविश्वास का विरोध न कर सकी।

झाड़-फूँक के साथ-साथ जैम्स की दवाएँ भी गाँव के झब्बू डॉक्टर

से कराई जा रही थी। बर्रैया बाबा ने पूजा-पाठ को आज इक्कीसवाँ दिन होने वाला था उनके कहे अनुसार आज जैम्स के आँखों की रोशनी वापस आने वाली थी पर जल्द ही बाईस वाँ दिन भी आ गया और जैम्स के आँखों की रोशनी रंच मात्र भी नहीं लौटी।

'बाबा! जैम्स को अभी तक तनिक भी नही दिखाई पड़ रहा है।" माँ ने विवशता एवं करुणा के स्वर में बर्रैया से पूछा।

बाबा ने माँ को बताया "सबसे भयानक वाली चुड़ैल ने जकड़ रखा है तेरे बेटे को, जिससे छुड़ाने की मैंने कोशिश की पर इस पूजा से वो नहीं गई, बड़ी पूजा करनी होगी इसके लिए, वह बहुत दुष्ट आत्मा है।"

यह सब सुनकर माँ बहुत ज्यादा डर गई, उनक आँखों के आँसू मानो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थें। यह सब देख-सुनकर जूफू विचलित हो उठती पर उसकी बात कौन सुनता ? सुरतिन काकी भी रोज़ आकर माँ-दादी को चुड़ैलों की एक-दो बारदात बता जाती जिससे वे दोनों और भी ज्यादा डर जातीं और जूफू के हृदय का विद्रोह और अधिक धधक उठता पर माँ-दादी के आगे विवश हो वह कुछ कर नहीं पाती थी।

दो महीने बाद घर वापस आये बड़कवा ने जब जैम्स की तबीयत और घर की ऐसी विकट स्थिति के बारे में जाना तो वह स्तब्ध रह गया फिर अत्यधिक क्रोध से चिल्लाकर पूछा– "जैम्स की माँ घर में इतना सब कुछ हो गया और तुमने मुझे बताया तक नहीं।" जैम्स की माँ पति के सामने निरुत्तर खड़ी रह गयी।

जैम्स के पिता ने उसे तुरन्त शहर के बड़े-बड़े डॉक्टर को दिखाया, रिपोर्ट आदि से पता चला इसे 'ब्रेनट्यूमर' नामक बीमारी है। डॉक्टरों ने बताया किसी नस के दब जाने की वजह से जैम्स के आँखों की रोशनी चली गई है। ऑपरेशन से यह ठीक हो जाएगा। जैम्स की 'आँखों' और 'ब्रेनट्यूमर' का ऑपरेशन लखनऊ के अच्छे अस्पताल में करवाया गया। पाँच ऑपरेशन होने के बावजूद भी जब जैम्स के आँखों की रोशनी वापस नहीं आयी तो उसके माता-पिता एकदम से टूट गए डॉक्टरों का कहना था "थोड़ा और पहले दिखाया होता तो शायद यह ठीक भी हो जाता।"

शायद पहले आते तो हम कुछ कर पाते 'डॉक्टर के इन शब्दों ने जूफू के बाल मन को अन्दर तक झकझोर दिया।

जैम्स का ऑपरेशन हुए कुछ महीने हुए थे कि उसे दौरे आने शुरू हो गय। जब जैम्स को दौरा आता तो उसके हाथ-पैर, गर्दन सब ऐंठने लगते और मुँह टेढ़ा होता चला जाता शायद ऐसा किसी नस के दबने या खून का दौरा बन्द होने से होता। पर माँ-दादी और सुरतिन काकी इसे उस चुड़ैल का किया धरा ही समझती थीं। पूरे शरीर की लगातार मालिश करने पर ऐंठन कुछ देर बाद ठीक हो जाती थी। दौरा आने पर माँ और दादी मुनिया की माँ, चुड़ैल, डायन आदि को गालियाँ देने शुरू कर देती जिससे जूफू अन्दर से एकदम से चिढ़ जाती थी। वह सोचती इतना कुछ हो जाने पर भी क्या माँ और दादी को समझ नही आया ?

जैम्स की हालत दिन ब दिन बद से बदतर होती चली जा रही थी। जो दौरे जैम्स को कभी-कभी दिन में आते थे वो रोज आने लगे।

इस दौरे के आने पर जैम्स दर्द से चीख उठता था, कराहता रहता था। धीरे-धीरे जैम्स इतना कमजोर हो गया कि वह हिल भी नहीं पाता था। बिस्तर पर पड़े-पड़े जैम्स के पीठ में घाव हो गया था। जैम्स को स्वयं बहुत ग्लानि होने लगी थी। खाने के लिए, पीने के लिए, उठने-बैठने के लिए, लेटने व नित्य-दैनिक क्रियाओं के लिए उसे किसी न किसी की सहायता माँगनी पड़ती। कभी-कभी इन सबसे ऊब कर वह ईश्वर से कहता 'हे भगवान अब और नहीं सहा जाता अब उठा ले।' उसकी कराह में इतना दर्द था कि उसे देख कठोर-से-कठोर हृदय वाले मनुष्य के भी मुख से 'आह' निकल जाती थी। जैम्स की हालत इतनी बुरी हो गई थी कि किसी से देखा नहीं जा रहा था।

रोज़ की तरह एक दिन जैम्स को फिर दौरा आया इस बार दौरे का रूप और भी भयानक था। आस-पड़ोस के लोग भी इकट्ठे हो गए थे। जैम्स के मुख से आवाज़ निकली "माँ मैं भूत नहीं।" यह सुनते ही माँ का हृदय विदीर्ण हो गया, और वह बस रोये ही जा रही थीं और इन शब्दों के साथ ही जैम्स की जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी।

उधर जैम्स की अन्तिम यात्रा पर ले जाया जा रहा था। इधर जूफू स्तब्ध सी खड़ी हुई यह सोच रही थी कि इन अन्धविश्वासों में न पड़कर यदि पहले से ही जैम्स को अच्छे डॉक्टर को दिखाया जाता तो शायद आज जैम्स हमारे बीच होता "जूफू ने अपनी आँखों के आँसू पोंछे और उसी क्षण यह निश्चय किया कि वो समाज में फैली अन्धविश्वास जैसी बुराईयों के खिलाफ लड़ेगी। किसी और को भूत-प्रेत, जादू-टोने जैसी किसी भी आपदा के भ्रम में पड़कर ऐसी दर्दनाक मौत नही मरने देगी। जूफू के हृदय में एकत्रित इतने महीनों की वेदना ने अपना बाँध तोड़ दिया और जूफू ज़ोर से चिल्लाई–

"लड़ूँगी इस अन्धविश्वास से"

सब विस्मित हो जूफू की तरफ देखने लगे।

पानी की सेहत

डॉ. अनुराधा सिंह
रसायन विज्ञान, असिस्टेंट प्रोफेसर

''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै, मोती, मानुष, चून।।

रहीमदास जी ने हमारे जीवन में जल की महत्ता की कितनी सुंदर व्याख्या की है। ब्रह्माण्ड के नव ग्रहों में से एक हमारे नीले ग्रह पृथ्वी पर पानी की उपस्थिति के कारण ही जीवन संभव है। इसी क्रम में मनुष्य चाँद से लेकर मंगल ग्रह तक पानी की सतह तलाशने में लगा है, ताकि वहाँ जीवन की संभावनाएं तलाशी जा सकें। पानी जीवन का आधार है और हमारे मानव शरीर को दो-तिहाई हिस्सा भी है, इसलिए पानी की गुणवत्ता और मात्रा दोनों का सही होना अत्यंत आवश्यक है।

आमतौर पर लोगों का मानना है कि अगर पानी देखने में सही है और पीने में मीठा है तो उसकी गुणवत्ता ठीक है इसलिए आजकल आर ओ (RO) और प्लास्टिक बोतल बंद पानी का प्रचलन बढ़ गया है। अब सवाल यह उठता है कि आर ओ तथा बंद बोतल पानी का सेवन कितना सुरक्षित है।

रिवर्स आस्मोसिस (RO) का आविष्कार सन 1950 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय अमेरिका में हुआ था। इस शोध का उद्देश्य था समुद्री गंदे खारे पानी को साफ करके पीने योग्य बनाना। स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने की दृष्टि से इसे एक अच्छा आविष्कार माना जा सकता है लेकिन रिसर्च के द्वारा वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि इस प्रौद्योगिकी का अनियंत्रित उपयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने चेतावनी जारी करते हुए बताया है कि आर ओ पानी का लगातार सेवन कुछ प्रकरणों में मौत का कारण भी बन सकता है।

दरअसल, पानी का स्वाद उसमें घुले हुए खनिज लवणों की उपस्थिति के कारण होता है और घुलित खनिज लवणों की मात्रा को टीडीएस (TDS) से मापा जाता है। TDS अर्थात् Total dissolved Solid पानी में घुले, मैग्नीशियम, क्लोराइड, आयरन आदि तत्व आते है, और कुछ मात्रा में कार्बनिक पदार्थ भी उपस्थित होते है। सामान्यतः पानी का अधिकतम TDS 400-500 मिलीग्राम प्रति लीटर होना चाहिए। 100 मिलीग्राम प्रति लीटर से कम TDS का पानी स्वाद में अत्यन्त मीठा होता है परंतु यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। 1000 मिलीग्राम प्रति लीटर से अधिक TDS वाले पानी के लिए आर ओ की जरूरत होती है।

सामान्यतः आर ओ के द्वारा पानी शुद्ध करने की प्रक्रिया में इसे अर्द्ध पारगम्य झिल्ली के द्वारा उच्च दाब पर छाना जाता है जिससे इसका TDS कम हो जाता है। आश्चर्य की बात है कि मीठे स्वाद के चक्कर में 99% लोग 100 मिलीग्राम प्रति लीटर से कम TDS का पानी पी रहें है।

अब RO के पानी से होने वाले हानिकारक प्रभावों पर प्रकाश डालते हैं–

- आर ओ तकनीक के उपयोग से होने वाला सबसे बड़ा नुकसान यह है कि एक लीटर आर ओ पानी के उत्पादन में लगभग सात लीटर पानी का नुकसान होता है।
- हालाँकि एक सर्वे में पाया गया है कि बोतल बंद पानी तैयार करने में और घरों में RO फिल्टर के बाद निकले पानी में आर्सेनिक और फ्लोराइड जैसे हानिकारक तत्वों का उच्च सांद्रण होता है जिसे भूजल के जलवाही स्तर में वापस डालने के अलावा दूसरा रास्ता नहीं है
- अब हम थोड़ा आर्थिक पक्ष का विश्लेषण करते हैं तब यह निष्कर्ष निकलता है कि बिना बिजली के आर ओ मशीन चलती नहीं है जिसेस बिजली का बिल का खर्च तथा लगभग साल-डेढ़ साल में फिल्टर बदलने का अतिरिक्त खर्च सम्मिलित है।
- अब हम स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करें तो हृदय रोग से लेकर बालों के झड़ने की लंबी सूची है क्योंकि आर ओ फिल्टर प्लास्टिक का बना होता है तेज दाब से पानी को फिल्टर से छाना जाता है जिससे पानी में कुछ मात्रा में प्लास्टिक भी घुल जाता है जो कैंसर होने की संभावना को बढ़ा देता है। आरओ का पानी अम्लीय प्रकृति का होता है क्योंकि इसमें घुलित लवणों की मात्रा कम हो जाती है, जहाँ एक ओर पानी के द्वारा शरीर में पहुँचने वाले कैल्शियम और मैग्नीशियम की मात्रा कम हो जाती है वहीं दूसरी ओर पानी की अम्लीयता के कारण हड्डियों में से कैल्शियम का क्षरण होने लगता है परिणामस्वरूप 90% लोगों की हड्डियां कमजोर हो जाती हैं और ऑसटियोपोरेसिस की समस्या बढ़ रही है।

अब बोतल बंद पानी की बात करते हैं मजेदार बात यह है कि लोगों में बोतल बंद पानी को मिनरल वॉटर समझने की भ्रांति है कुछ समय पूर्व इस विषय पर कानूनी विवाद भी उत्पन्न हो गया था हालाँकि अब बोतल बंद पानी को मिनरल वाटर लिखने की जगह पैकेज्ड बोतल लिखना शुरू कर दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि तथा कथित मिनरल वॉटर सिर्फ आर ओ का पानी है जिसे आकर्षक पैकिंग और विज्ञापनों के द्वारा प्रचारित करके बेचा जा रहा है और प्रायः लोग सफर में या घर से बाहर बेफ्रिक होकर इसका सेवन करते है।

एक शोध के अनुसार सन् 2016 में कोलकाता के सारे बोतल बंद ब्रांडेड पानी और सामान्य नल के पानी का तुलनात्मक अध्ययन किया गया तो यह पाया गया कि नल का पानी ज्यादा अच्छा है।

आर ओ पानी का उपयोग समझदारी नहीं है क्योंकि जहाँ स्वाद का फायदा है वहाँ प्लास्टिक से नुकसान ज्यादा है इसलिए यह आवश्यक है कि आम लोगों को आर ओ तकनीक की कमियाँ और उसकी सीमाएँ पता होनी चाहिए और पानी की गुणवत्ता के आधार पर इस तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए। इसलिए घर में आर ओ लगवाने से पहले पानी की गुणवत्ता अर्थात् TDS का आकलन जरूर करना चाहिए। शुद्ध पानी का सर्वोत्तम विकल्प है– मिट्टी का घड़ा। घड़े में उपस्थित सूक्ष्म छिद्र से कई हानिकारक तत्त्व स्वतः ही बाहर आ जाते हैं और मटके का शीतल जल फ्रिज के ठंडे पानी से बहुत ही अच्छा होता है। इसके साथ-साथ हम जब भी घर से बाहर निकलें अपने साथ धातु की बनी बोतल (प्रायः स्टील या तांबा) में पानी लेकर चलें। हमारे ये छोटे-छोटे प्रयास हमारी वंसुधरा को प्लास्टिक प्रदूषण के प्रकोप से निश्चय ही बचाने में सहायक होंगे।

कविता

उठो अगर तुम जिंदा हो!

श्रद्धा प्रजापति, बी.एड. (प्रथम वर्ष)

मेरा देश था सोने की चिड़िया
अब दौर भ्रष्ट बेईमानों के
यहाँ मरता है, किसान कर्जे में
नेता रहता है, मजे में।
कानून है भ्रष्टाचार की झोली में
यहाँ बिकती है, बेटी बोली में,
गर्भ में मरती बेटी है
खराब ही अपनी बेटी पर नीयत है
लोगों में इतनी हैवानियत है।
यहाँ भूख लगी है, पैसों की
बिक्री होती है लाशों की
यहाँ खुले आम होते घोटाले हैं
सफेद कपड़े हैं पर धंधे काले हैं।
जिनकी नजर में देश एक खिलौना है
सबक अब उनको सिखाना है
उठो अगर तुम जिंदा हो
लड़ो अगर तुम जिंदा हो
श्रवण युग लाना है
भारत माँ का कर्ज चुकाना है।

कविताएँ

हाल मेरे प्यारे हिन्दुस्तान का

श्रद्धा प्रजापति, बी.एड. (प्रथम वर्ष)

ये जाति-पाँत सब क्या है
ये मैं-मैं, तू-तू क्या है
सब इक कुर्सी का झगड़ा है
कुर्सी को सबने पकड़ा है
बैठेगा वही इस कुर्सी पर
जो पैसे से तगड़ा है
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर प्यारे
मजहब के नाम पर ही है फसाद सारे
कहीं रंग गोरा काला
कहीं धर्म ऊँचा-नीचा
एक रब के सारे बंदे क्या पंडित क्या मौलाना
मजहब का फिर झगड़ा सबकी जुबान पर है
ये हाल मेरे प्यारे हिन्दुस्तान का है।

विश्वास

हर्षिता श्रीवास्तव, बी.एड. (प्रथम वर्ष)

तपती दोपहरी के तले न बूँद भर पानी मिले
मन के किसी कोने में पर मधुमास होना चाहिए
अपने पे कुछ, औरों पे कुछ विश्वास होना चाहिए।
माना, विश्वास कठिन है करना, आज जमाना ऐसा है
सम्बन्धों में है स्वार्थ छिपा, सबकी आँखों में पैसा है
नयन मूँद कर सबको सच्चा मानें यह कब कहती हूँ
पर मित्र कोई तो हृदय के पास होना चाहिए
अपने पे कुछ औरों पे कुछ विश्वा होना चाहिए।
नित-नित आती बाधाओं की, कहीं मुझ पर जीत न हो जाए
सब शत्रु न बन जायें कहीं, नियति विपरीत न हो जाए
सब कुछ ही अपने वश में है, ऐसा मैं कब कहती हूँ
पर मन में इन दुविधाओं का विनाश होना चाहिए
अपने पे कुछ, औरों पे कुछ विश्वास होना चाहिए।
एकान्त हताशा का हरती संकल्पों की एक आहट है
जग में भी मनुजता बाकी है, संकल्पों में गरमाहट है
सच्चाई को झुठला दें, ऐसा भी भला कब कहती हूँ
पर मनुज को अपनी शक्ति का, आभास होना चाहिए
अपने पे कुछ, औरों पे कुछ विश्वास होना चाहिए।

बचपन

नीतू सिंह, बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

सफर मासूमियत भरा, बचपन कहते हैं जिसे सभी
उसके बिना दुनिया में, नहीं कुछ नहीं
है सच्चाई का जो दर्पण
है फूलों का जो मधुबन
है वीणा की जिसमें सरगम
जो भुला दे हमारे हर गम
वो बात-बात में हँसना
वो पल-पल में रोना
है कोमल इतना ये
जैसे हो एक बिलौना
जिधर देखो दिखता है ये वहीं
इसके बिना दुनिया में नहीं कुछ नहीं।।
फिर दौर आया अगला, खूबसूरत सा एक सपना
इसकी भी कहानी कुछ इस तरह है यारों
कि सुनो ये कहानी और मुस्कुरा लो
तो सुनो ये कहानी जो इस तरह शुरू है
कि कहानी का अन्त कहीं भी नहीं है।
सावन की फुहारों में हँसना, हँसाना
वो बात-बात में रूठना और फिर मान जाना
वो चुपके-चुपके मिलना और दिल में डर का होना
ये दिल में डर का होना, बचपन की ही अदा है
इस दौर का भी आरम्भ, बचपन से ही हुआ है
जिसको जवानी हैं कहते, वो बचपन की ही दुआ है।
जवानी के खत्म होते, फिर लौट आया बचपन
है रूप इसका बदला, फिर याद आये बचपन
नन्हे-नन्हे हाथों को समझना सहारा
फिर मासूम चेहरों में, ढेरो प्यार पाना
सुनकर तोतली बोली, हँसाना मुस्कुराना
और देखकर हरकतों को, बचपन का लौट आना
हाँ, ये बुढ़ापा है, जो बचपन सा ही भला है
और इस बुढ़ापे में भी, बचपन की हर दिल की दुआ है।
हाँ ये ही वो बचपन, जो उम्र भर चलेगा
और बचपन से चला इसाँ बचपन से जा मिलेगा।।

विश्वविद्यालय का अन्तिम दिन

वसुधा वर्मा, बी.एड. (प्रथम वर्ष)

जब चलना शुरू किया था रास्ते अनजान थे
कभी गिरते कभी सँभलते अपने अरमान थे
मंजिलें चाहे जो रहीं पर राहें अपनी थी
छोड़ गये कितने मुसाफिर पर आहें अपनी थी
इन राहों पर मिला कुछ तो बहुत कुछ छूटा
अपना एक यकीन था जो कभी न टूटा
थक कर कई बार राहों पर अकेले बैठे हैं
जाते हुए मुसाफिर के आखिरी कदम देखे हैं।
बड़ी अजीब सी उलझन रही जिन्दगी
मिलते बिछड़ते कदमों से चलती रही जिन्दगी
कई सबक जिन्दगी के सिखला दिये राहों ने
कई चेहरों से मिलवा दिये राहों ने,
उनमें से कोई अपना तो कई बेगाना लगा
कुछ लगे सच तो कोई अफसाना लगा
कुछ ने आँसू तो कई ने मुस्कान दिये
कुछ ने निराशा तो कई ने अरमान दिये
इन राहों पर यूँ ही चलने की चाहत है
कई प्यारे साथी मिले इसकी राहत है
मोड़ों ने भले ही राहें बदल दीं
कदमों की दिशा और निगाहें बदल दी
पर मंजिलों की चाह में राहें ना भूलाना
भूले अगर राह तो, राही भूल न जाना
एक-दूसरे से किये वादे हमेशा निभाना
बसेरा चाहे जहाँ हो साथी को दिल में बसाना।।

सत्य के समक्ष

हर्षिता श्रीवास्तव, बी.एड. (प्रथम वर्ष)

शब्द नहीं मिलते अब करने को बातें
बात भी बनाने का साहस न रहा।
जब भी किसी से कुछ कहने को लब हिले
सफर का साथ ही साथ न रहा।
टूटकर फिर एक हम न हो सके
पहल करने का भी साहस न रहा।
जब कभी भी करीब से गुजरे
वक्त का रुख साथ मेरे न रहा।
गलत न थी राह, बस था भ्रम
भ्रम को मिटाने का साहस न रहा।
मित्र थे, तब न थे ये फासले
फासले मिटाने को सत्य साथ न रहा।
वक्त भी तभी सख्त हो गया
अश्कों को संजोने का साहस न रहा।
सफर वही था, हम फिर गुजरे करीब से
सत्य स्वीकारने को लबों पर स्वर न रहा।
नियति को हम कभी समझ न सके
सत्य के समक्ष जाने का साहस न रहा।
जब उठेंगे पर्दे भ्रम के, शायद हो ज्ञान

एन सी सी 2018-19

सर्वश्रेष्ठ एनसी सी कैडेट अवार्ड (इलाहाबाद ग्रुप)

कैडेट रोशनी
बी.काम. III

प्रथम पुरस्कार 4500/-
एन सी सी निदेशालय
उ०प्र० लखनऊ

कैडेट आकांक्षा तिवारी
बी.ए. III

प्रथम पुरस्कार 3500/-
एन सी सी निदेशालय
उ०प्र० लखनऊ

प्रदेश स्तर पर चयन
इंटीग्रेटेड ग्रुप कॉम्पटीशन

कैडेट सृष्टि गुप्ता
बी.ए. II

कैडेट अंजली
बी.ए. II

अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां

रिपोर्ट

अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियां

एक आदर्श शैक्षणिक संस्थान वह है जो अपने विद्यार्थियों को सशक्त बनाने में सफल हो। ये सशक्तीकरण का प्रयास मात्र पुस्तकीय ज्ञान उपलब्ध कराने से सम्भव नहीं हो सकता अपितु इसके लिये कतिपय अन्य स्त्रोतों की भी आवश्यकता होती है। एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय परिवार इस कार्य हेतु संकल्पबद्ध है। छात्राओं को आगामी जीवन में आने वाली चुनौतियों से संघर्ष कर उन पर विजय प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रेरित करते हुए महाविद्यालय उन्हें विभिन्न राज्यस्तरीय, विश्वविद्यालय स्तरीय एवं अन्तर्ममहाविद्यालयीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के अवसर उपलब्ध कराता है। सत्र 2018–19 में महाविद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न अकादमिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया एवं कीर्ति प्राप्त की। जिसका विवरण इस प्रकार से है–

"YOUTH PARLIAMENT FESTIVAL 2019" में जिला स्तरीय प्रतियोगिता में महाविद्यालय की बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्राओं, **अमनजोत कौर, अंजली मिश्रा** व **अन्तिमा श्रीवास्तव** का चयन हुआ।

श्री रामचन्द्र मिशन एवं यूनाइटेड नेशन्स इन्फॉरमेशन सेन्टर ऑफ द हर्टफूलनेस एजुकेशन ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित अखिल भारतीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में महाविद्यालय के चारों संकायों की छात्राओं ने प्रतिभागिता की। जिसमें महाविद्यालय की **प्रीतिमा शर्मा** (बी.कॉम प्रथम वर्ष), **सिमरन पहवा** (बी.कॉम. प्रथम वर्ष), **निशिता पाठक** (बी.एस.सी तृतीय वर्ष), **नव्या पाठक** (एम.एस.सी IIIrd सेमेस्टर), **जोया नाज़** (एम.ए. IIIrd सेमेस्टर), व **मोबानी विश्वास** (बी.एड.) द्वारा प्रस्तुत किये गये निबन्धों की सराहना की गयी एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।

यूनाइटेड इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट द्वारा अवशिष्ट पदार्थों से कलाकृतियों के निर्माण संम्बन्धी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था–'वेस्ट टू वाउ' (Waste to wow)। इस प्रतियोगिता में बी. कॉम प्रथम वर्ष की छात्रा **साक्षी तिवारी** को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (NASI) द्वारा प्रो. मेघानन्द साहा की 125 वीं जयन्तीं पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के रसायनशास्त्र विभाग की एम.एस.सी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित **'राजभाषा पखवाड़ा'** के समापन समारोह में विभिन्न महाविद्यालय की टीमों द्वारा कथानायक मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों का नाट्य मंचन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत 'बूढ़ी काकी' के नाट्य मंचन की विशेष सराहना की गयी। इस नाट्य कक्षा में बूढ़ी काकी की भूमिका में **अपर्णा यादव**, रूपा की भूमिका में **सुमैय्या** और लाडली की भूमिका में **अंजली कुशवाहा** रहीं। राजभाषा अनुभाग की ओर से भाग लेने वाली छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए गए।

93.5 FM द्वारा प्रतिभा की खोज के तहत 'द वाइस' के मंच से छात्राओं को अपना हुनर दिखाने का मौका मिला। महाविद्यालय की 5 छात्राओं का इलाहाबाद स्तर पर चयन हुआ।

सी.एम.पी. डिग्री कालेज द्वारा 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणात्मक चुनौतियाँ एवं समस्याएं' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें बी.एस.सी तृतीय वर्ष की 2 छात्राओं ने भाग लिया।

इलाहाबाद डिगी कालेज में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा **पल्लवी सिंह** को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

ईश्वर सरन डिग्री कालेज द्वारा आयोजित श्लोक पाठ प्रतियोगिता एवं समूहगीत प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया। श्लोक पाठ प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा **तनु सिंह** को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा संस्कृत समूहगीत में बी.ए. द्वितीय वर्ष की **नीतू, नैना मिश्रा, प्रतिभा श्रीवास्तव** एवं **तनु सिंह** को सम्मिलित रूप से तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

जगत तारन डिग्री कालेज द्वारा प्रपत्र प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 2 छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें बी.ए. प्रथम वर्ष की **शाम्भवी द्विवेदी** को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इलाहाबाद डिग्री कॉलेज के संस्कृत विभाग ने श्लोकपाठ एवं समूहगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज के दर्शन विभाग द्वारा आयोजित मानव जीवन में नैतिकता का महत्व विषय पर अन्तर्महाविद्यालय में विभाग की दो छात्राओं ने प्रतिभागिता की। जिसमें **अलीजा अंसारी** को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2 अक्टूबर को गांधी जयन्ती के अवसर पर हमीदिया डिग्री कॉलेज में चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन हुआ जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

31 अक्टूबर 2018 सरदार पटेल जयन्ती के अवसर पर "राष्ट्रीय एकता दिवस पर इलाहाबाद संग्रहालय में पोस्टर प्रतियोगिता में छः छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (NCZCC) में 25 नवम्बर से एक दिसम्बर 2018 तक 'पेन्ट माई वाल' कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 4 छात्राओं ने प्रतिभागिता कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया ।

18 नवम्बर को राज्य ललित कला अकादमी उ0 प्र0 एवं

इलाहाबाद संग्रहालय के तत्वावधान में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता 'कला के रंग कुम्भ के संग' में 13 छात्राओं ने प्रतिभागिता की और दो छात्राओं की पेंटिग द्वितीय चरण के लिए चयनित हुई।

3 से 5 दिसम्बर को तीन द्विवसीय राज्य स्तरीय 'Paint my City' के अर्न्तगत प्रतियोगिता हुई जिसमें 10 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

1 दिसम्बर 2018 को 'नवोत्कर्ष'राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय, अर्न्तमहाविद्यालयीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय की छात्रा **अर्चना पाण्डेय** को प्रथम पुरस्कार एवं **रिशिका वर्मा** को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। साथ ही कोलाज प्रतियोगिता में **अंजली सरोज** ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

7 से 9 जनवरी को कला ग्राम 'कुम्भ–2019' के अर्न्तगत पंडाल डेकोरेशन में 4 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

23 और 24 जनवरी UPTEC कम्यूटर कन्सल्टेन्सी लिमिटेड द्वारा आयोजित अल्पना प्रतियोगिता में **शिप्रा शुक्ला** और **मुनज्जां खान** को प्रथम पुरस्कार, **शेख तैय्यबा** और **अदिति साहू** को द्वितीय पुरस्कार तथा **मोहिनी केसरवानी** और **सबा परवीन** ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

17 फरवरी राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता, राज्य ललित कला अकादमी उ0 प्र0 कुम्भ मेला–19 पर दो छात्राओं ने द्वितीय चरण में प्रतिभागिता की।

28 नवम्बर को राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिता में छात्राओं द्वारा लोकगीत गायन प्रतियोगिता में भाग लिया गया।

इलाहाबाद डिग्री कालेज द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय लोक गीत गायन प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में **प्रियवदु शुक्ला** को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ काव्य रचना में **गुलजहाँ तासकीन** को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

आर्य कन्या महिला महाविद्यालय में कहानी लेखन प्रतियोगिता में महाविद्यालय की **जमीरा अन्सारी** को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

30 जनवरी 2019 को के.पी.ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित चल वैजन्ती प्रतियोगिता के अन्तर्गत वाद–विवाद प्रतियोगिता में **सुमइया अंसारी** ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

22 फरवरी 2019 को राज्य स्तरीय क्विज़ कॉम्पटीशन का आयोजन किया गया जिसमें राज्य के वाराणसी, जौनपुर, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, भदोही आदि जनपदों की कुल 15 टीमों ने प्रतिभाग किया। प्रथम स्थान के. पी. ट्रेनिंग कॉलेज इलाहाबाद, द्वितीय स्थान एम.डी.पी.जी. कॉलेज प्रतापगढ़ तथा तृतीय स्थान हरिशचन्द्र पी.जी. कॉलेज वाराणसी ने प्राप्त किया।

10 मार्च 2019 को आर्य कन्या डिग्री कॉलेज मे आयोजित लिंग भेद विषय पर आधारित संगोष्ठी में प्रतिभाग किया एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा MOOC's पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता प्रो. धनञ्जय यादव, अध्यक्ष शिक्षा शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने की। इसी सन्दर्भ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की शिक्षा शास्त्र विभाग की डॉ. आकांक्षा सिंह ने MOOC's पर अपना व्याख्यान दिया।

महात्मा गांधी की 150 वीं वर्षगांठ के अवसर पर यू.जी.सी के निर्देश पर विभाग की छात्राओं नें **''मोहन दास से गांधी''** नाटक का मंचन किया जिसे यू.जी.सी. की वेबसाइट पर अपलोड किया गया तथा परास्नातक की छात्राओं ने गांधी के व्यक्तित्व एवं कतृत्व पर अपने विचार रखे। CPE के पर्यावरण कार्यक्रम में भी छात्राओं ने सक्रिय भागीदारी की। जनवरी माह में स्नातक व परास्नातक की छात्राओं के लिये सम्मिलित रूप से सेमिनार क्लास चलाया गया तथा **'पीयर टीचिंग'** के तहत परास्नातक की छात्राओं ने स्नातक की छात्राओं की कक्षा में शिक्षण कार्यक्रम द्वारा शैक्षिक प्रक्रिया को रोचक बनाने में सहयोग किया। साथ ही साथ अन्तर्विषयात्मक बहुशिक्षण गतिविधि के अन्तर्गत दर्शनशास्त्र एव बी.एड. की शिक्षिकाओं ने शिक्षाशास्त्र की छात्राओं की कक्षाएं ली। विभाग द्वारा **'ऑन द**

स्पॉट स्पीच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा छात्राओं ने तत्काल दिये गये विषयों पर अपने विचार रखे। इस गतिविधि से छात्राओं में आत्मविश्वास के बीज प्रस्फुरित हुये तथा उन्हें एक अच्छे वक्ता के गुण सिखाये गये। सत्र के अन्त में एक वर्कशाप आयोजित की गयी, जिसमें पी.जी. की छात्राओं को प्रैक्टिकल कार्य और मौखिक परीक्षा की तैयारी के सन्दर्भ में बारीकियां सिखायी गयी। महाविद्यालय के समाजिक विज्ञान परिषद द्वारा आयोजित कार्यशाला में विभाग की छात्राओं ने **'विद्यादास एम.ए. पास'** नाटक का मंचन किया।

समाजशास्त्र विभाग द्वारा **"Modernity is responsible for the diminution of Indian culture"** विषय पर अन्तर्महाविद्यालयीय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज की समाजशास्त्र विभाग की कन्वीनर डॉ. इरम फारिद उस्मानी, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज की समाजशास्त्र विभाग की कन्वीनर डॉ. सन्ध्या पाण्डेय तथा सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज की समाजशास्त्र विभाग की कन्वीनर डॉ. विजय लक्ष्मी सक्सेना ने निर्णायक की भूमिका का निर्वहन किया।

इस प्रतियोगिता के परिणाम कुछ इस प्रकार है–

प्रथम	रिंशु मिश्रा	जगत तारन महिला महाविद्यालय
द्वितीय	एनब अकील	हमीदिया महिला महाविद्यालय
तृतीय	श्रुति द्विवेदी	आर्य कन्या महिला महाविद्यालय
तृतीय	सुकृति तिवारी	सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज
तृतीय	दीपा सरीन	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

विभाग की परास्नातक कर रही छात्राओं को CPE Phase II के अर्न्तगत शैक्षिक भ्रमण हेतु गंगा आर्ट गैलरी ले जाया गया। जहाँ छात्राओं ने गंगा नदी की महत्ता पर और भी गहनता से चर्चा की एवं गंगा की स्वच्छता हेतु संकल्प बद्ध होकर उसे स्वच्छ बनाने की शपथ ली। इसके अतिरिक्त को विभाग द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता रैली निकाली गयी। काल्विन व डफरिन अस्पताल के निकटवर्ती इलाकों में स्वास्थ्य सम्बन्धी लघु नाटिका का मंचन किया गया। तथा छात्राओं ने अस्पताल के मरीजों व डाक्टरों से मुलाकात की।

दर्शनशास्त्र विभाग में अन्तर इकाई प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रपत्र लेखन का विषय था– भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा, पर्यावरण संरक्षण के लिए नैतिक चेतना आवश्यक, समसामयिक संदर्भ में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता, लोकतंत्र एवं धर्मनिरपेक्षता स्वतंत्रता और अराजकता। प्रपत्र का मूल्यांकन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग, में कार्यरत प्रोफेसर उमाकान्त यादव ने किया।

प्रतियोगिता का परिणाम का विवरण इस प्रकार है–

नाम	कक्षा	संस्था का नाम	स्थान
कृति तिवारी	बी.ए. III	राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय	प्रथम
वैशाली गुप्ता	बी.एस–सी. III	एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	द्वितीय
दिव्या पाण्डेय	बी.ए. III	एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	तृतीय
मेहज़बी बानो	बी.ए. II	एस.एस.खन्ना महिला महाविद्यालय	तृतीय
सचिन कुमार मिश्रा	बी.एड III	के.पी. ट्रेनिंग कालेज	तृतीय
अमरेन्द्र कुमार	बी.ए. I	इलाहाबाद विश्वविद्यालय	सांत्वना
अनुष्का केसरवानी	बी.ए. I	जगत तारन महिला महाविद्यालय	सांत्वना
आशीष कुमार सिंह	बी.एड I	के.पी. ट्रेनिंग कालेज	सांत्वना
आयुष गुप्ता	बी.ए. I	ईश्वर सरन डिग्री कालेज	सांत्वना
जान्हवी सिंह	बी.ए. I	जगत तारन महिला महाविद्यालय	सांत्वना
सत्य प्रकाश विश्वकर्मा	बी.एड I	के.पी. ट्रेनिंग कालेज	सांत्वना

ऑक्सफोर्ड के स्वर्णयुग की कड़ी प्रो. श्याम किशोर सेठ के दर्शन का स्वरूप तथा प्रासंगिकता विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अन्तर इकाई प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता में विचित्र प्रतिभागियों हेतु पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन कर प्रो. श्याम किशोर सेठ के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान कराया गया। दर्शन शास्त्र विभाग में विभाग की पुरा छात्रा समीमा ज़ेहरा जो वर्तमान में क्वींस लैंड विश्वविद्यालय विस्बन, आस्ट्रेलिया के स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल एन्ड फिलोसफिकल इम्क्वायरी में अध्यापन कर रही है, का व्यक्तित्व विकास में दर्शन शास्त्र कितना उपयोगी और गीता रहस्य (बाल गंगाधर तिलक) पर आधरित व्याख्यान आयोजित किया गया।

मध्यकालीन इतिहास विभाग द्वारा ''राष्ट्रीय आन्दोलन में महात्मा गांधी का योगदान'' पर प्रो. रंजना कक्कड़, पूर्व अध्यक्ष, मध्यकालीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय का विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रो. कक्कड़ ने गांधी के सत्याग्रह से 1947 तक की सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों पर चर्चा की। इसी के साथ 'Economic thought of Mahatma Gandhi' विषय पर अन्तर्महाविद्यालयीय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में डॉ. सत्येन्द्र नाथ, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, सी.एम.पी. डिग्री कालेज, डॉ. रचना सिंह, एसोशिएट प्रोफेसर, ईश्वर सरन डिग्री कालेज, डॉ. हरीश श्रीनिवास इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज निर्णायक रहे। इस वाद–विवाद प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. योगेश्वर तिवारी की उपस्थिति रही।

उर्दू विभाग द्वारा ''उर्दू में रोज़गार के अवसर'' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया था, जिसमें प्रोफेसर असलम जमशेदपूरी, उर्दू विभाग, विभागाध्यक्ष चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ ने अपना व्याख्यान दिया। इसके अतिरिक्त मातृ भाषा दिवस के अवसर पर **फिरदौस (बी.ए.II), बुशरा (बी.ए.II) व गुलफशा (बी.ए.I)** ने उर्दू नज़्मे पढ़ी और उर्दू भाषा के महत्व व उपादेयता पर अपने विचार रखे।

अंग्रेजी विभाग द्वारा "Poetry and Belief in Literary Criticism" पर प्रो. एल.आर. शर्मा, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद का विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रो. शर्मा ने छात्राओं को सम्बोधित करने के साथ–साथ उनकी जिज्ञासा को शान्त करते हुए उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दिये। महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने हेतु "Gender Discrimination – Issues and Challenges" विषय पर कार्यशाला का आयोजन कराया गया। कार्यशाला में प्रो. सुनीता परमार, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रो. सर्वजीत मुखर्जी अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने छात्राओं को बनी बनायी सामाजिक परिधि से हट कर नयी एवं तार्किक राह पर चलने के लिये प्रेरित किया।

संस्कृत विभाग द्वारा सुनियोजित व्याख्यान माला के अन्तर्गत 'आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण का आचार्य विश्वनाथ के अनुसार विवेचन' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। गोष्ठी के प्रमुख वक्ता प्रो0 पद्माकर मिश्र, पूर्वप्राध्यापक इ0सी0सी0 रहे। संस्कृत विभाग द्वारा 'भारतीय संस्कृति की महान धरोहर संस्कृत भाषा' विषय पर अन्तर्महाविद्यालयीय संस्कृत निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया। परिणाम इस प्रकार है–

क्र.सं.	नाम	कक्षा	स्थान	महाविद्यालय / विश्वविद्यालय
1	प्रिया सिंह	बी.ए.II	प्रथम	यूइंग क्रिश्चियन कालेज
2	भवदन्त द्विवेदी	बी.ए.II	प्रथम	इलाहाबाद डिग्री कालेज
3	बबिता यादव	बी.ए.III	प्रथम	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय
4	शिवानी त्रिपाठी	बी.एड.I	प्रथम	एस0 एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय
5	रचिता भारती	बी.ए.III	द्वितीय	एस0 एस0 खन्ना महिलामहाविद्यालय
6	नैना मिश्रा	बी.ए.II	द्वितीय	एस0 एस0 खन्ना महिलामहाविद्यालय
7	श्वेता सिंह	बी.ए.II	द्वितीय	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय
8	स्मृता पाण्डेय	बी.ए.III	द्वितीय	आर्य कन्या परास्नातक महिला महाविद्यालय
9	कीर्ति तिवारी	बी.ए.III	द्वितीय	राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय
10	अनामिका मिश्रा	बी.ए.I	द्वितीय	यूइंग क्रिश्चियन कालेज
11	नैन्सी शुक्ला	बी.ए.III	द्वितीय	जगत तारन महिला महाविद्यालय
12	समता चौरसिया	बी.ए.I	द्वितीय	ईश्वर सरन डिग्री कालेज
13	सौम्या यादव	एम.ए.I	द्वितीय	चौधरी महादेव प्रसाद डिग्री कालेज
14	रोशनी शुक्ला	बी.ए.I	तृतीय	इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
15	सौरभी मिश्रा	बी.ए.II	तृतीय	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय
16	विभा पटेल	बी.ए.III	तृतीय	आर्य कन्या परास्नातक महिला महाविद्यालय
17	मणि सिंह	बी.ए.I	तृतीय	ईश्वर सरन डिग्री कालेज
18	ब्रह्मादीन वर्मा	बी.ए.II	तृतीय	ईश्वर सरन डिग्री कालेज
19	अंकित मणि तिवारी	बी.ए.I	तृतीय	इलाहाबाद डिग्री कालेज
20	मनोज कुमार	बी.ए.I	तृतीय	इलाहाबाद डिग्री कालेज
21	काजल त्रिपाठी	बी.ए.I	तृतीय	जगत तारन महिला महाविद्यालय
22	अमिता यादव	बी.ए.I	तृतीय	जगत तारन महिला महाविद्यालय
23	अभय प्रताप सिंह	बी.ए.I	तृतीय	यूइंग क्रिश्चियन कालेज
24	आरती पाल	बी.ए.I	तृतीय	एस0 एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय
25	आरती साहू	बी.ए.III	तृतीय	एस0 एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय

संस्कृत विभाग द्वारा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित यम–नचिकेता संवाद एवं कादम्बरी कथा को यू–ट्युब के माध्यम से लैपटॉप पर छात्राओं को दिखाया गया।

हिन्दी विभाग द्वारा "कार्यालयीय हिन्दी सम्भावनाएं और चुनौतियां" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सूर्यनारायण, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय रहे। 'कार्यालयीय हिन्दी' के हवाले से हिन्दी की विकास यात्रा को रेखाकिंत करते हुए डॉ. सूर्यनारायण ने कहा कि हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग हमारा नैतिक दायित्व होने के साथ हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। इस अवसर पर सुश्री मीनू रानी दुबे ने भी कार्यालयीय हिन्दी के सम्बन्ध में अपने विचार रखे। कार्यालय के साथियों की उपस्थिति ने आयोजन को एक नया रंग दिया। इसके अलावा कुर्तुल–एन–हैदर की कहानी 'आवारागर्द' पर प्रो. अली अहमद फ़ातमी, पूर्व विभागाध्यक्ष उर्दू विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज का विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

उर्दू कहानी पर विस्तार से चर्चा करते हुए प्रो. फातमी ने कहानी 'आवारागर्द' का न केवल पाठ किया अपितु कहानी के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को इतिहास, समाज और संस्कृति के सन्दर्भ में विश्लेषित भी किया।

प्राचीन इतिहास विभाग में विभागीय विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर सी डी पाण्डे विशिष्ट वक्ता रहे। उन्होंने **"प्राचीन भारत में धर्म की अवधारणा और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता "** विषय पर समग्र रूप से प्रकाश डाला। साहित्यिक सन्दर्भों में धर्म की परिभाषा, बहुदेववाद, एकदेववाद, एकत्ववाद, ब्रह्माण्डीय व्यवस्था, यज्ञीय व्यवस्था, और नैतिक व्यवस्था को व्याख्यायित कर कहा कि' संस्कृति से मानव की पहचान होती है। इसके उपरान्त मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में गीत, गजल, कविताएँ प्रस्तुत की गई। बी.ए. द्वितीय वर्ष की बुशरा, फिरदौस एवं बी.ए. प्रथम वर्ष की गुलफशॉ ने उर्दू में नज्म पढ़ी तथा बी ए. तृतीय वर्ष की छात्रा कु संध्या त्रिपाठी ने 'मैं नारी हूँ" विषयक कविता का पाठ किया। साथ ही अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को भी प्रोफेसर पाण्डेय ने पुरस्कार प्रदान किया।

अर्थशास्त्र विभाग में एक निबन्ध लेखन एवं प्रपत्र प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें स्नातक की छात्राओं ने **'भारतीय अर्थव्यवस्था में नीति आयोग की भूमिका'** विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किये।

'बजट विश्लेषण' पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी के प्रमुख वक्ताओं के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. मनमोहन कृष्ण, प्रो. असीम कुमार मुखर्जी एवं पटना विश्वविद्यालय के डॉ. संजय कुमार दास ने सभा की गरिमा को बढ़ाया। इन सभी वक्ताओं ने सरकार द्वारा निर्धारित बजट योजनाओं पर गहन चिन्तन के उपरान्त उनके महत्व एवं उनमें स्थित खामियों पर गम्भीर चर्चा की। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा भारत में वस्तु एवं सेवा कर (GST in India) जैसे समसामायिक मुद्दों पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित कराया गया। इस विषय पर प्रो. राजीव कुमार भट्ट ने अपना विद्वत् पूर्ण उद्बोधन दिया। उन्होंने GST के कार्यान्वयन के साथ कई मुद्दों को विस्तार से बताया और विभिन्न हितधारकों के बीच संघर्ष को दूर करने के उपायों का सुझाव दिये।

जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा "Anti Aging intervntions: Relevance to humans" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान के प्रमुख वक्ता के रूप में प्रो. एस.आई. रिजवी, जीव रसायन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपने वक्तव्य छात्राओं के समक्ष रखे। प्रो. रिजवी ने एजिंग, सिद्धान्त एवं तकनीकों को बहुत ही रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत किया तथा उन्होंने प्राकृतिक विस्तार में हस्तक्षेप के सन्दर्भ में अपने विचार रखे। अन्तर्विषयी शिक्षक गतिविधि के अन्तर्गत रसायन विभाग की वरिष्ठ शिक्षिका डॉ. अर्चना ज्योति ने जन्तु विज्ञान की बी.एस.सी. I की छात्राओं को 'कार्बोहाइड्रेट्स' पर व्याख्यान दिया।

हमेशा से महाविद्यालय छात्राओं को तकनीकी अनुकूलन का पक्षधर रहा है। इसी क्रम में **रसायन विज्ञान** विभाग की छात्राओं के लिये ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण एवं पालिमर विषय पर पॉवर प्वांइट प्रेजेन्टेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष की 16 छात्राओं ने भाग लिया तथा उन्होंने प्रपत्र प्रस्तुत किये।

इसी के साथ ही विभाग में 'Chemistry' in the Service of mankind' पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन कर छात्राओं को उनकी लेखन शैली व प्रतिभा के अनुसार वरियता प्रदान करते हुये प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान दिया गया। विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी "Sustainable Development in India : Issue and Challenge" में एम.एस.सी प्रथम व तृतीय सेमेस्टर की दस छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कुम्भ 2019 के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में योगदान करने हेतु एवं मनोरंजन के माध्यम से श्रद्धालुओं को प्रकृति संरक्षण का संदेश देते हुये रसायन विभाग की छात्राओं ने परमार्थ निकेतन में 'Save Ganga- Save Earth' का संदेश देते हुये मूक अभिनय प्रस्तुत किया। मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में एम.एस.सी की छात्राओं ने विभिन्न भाषाओं में कविता पाठ किया तथा बी.एस.सी व एम.एस.सी. की छात्राओं के मध्य भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। फरवरी माह में पुनः पर्यावरण जागरूकता के तहत पावर प्वांइट प्रेजेन्टेशन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर 'PMR Spectroscopy' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। गोष्ठी के प्रमुख वक्ता के रूप में प्रो. जगदम्बा सिंह, पूर्व अध्यक्ष, रसायन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपने वक्तव्य छात्राओं के समक्ष रखे तथा छात्राओं की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। इसी सन्दर्भ में विभाग की एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर की दस छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर चित्रकारी प्रस्तुत की।

वनस्पति विज्ञान विभाग में 'Magnifient Plant Group' विषय पर एक पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन कराया गया। जिसमें एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर की छात्राओं ने अत्यन्त उत्साह के साथ प्रतिभाग करते हुये जिम्नोस्पर्मस की जाति व प्रजातियों पर आधारित पोस्टर प्रदर्शित किये। बी.एस.सी., एम.एस.सी. Ist व एम.एस.सी.2nd वर्ष की छात्राओं के लिये 'Scope and Objective of Plant Bueeding' विषय पर सेमिनार आयोजित किया। जिसमें छात्राओं ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये। 'Botany in Daily Life' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा **कनीज ज़ेहरा** ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में एक 'Method and frehall in experiments of plant physiology' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं को विभिन्न प्रकार के पौधों की महत्वपूर्ण गतिविधियों से अवगत कराया गया। "Microbial World: Microbes are beneficial or harmful?" पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में बी.एस.सी. एवं एम.एस.सी की छात्राओं ने प्रतिभागिता की। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर "Moleculor Markers and Clene Cloning" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में एम.एस.सी. IV सेमेस्टर की छात्राओं ने प्रपत्र प्रस्तुत कर अपने विचार रखे।

वाणिज्य संकाय द्वारा 'डिजिटल मार्केटिंग' पर एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित कराया गया। इस व्याख्यान माला में श्री राहुल पाण्डेय एवं श्री शहबाज हुसैन, डाइरेक्टर, नेशनल डिजिटल मार्केटिंग प्रशिक्षण संस्थान प्रमुख वक्ता रहे। उन्होंने डिजिटल मार्केटिंग के विविध आयामों पर चर्चा की। वाणिज्य संकाय द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रो. जी.सी. अग्रवाल पूर्व निर्देशक MONIRBA की स्मृति में अन्तर्महाविद्यालयीय लेखन एवं क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी 9वीं प्रो. जी.सी. अग्रवाल स्मृति अन्तर्महाविद्यालयी प्रपत्र लेखन व क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. असीम मुखर्जी, निर्देशक MONIRBA व अध्यक्ष वाणिज्य विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय रहे। निर्णायक मण्डल की भूमिका में डॉ. शेफाली नन्दन व डॉ. हिमांशु श्रीवास्तव, वाणिज्य विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। इस प्रतियोगिता में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के

सभी संघटक महाविद्यालयों ने प्रतिभाग किया जिसमें कुल 67 प्रपत्र प्राप्त किये गये। इस प्रतियोगिता में जगत तारन महिला महाविद्यालय की रश्मि तिवारी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। द्वितीय स्थान ईश्वर सरन डिग्री कॉलेज की साक्षी शुक्ला रहीं तथा सी.एम.पी. डिग्री कालेज की इकरा फातिमा तृतीय स्थान पर रहीं। वहीं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में सदनलाल सॉवलदास महिला महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर इलाहाबाद डिग्री कॉलेज की इकाई रही तथा तृतीय पुरस्कार सी.एम.पी. डिग्री कालेज को प्राप्त हुआ।

डॉ. मधु टण्डन बी.एड. संकाय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. धनन्जय यादव के द्वारा व्याख्यान दिया गया। गांधी विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के शोध छात्रों ने भी प्रतिभाग किया। 23 अगस्त 2018 से 14 सितम्बर 2018 तक तृतीय समेस्टर की छात्राध्यापिकाओं द्वारा विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास किया गया। बी.एड. तृतीय एवं प्रथम सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं द्वारा हिन्दी भाषा राष्ट्र सम्मान विषय पर रैली निकाली गयी। महिला सशक्तीकरण विषय पर सामूहिक परिचर्चा हुई। राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के विभिन्न जनपदों के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया यथा–भदोही, वाराणसी, गोरखपुर, मिर्जापुर, जौनपुर इत्यादि। छात्राध्यापिकाओं ने कुम्भ मेला क्षेत्र में स्वच्छ भारत अभियान के तहत सहभागिता की। शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें छात्राध्यापिकाओं ने विविध विषयों से सम्बन्धित मॉडल एवं चार्ट का निर्माण किया।

छात्राओं के मन मस्तिष्क में उत्पन्न शैक्षणिक तनाव को कम करने एवं उनके बहुमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय द्वारा समय–समय पर सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इस क्रम में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, नवोत्कर्ष, दामोदरश्री, राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह, राष्ट्रीय संगोष्ठी, गणतंत्र दिवस एवं महाविद्यालय के विभिन्न क्रार्यक्रमों में ईश वन्दना, गणेश वन्दना इत्यादि की प्रस्तुति की जाती रही हैं। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय की छात्राओं ने उक्त कार्यक्रमों में ईश वन्दना प्रस्तुत की। महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव 'उदिता' में वन्दन नृत्य, कव्वाली तथा कवि सम्मेलन (शब्दरंग) का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति भारती सप्रू, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश–भक्ति से समन्वित एवं प्रेरणाप्रद समूह गीत छात्राओं ने प्रस्तुत किया। गणतंत्र दिवस पर महाविद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्र भक्ति पर आधारित भांगड़ा नृत्यप्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बिग्रेडियर बृजेश पाण्डेय, ग्रुप कमान्डर, एन सी सी ग्रुप हेड क्वार्टर, प्रयागराज ने अपने उद्बोधन में महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति द्वारा तैयार कराये गये सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रशंसा कर छात्राओं का उत्साहवर्द्धन किया।

महाकुम्भ के दौरान परमार्थ निकेतन शिविर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा पतित पावनी गंगा की महिमा व उसके संरक्षण से सम्बन्धित भूपेन हजारिका विरचित गीत 'विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार' पर मनमोहक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती सुमित्रा महाजन, लोकसभा अध्यक्ष ने सराहना करते हुए छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

भारतस्य भारती-संस्कृतम्

अनुराधा द्विवेदी, बी.ए. प्रथम वर्ष

यावद् भारतवर्ष स्याद यावद् विन्ध्यहिमाचलौ।

यावद् गङ्ग च गोदां च तावदेव हि संस्कृतम् ।।

संस्कृत नास्ति भाषामात्रम् । संस्कृतं तु भारतमेव। संस्कृतं विना भारतं न स्यात् । भारतस्य परमा-प्रतिष्ठा संस्कृत भाषैव। भाषा संस्कृतेर्वाहिका भवन्ति। संस्कृतं संस्कृता भाषा संस्कृति भाषा च। ऋग्वेद मन्त्रिताऽस्ति सैव भाषा-

आ भारती भारतीभिः सजोषा।

उत्पत्तिविकासोक्रमयोः क्रियमाणे विहङ्गमवीक्षणे संस्कृत भाषा भारतस्य लोकभाषा जनभाषेति सिद्यति। अधुनाऽपि संस्कृतमेव समग्रभारतस्य भारती वर्तते। आकश्मीर प्रदेशात्। कन्याकुमारी पर्यन्तं कटकतोऽटकपर्यन्तं भूक्षेत्रं संस्कृत भाषायाः क्षेत्रम्। उक्तं हि–

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

वर्ष तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः।

अस्माकं देशे हि बहुभाषाभाषी। अत्र सन्ति प्रायः पञ्चशताधिकभाषाः। संस्कृतभाषा हिसर्वासां भारतीयभाषाणां जननीव पञ्चसहस्त्राब्दाधिककालं यावत् तां सर्वाः पोषयति।

नभसि यत्स्थानं प्रथमनक्षत्रस्य मालायां प्रथमगणेश्च तदेव स्थानं संस्कृतस्य। सर्वाः भाषाः संस्कृतेनैव परिपुष्टाः समृद्धाश्च सन्ति। तासां वर्णोच्चारणं पदसंघटना वाक्य-विन्यास संरचना च सर्वाः संस्कृतमूला एव। भारतीय चिन्तन ज्ञान-विज्ञानदर्शन-शास्त्राणामर्थ सन्निवेशपरकः प्रवृत्तिमूलकः वर्तते। एवञ्च सर्वासु भारतीयभाषासु प्रायसो मूलभाव शब्दाश्च अशीतिप्रतिशत काः संस्कृतादेव गृहीताः सन्ति।

संस्कृतं भारतीय सभ्यता संस्कृतयोर्मूर्तमिव रूपम् समस्तभाषाणञ्च समृद्धिमूला। एतदर्थं-भारतीय संविधानस्याष्टम्यामनुसुच्याम् अन्याभिः नत्श्भारतीय-भाषाभिः सह संस्कृतस्योल्लेखो वर्तते। हिन्दी भाषायाः समृद्धयर्थं संस्कृतभाषात् शब्दाः संग्राह्य अतः संविधाने भारतसंघभाषा हिन्दी सवर्धनार्थमादेशो वर्तते।

ऐक्यविधायिनी एषा संस्कृतभाषा सर्वासु भारतीयासु भाषासु विविधैतिहासिक परिस्थितिना परिज्ञानेन सहः धर्म-दर्शन-संस्कृतिलोक्लीति प्रभृति विद्यानां वाहिका सती समग्रे-भारते विलसति।

अन्ताराष्ट्रिय नोबेल पुरस्कार प्राप्तायां गीताञ्जल्यां बङ्कविना रवीन्द्रनाथ ठक्कुरेण भारतस्य जनवैशिष्यं काव्याशैल्यां निरूपितम् –

हेथाय आर्य, हेथा अनार्य

हेथाय द्रविड; चीन।

शक-हूण दल पाठान-मोगल

एक देहे होलो लीन।।

अर्थात

अत्रैव सन्ति आर्याः

इहैव अनार्याः

अत्रैव द्रविणाश्चीनाश्च

शक-हुण-तुरूष्क-मुगल-पठानाः

सर्वे सन्निवष्यः

एकस्मिन्नैव कसये।

एवञ्च संस्कृतेतरभाषभिः तत्रद्भाषाभाषिभिश्च संस्कृतस्य सहावस्थानां सश्लिष्टरूपेण भावमूलंक संगमनमेव। इदं तु संस्कृतस्य भाषागौरवम् ।

जयतु भारतम्

जयतु भारतस्यभारती संस्कृतम्।

प्रहेलिकाः

सुशीला देवी, बी.ए. तृतीय वर्ष

न तस्यादिः न तस्यान्तः मध्येयःतस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद् ।।

नयन

एकचक्षुर्ण काकोऽयं बिलमिच्छन न पन्नगः।
क्षीयते वर्धते चैव न समुद्रो न चन्द्रमा।।

सूई-धागा

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्ध योगी
जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः।।

नारियल

वने वसति को विरो योऽस्थित-मांस-विवर्जितः।
असिवत् कुरूते कार्य, कार्य कृत्वा वनं गतः।।

कुम्हार का धागा

दन्तै हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः।
गुणस्फूर्ति समृद्धोऽपि परपादेन गच्छति।।

जूता

प्रकाशः शीतलः यस्य यः कलाभिः च वर्धते।
तापं हरति सर्वेषां चकोरस्य प्रियः सः कः।।

चन्द्रमा

कुर्मशशक कथा

आरती साहू, बी.ए. तृतीय वर्ष

भवतः बुद्धिः यदि तीव्रा नास्ति तर्हि का चिन्ता। इमां कथां पठतु, प्रेरणां च गृह्णातु, यदि भवान् स्वकार्य निरन्तरं करोतु तर्हि अवश्यमेव भवान् सफलतां प्राप्स्यति। भवान् पिपीलिकया, कच्छपेन च इमां प्रेरणां गृह्णातु।

चम्पारण्ये सरोवरे एकः कूर्मः निवसति स्म। तस्य मित्रता शशकेन अभवत् । तौ सर्वदा एकत्र स्थित्वा नाना कथाः कथयतः। परस्परम् आलापेन तयोः मित्रता दृढा जाता।

एकदा तौ विचारं कृतवन्तौ यत् वनस्य उपान्ते गन्तव्यम् । "आवयोः मध्ये कः तत्र प्रथमं गच्छेत् ?" तत्र प्रथमं गमिष्याति। "शशकः अहसत् ..." त्वं तु शनैः चलसि कथं तत्र प्रथमं गामिष्यसि ? अहमेव तत्र प्रथमं प्राप्स्यामि।" कूर्म नियमस्य पालकः सदा परिश्रमी चासीत् । सः शनैः शनैः किन्तु निरन्तरं चलितः। शशकः दीर्घकालं मार्गे विरम्य पुनः तीव्रया गत्या अचलत् । यदा सः वनस्य उपान्तं प्राप्तवान तदा अपश्यत् यत् कूर्मः पूर्वमेव तत्र अवस्थितः अस्ति। शशकः लज्जितः जातः। सत्यमुक्तम् ...

"निरन्तर श्रमेण असम्भवत् अपि कार्य सम्भवति क्व कूर्मस्य मन्थरगतिः, क्व शशकस्य तीव्रगतिः किन्तु कूर्मः निरन्तरं कार्येण विजयी अभवत् ।

चित्रग्रीव-हिरण्य कथा

तनु सिंह, बी.ए. द्वितीय वर्ष

अस्ति गोदावरीतीरे विशालः शाल्मलीतरूः। तत्र नानादिग्देशादागत्य रात्रौ पक्षिणो निवसन्ति। अथ कदाचिदवसन्नायां रात्रौ लघुपतनकमामा वायसः प्रबुद्धः आयान्तं व्याधम् अपश्यत् । सः तदनुसरक्रमेण व्याकुलश्चलितः। अथ तेन व्याधेन तण्डुलकणान्विकीर्य जालं विस्तीर्णम् स च प्रशन्नो भूत्वा स्थितः। तस्मिन्नेव काले चित्रग्रीवनामा कपोतराजः सपरिवारो वियति विसर्पन् तान् तण्डुलकणान् अवलोकायामास। ततः कपोतराजः तण्डुलकणलुब्धान् कपोतान् प्रति आह– "कुतोऽत्र निर्जने वने तण्डुलकणानां संभवः ? तन्निरूप्यतां तावत् । भ्रदमिदं न पश्यामि।" तद्वचनं श्रुत्वा कश्चित्कपोतः सदर्पमाह-आः। किमेवमुच्यते ? वृद्धानां वचनं ग्राह्यम् आपत्काले ह्युपस्थिते। सर्वत्रैवं विचारे तु भोजनेऽप्यप्रवर्तनम।।" एतत् श्रुत्वा सर्वे कपोतास्तत्र उपविष्टाः अनन्तरं सर्वे जालेन बद्धाः बभूवुः। ततो यस्य वचनात् तत्रावलम्बिताः, तं सर्वे तिरस्कुर्वन्ति। तस्य तिरस्कारं श्रुत्वा चित्रग्रीव उवाच–"नायमस्य दोषः। विपत्काले विस्मय एव कापुरूषलक्षणम् ।

तदत्र धैर्यम् अवलम्ब्य प्रतीकारश्चिन्त्यताम् । इदानीमप्येवं क्रियताम्। सर्वैः एकचित्तीभूय जालमादाय उड्डीयताम् ।" इति विचिन्त्य पक्षिणः सर्वे जालम् आदाय उत्पतिताः। अनन्तरं स व्याधः सुदूरात् जालापहारकान् तानवलोक्य पश्चाद् धावन् अचिन्तयत् - संहतास्तु हरन्तीम मम जालं विहङ्गमाः। यदा तु विवदिष्यन्ते वशमेष्यन्ति मे तदा।" ततस्तेषु चक्षुर्विषयातिक्रान्तेषु पक्षिषु स व्याधो निवृत्तः। अथ लुब्धकं निवृत्तं दृष्टवा कपोता उचुः– "किमिदानीं कर्तुमुचितम् ? चित्रग्रीव उवाच– "अस्माकं मित्र हिरण्यको नाम मूषकराजो गण्डकीतरे चित्रवने निवसति। सोऽस्माकं पाशान् छेत्स्यति।" इत्यलोच्य सर्वे हिरण्यकविवरसमीपं गताः। ततो हिरण्यकः तद्वचनं प्रत्यभिज्ञाय ससंभ्रमं बहिर्निःसत्य अब्रवीत– "आः, पुण्यवानस्मि। प्रियसुहन्मे चित्रग्रीवः समायातः।" पाशबद्धान् चैतान् दृष्ट्वा सविस्मयः उवाच–"सखे। किमेतत् ?" चित्रग्रीवोऽवदत् – "सखे! अस्माकं लोभस्य फलमेतत् ।" एतच्छ्रुत्वा हिरण्यकः चित्रग्रीवस्य बन्धनं छेतुं सत्वरम् उपसर्पति। तेन सर्वेषां बन्धनानि छिन्नानि। ततो सर्वान् संपूज्य आह– "सखे चित्रग्रीव! सर्वथा अत्र जालबन्धनविधौ दोषमाशङ्क्य आत्मन्यवज्ञा न कर्तव्या।" इति प्रबोध्या आतिथ्यं कृत्वा चित्रगीवः तेन संप्रेषितो यथेष्टदेशान् सपरिवारो ययौ।

मूर्खः भृत्यः

पूजा ओझा, बी.ए. प्रथम वर्ष

कस्मिंश्चित् नगरे एकः धनिकः वसति स्म। तस्य एकः आज्ञाकारी परम् मूर्खः भृत्यः आसीत् । धनिकः तम् यथा आदिशति स्म सः तथैव करोति स्म् परम बुद्धि प्रयोग कदापि न करोति स्म। एकदा धनिकः तम् लवणम् आनेतुम् आदिशत् । सः आपणात् लवणं जीर्णवस्त्रे बद्ध्वा आनयत् । मार्गे जीर्णवस्त्रात् सर्वमपि लवणं भुमौ अपपत् । ततः क्रोधेन कोऽपि लवणम् अपि जीर्णे वस्त्रे आनयति ? भविष्ये वस्तूनि मञ्जूषायाम् एव आनय।" अत्रान्तरे धनिकस्य पुत्रः "बिडाल शावकम् आनय" इति भृत्यम् आदिशति। भृत्यः तं शावकं मञ्जूषायां निक्षिप्य दृढवस्त्रेण बद्ध्वा आनयति। श्वासावरोधेण शावकः मृत्युं विन्दति। एतत् दृष्ट्वा धनिकः भृत्यं कथयति– "भो मूढ किं न जानासि यत् पशून् दोरकेण बद्ध्वा एव आनयेत् ?" ततः धनिकस्य भार्या "दुग्धम् आनय" इति तस्मै कथयति। सः आपणं गत्वा पात्रे दुग्धं नीत्वा पात्रं दोरकेण बद्ध्वा च कर्षति। मार्गे पात्रं लुठति सर्वं दुग्धं च वहति। निराशः भूत्वा धनिकः वदति– "भो महापण्डित, दूरम् अपसर, कृष्णम् भवतु ते मुखम् ।"

एतत श्रुत्वा सः आज्ञापालकः भृत्यः बहिः गत्वा कज्जलेन मुखं संलिप्यं प्रत्यागच्छति तम् एवम् विलोक्य धनिकः स्वभालम् हस्तेन ताडयति कथयति च–

वरं भृत्यविहीनस्य जीवितं श्रमपूरितम् ।
मूर्खभृत्यस्य संसर्गात् सर्वं कार्यं विनश्यति।"

हास्य सुद्ध्युपारस्यम्

नेहा सिंह, बी.ए. प्रथम वर्ष

एकः बाबू होटले गत्वा-वेतर वेतर इति अवदत् ।

वेतरः (आगत्य) बाबू महोदय।

बाबू-तव होतले किं किमस्ति ? शीघ्रम् आनय क्षुधा बाधते ।

वेतरः (केषाञ्चित् वस्तूनां मूल्यं संयुज्य देयकपंत्र करोति) गृहणात् बाबू ११० रूप्याकाणां देयकपत्रं आस्ति। रूप्याकाणि यच्छत।

बाबू- अरे देयकपंत्र तू भोजनस्य पश्चात् दीयते त्वं प्रागेव यच्छसि।

वेतर- वार्ता एषा आस्ति यद् ह्यः एकः बाबू भुक्त्या एव मृतः। तस्य मयैव दत्तम् ।

अतः अहं प्रथममेव रूप्याकाणि गृह्णामि।

लघुकथा

नैना मिश्रा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

काशीः नगरे एकः महान् पण्डितः आसीत् । सः बहुषु शास्त्रेषु पारंगतः आसीत् । तस्य समीपे बहुछात्राः अध्ययनं कुर्वन्ति स्म। तस्य ख्यातिः सर्वत्र प्रसारिता आसीत् । अतः दूर-दूरतः छात्रा आगच्छन्ति स्म।

एकदा कश्चन् शिष्यः तस्य समीपम् आगतवान् । सः गुरोः नमस्कारं कृत्वा पृष्ठवान् ? भो! अहं भवतः समीपे अध्ययनं कुर्तुम् इच्छामि। अतः माम शिष्यत्वेन स्वीकरोतु। इति सः उक्तवान्। किन्तु: सर्वेषां छात्राणां बुद्धि परीक्षां कृत्वा एव तान स्वीकरोति स्म। अतः एतस्य अपि बुद्धि परीक्षां कुर्तं सः एकं प्रश्नं पृष्ठवान् । भो! वत्स! देवः कुत्र आस्ति। इति पृष्ठवान् । तदा शिष्यः उक्तवान् । भगवन् ! देवः कुत्र नास्ति। सः सर्वोत्वापी अस्ति। तदन्तरेण प्रश्नरूपेणेव गुरूः पृष्ठवान्। एतस्य उत्तरं श्रुत्वागुरूः अत्यन्तं संतुष्टः जातः। सः हर्षेण तम् आलिङ्गितवान् । तम उक्तवान् अपि। भोः वत्सः। भवान् बुद्धिमान् बालकः अस्ति। भवंतम् अहं शिष्यत्वेन निश्चयेन स्वीकरोमि। सत्यं देवः सर्वव्यापि आस्ति। इति तम् उक्तवान्, शिष्यत्वेन अंगीकृतवान् । एवं सः शिष्यः तत्रैव विद्याभ्यासं कृतवान् , गुरोः आशीर्वादं प्राप्तवान् । भगवन्तः कथाम् अर्थः ज्ञातवंतः किल।

गीतावचनामृतानि

शाम्भवी द्विवेदी, बी.ए. प्रथम वर्ष

त्वामादिदेवः पुरूषः पुराणः
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम,
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।। १ ।।
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापानार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।। २ ।।
सुखदुःखे समे कृत्वा, लाभालाभौ जयाजयौ
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवायसि।। ३ ।।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्माणि।। ४ ।।
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ।। ५।।

India Marching Towards A New Horizon

Dr. Tanushree Roy
Assistant Professor, Department of Commerce

'Getting Changed' is not only the rule of nature but also the mandatory condition for survival. From the Stone Age to digital era, world is continuously witnessing a lot of changes. If we do not match our pace with these changes we shall not be able to get benefits from these never ending innovations and inventions. Not only we will miss these benefits but even it can pose challenges to our existence also. The line of distinction between developed and developing nations lies in their ability to adapt with the changes. In the recent past, various schemes have been started in India to lead it towards a new horizon of development. Let's have a look to some of these schemes at a glance and try to understand their impact on our life.

1. Make in India– Make in India is a new policy approach taken for making India as a sustainable economy and a developed nation. Make in India is an open call for foreign investors to self up manufacturing industries in India. It is targeted towards achieving 10% growth each year for ten successive years, also increase in GDP from 16% to 25% by 2022 and creation of appropriate skill in rural as well as urban poor for inclusive growth of our country. It is primarily focused on areas such as defense, construction, electronic hardware, health and agro-industries. 'Make in India' leads to 'Make in India.' is a compaign for attracting foreign investors whereas 'Make in India' is a label that accompanies all goods that have been produced in India.

2. Digital India– With the motto of 'Power of Empower' 'Digital India' campaign was launched on 1st July 2015. The objective of this campaign is to ensure that services of government are made available to citizens electronically by improved online infrastructure and by increasing internet connectivity or by making the country digitally improved online infrastructure and by increasing internet connectivity or by making the country digitally empowered in the field of technology. Digital India consists of three core components; the development of secure and stable digital infrastructure, delivering government services digitally, and universal digital literacy. Some of the facilities introduced under Digital India are as below :

- **Digital Locker**– This facility will help citizens to digitally store their important documents like PAN card, passport, mark sheets and degree certificate, etc. Digital Locker will provide secure access to Government issued documents.
- **eSign framework**– It helps citizens to digitally sign a documents online using Aadhar authenticaion.
- **Pradhan Mantri Gramin Digital Saksharta Abhiyan**– The objective of this PMG DISHA programme is to make 6 crore people in rural areas across India digitally literate, reaching around 40% of rural households by covering one member from every eligible household.
- **eHospital**– This application provides important services such as online registration, payment of fees and appointment, online diagnostic reports, enquiring availability of blood online etc.
- **Digital Attendance**– Attendance.gov.in was

launched on 1st July 2015 to keep a record of the attendance of government employees on a real-time basis.

- **MyGov.in–** It is a platform for citizens to share inputs and ideas on matters of policy and governance.
- **UMANG (Unified Mobile Application for New-age Governance)–** It is all-in-one single, unified, secure, multi-channel, multi-platform, multi-lingual, multi-service freeware mobile app for accessing over 1,200 central and state government services such as AADHAR, PAN, Digi locker, utility bill payments, tax payment, etc. in multiple Indian languages over Android phones and devices.

3. Start-up-India– This campaign was also introduced in 2015. It is a flagship initiative of the Government of India, intended to build a strong eco-system for nurturing innovation and startups in the country that will drive sustainable economic growth and generate large scale employment opportunities. The Government through this initiative aims to empower startup to grow through innovation and design. Industry-academia partnership and incubation is one of the important pillars of this programme.

4. National Skill Development Mission– Another highly ambitious programme launched in 2015 in National Skill Development Mission. The Mission has been developed to create convergence across sectors and States in terms of skill training activities. Further, to achieve the vision of 'Skilled India', the National Skill Development Mission would not only consolidate and coordinate skilling efforts, but also expedite decision making acorss sectors to achieve skilling at scale with speed and standards.

A new ministry known as "Ministry of Skill Development and Entrepreneurship" has been formed to nurture the goal of *"Kasuhal Bharat Kushal Bharat."* For establishing a model and iconic centre of excellence for skill development, Pradhan Mantri Kaushal Kendra (PMKK) has been launched under the supervision of ministry. Government has aimed to set up at least 1 model training center at every district level to impart training in various job roles assigned as per need based assessment.

5. Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna– Launched on August 2014 by Government of India, it is a nationwide scheme to ensure financial inclusion of every individual who does not have a bank account in India. This scheme aims at providing access to financial services, namely, Banking / Saving & Deposit Accounts, Remittance, Credit, Insurance, and Pension in an affordable manner to all. Accounts can be opened with zero balance under this scheme. The account holders under this scheme can avail an overdraft facility upto Rs. 5,000. They will also get accident insurance cover of one lakh rupees and a life cover of thirty thousand rupees. The scheme allows Direct Benefit Transfer for beneficiaries of Government Scheme. As on 28.2.2018, **31.20** crore accounts have been opened under Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojana (PMJDY) with aggregate deposit balances of 75,572.09 crore rupees.

6. Ayushman Bharat-Pradhan Mantri Jan Arogya Yojana– This centrally sponsored National Health Protection Scheme has been launched in 2018 under Ayushman Bharat Mission. It is the biggest government-sponsored healthcare scheme in the world. It aims to provide healthcare facilities to over 10 crore families covering urban and rural poor. The scheme offers

in insurance cover of Rupees 5 lakh, which will cover almost 50 crore citizens. Ayushman Bharat consists of two major elements–National Health Protection Scheme and Wellness Centres. A beneficiary covered under the scheme will be allowed to take cashless benefits from any public or private empaneled hospitals across the country. Beneficiaries for the scheme are picked up from the Socio Economic Caste Census of 2011. There is no cap on the family size and age as this health cover is meant to be inclusive for all. Moreover, the scheme holds women, children, especially the girl child, and those over 60 in special regard. All public hospitals and empaneled private hospitals have been directed not to charge any extra payment for medical care from all PMJAY beneficiaries to reduce any corruption or delay in services.

7. Pradhan Mantri Aavas Yojna– "Housing for All" Mission for urban area has been implemented with effect from 17.06.2015 to provide central assistance to implementing agencies. It is an initiative by Government of India in which affordable housing will be provide to the urban poor with a target of building 20 million affordable houses by 31 March 2022. The government will provide an interest subsidy of 6.5% on housing loans availed by the beneficiaries for a period of 20 years under credit link subsidy scheme from the start of a loan.

8. Swachh Bharat Mission– To accelerate the efforts to achieve universal sanitation coverage and to put focus on sanitation, Swachh Bharat Mission was launched on 2nd October 2014. The Mission aims to achieve a Swachha Bharat by 2019, as a fitting tribute to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary. It is a nation-wide campaign for the period of 2014 to 2019 with the aim to clean up the streets, roads and infrastructure of India's cities, towns, and rural areas. The mission has two thrust: Swachh Bharat Abhiyan ("gramin" or "rural"), which operates under the Ministry of Drinking Water and Sanitation; and Swachh Bharat Abhiyan ('urban'), which operates under the Ministry of Housing and Urban Affairs. As of February 1, 2019, the Modi government claimed to have constructed 9.2 crore toilets. It declared 5.5 lakh villages and 28 of the India's 35 states and union territories had become open defecation free.

Above-mentioned schemes are just a stepping stone towards the journey of development. There are a lot of other operating schemes such as Atal Pension Yojna, Sukanya Samridhi Yojna, Amrut, Smart Cities Mission, Pradhan Mantri Ujjawal Yojna, etc. which are definitely playing an important role in shaping our future. If all these schemes are implemented successfully then obviously a new horizon of development is waiting for the future Indian generation.

One day...

Farheen Nasir, M.A., II Sem.

Sunsets are a proof that everything has an end. Its upto us how we see those end, either cry for it ended or tap yourself smile and be happy that it happened.

Because everything happened for a reason and you never know who is knocking at the door may be it is your good luck who is waiting. Just stand up and say yourself. You are fine and one day everything gone be a good for you.

एन. सी. सी.

राष्ट्रहित के लिए शैक्षिक संस्थाओं में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास तथा अनुशासन में नई ऊर्जा संचरण हेतु एन.सी. सी. का अत्यधिक महत्त्व है। एन.सी.सी. की राष्ट्रहित में उपयोगिता इसलिये है कि विद्यार्थियों में एन.सी.सी. करने के पश्चात् सैनिक बनने की प्रबल इच्छा जाग्रत होती है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु महाविद्यालय में नेशनल कैडेट कोर अर्थात सम सैन्य का अभ्यास विगत 11 वर्षों से सफलतापूर्वक हो रहा है। जिसमें कैडेट के सर्वांगीण विकास हेतु एन.सी.सी. 'बी' एवं 'सी' सर्टिफिकेट का प्रशिक्षण सुचारू रूप से दिया जाता है। जिसकी अवधि तीन वर्ष है। 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन एन.सी.सी. इलाहाबाद ग्रुप द्वारा संचालित एक प्लाटून 55 कार्यरत है। प्रशिक्षण में कैडेट के व्यक्तित्व के विकास हेतु ड्रिल हथियारों का प्रशिक्षण जिसमें .22 राइफल, एल. ,एम., जी.,एस.एल.आर., मैप रीड़िग इत्यादि का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें राष्ट्रीय एकता, लीडरशिप, अधिकारियों को मदद, नागरिक सुरक्षा, इकोलॉजी,प्राथमिक उपचार, स्वास्थ्य और स्वच्छता, समाज सेवा, साहसिक क्रिया कलाप, पैराजंपिक मानचित्र का अध्ययन, पॉश्चर ट्रेनिंग, सिग्नल्स व गृह परिचर्या इत्यादि विषयों की विस्तृत जानकारी के द्वारा अध्ययन कराया जाता है।

महाविद्यालय के लिये गर्व का विषय है कि इलाहाबाद ग्रुप में मण्डल स्तर पर सत्र 2018–19 का सर्वश्रेष्ठ एन.सी.सी. कैडेट सीनियर विंग के दोनों पुरस्कार महाविद्यालय के कैडेट ने अर्जित किये हैं। जो इस प्रकार है–

2018–19 मे सर्वश्रेष्ठ एन.सी.सी. कैडेट अवार्ड (इलाहाबाद ग्रुप)

क्र.सं.	नाम	कक्षा	सर्टिफिकेट	स्थान	पुरस्कार
1	कैडेट रोशनी	बी.कॉम तृतीय वर्ष	सी सर्टिफिकेट	प्रथम	4500/–
2	कैडेट आकांक्षा तिवारी	बी.ए. तृतीय वर्ष	सी सर्टिफिकेट	द्वितीय	3500/–

यह धनराशि एन.सी. सी. निदेशालय उ0प्र0 लखनऊ द्वारा दी गई। यह प्रतियोगिता चार चरणों में सम्पन्न हुई। जिसमें लिखित परीक्षा, ड्रिल, फायरिंग, साक्षात्कार फैजाबाद, फतेहपुर प्रतापगढ़ बांदा आदि जिलों के मध्य सम्पन्न हुई। महाविद्यालय उपलब्धि–

प्रदेश स्तर पर चयन

इंटीग्रेटेड ग्रुप काम्पटीशन

क्र.सं.	नाम	कक्षा	सर्टिफिकेट	स्थान
1	कैडेट सृष्टि गुप्ता	बी.ए. द्वितीय वर्ष	बी सर्टिफिकेट	प्रतिभागिता
2	कैडेट अंजली	बी.ए. द्वितीय वर्ष	बी सर्टिफिकेट	प्रतिभागिता

महाविद्यालय से नेशनल कैंप ट्रैकिंग दार्जलिंग के लिये 10 कैडेट चयनित हुये।

कैडेट ने **'स्वच्छता ही सेवा'** विषय पर रैली का आयोजन किया। गुरु गोविंद सिंह गोल पार्क चौराहा में कैडेट ने गोल पार्क मे सफाई कर जन जन को जागरूक कर मन वचन और कर्म से स्वच्छता पर बल दिया। 31 अक्टूबर 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के अवसर पर प्राचार्या डा. लालिमा सिंह ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

'बेटी है वरदान' महाविद्यालय से सरस्वती घाट तक इलाहाबाद ग्रुप हेड क्वार्टर एन.सी. सी. द्वारा रैली का आयोजन किया गया। जिसे फ्लैग ऑफ डायरेक्टर जनरल एन.सी.सी. मेजर जनरल अरूण कुमार सप्रा की धर्मपत्नी श्रीमती सप्रा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली का स्लोगन था बेटियां पढेंगी तभी बढेंगी, सशक्त नारी, सुशिक्षित बचपन, बेटी बचाओ बेटी पढाओ। महाविद्यालय से 55 कैडेट ने प्रतिभागता की। एन.सी.सी. कैडेट ने लोगों की बेटियों के प्रति भेदभाव रोकना उन्हें पढ़ने लिखने के प्रति जागरूक किया। ब्रिगेडियर बृजेश पाण्डेय ग्रुप कमाडंर एन.सी.सी. ग्रुप हेडक्वार्टर कर्नल सुशांत गोविल ने कैडेट का उत्साहवर्धन किया।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर बृजेश पाण्डेय (ग्रुप कमांडर) एन.सी.सी. ग्रुप हेड क्वार्टर द्वारा ध्वज शिष्टाचार के दायित्व का निर्वहन किया गया । मुख्य अतिथि ने गार्ड ऑफ ऑनर सलामी शस्त्र एवं परेड कमान की सलामी ली।

रिपोर्ट

रेंजर

रेंजरिंग प्रशिक्षण शिविर छात्राओं में चारित्रिक श्रेष्ठता, सेवा तथा समर्पण भाव को जागृत करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता हैं। इस प्रशिक्षण से छात्राएं राष्ट्र निर्माण के दायित्व बोध के प्रति जागरूक होती है और स्वस्थ शरीर के महत्व के प्रति सजग होती है।

महाविद्यालय की विशेष उपलब्धि है कि राज्यपाल भवन, लखनऊ में दिनांक 21 से 23 दिसम्बर 2018 की अवधि में आयोजित प्रदेश स्तरीय कल्चरल एक्सचेंज कार्यक्रम में महाविद्यालय की दो रेजर्स का चयन हुआ रेंजर आकांक्षा तिवारी ने महामहिम राज्यपाल रामनाईक की गाइडिंग ध्वज के साथ स्कॉट किया वही दूसरी ओर रेंजर रोशनी ने मार्च पास्ट को लीड़ किया।

सत्र 2018–19 में महाविद्यालय में रेंजर शिविर आयोजित किया गया। शिविर में प्रवेश की 17 छात्राओं तथा निपुण की 40 छात्राओं को प्रशिक्षण दिया गया। रेंजर को दो टीम रानी लक्ष्मी बाई तथा सरोजनी नायडू में विभाजित कर बी.पी. फिक्स,वी फारमेशन, ध्वजगीत, झंडागीत, तंबू गाड़ना, पुल बनाना एवं प्राथमिक शिक्षा आदि का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में नारी सशक्तिकरण, पर्यावरण की वर्तमान समस्याएं, बाल श्रम, भूमण्डलीकरण आदि विषयों पर संवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान रेंजर लीडर रेखारानी ने छात्राओं को प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के द्वारा हदय गति के बंद होने की स्थिति में CPR द्वारा हदय की फफ्फुसीय पुर्नजीवित करना, एच.आई.वी./एड्स और उसकी रोकथाम प्राथमिक चिकित्सा द्वारा, रक्त स्त्राव जलना झुलसना, सर्प दंश का उपचार तथा त्रिकोण और रोलर पट्टियों का प्रयोग इत्यादि का प्रशिक्षण दिया।

शिविर के दौरान रेजर्स ने आर्ट एण्ड क्राफ्ट की प्रदर्शनी लगाई तथा एक तीली से भोजन बनाने का प्रशिक्षण लिया। शिविर का निरीक्षण प्राचार्या प्रोफेसर लालिमा सिंह ने किया तथा छात्राओं को आशीर्वचन देकर उनका उत्साह वर्धन किया।

लीडर ट्रेनर उषा कुशवाहा एवं रेंजर लीडर डा0 रेखारानी ने रेंजर्स को प्रशिक्षण दिया। शिविर के आयोजन में डा. रूचि मालवीय, डा. शशि पाण्डेय, डा. निशि सेठ, डा. सीमा पाण्डेय ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

रिपोर्ट

स्पोर्ट्स

खेल व्यायाम का सबसे अच्छा साधन माना जाता है। भारत सरकार ने खेलकूद के क्षेत्र मे खेलों–इण्डिया स्कूल गेम्स की स्थापना की है जिससे स्कूल के खिलाडियों को विभिन्न खेलों में खेलने का अवसर प्राप्त होता है। इसका ज्वलन्त उदाहरण खिलाड़ी छात्राओं के द्वारा महाविद्यालय में देखने को मिलता है। खिलाड़ी छात्राएँ अपनी ऊर्जा से ओत प्रोत महाविद्यालय में ही नहीं अपितु अन्तर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता में ही अपना स्थान निर्धारित कर महाविद्यालय को गौरवान्वित करने में अग्रणी हैं। जिसका विवरण इस प्रकार है–

45वी महिला सीनियर कबड्डी चैम्पियनशिप 2018–19 बलिया (उत्तर प्रदेश) में प्रतिभाग करने वाली छात्राएं

क्र.स.	नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	दिनांक	स्थान	
1	शिवाक्षी कसेरा	B.A. IInd Year	कबड्डी	27.10.18	तृतीय	

अन्तर्विश्वविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता 2018–19 महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय (रोहतक) में महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया – **7.11.18 से 10.11.18 तक**

क्र.स.	नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	स्थान	
1	गुलअफ्शा फातिमा	B.A. IInd Year	कबड्डी	सहभागिता	
2	अनुपमा पाल	B.A. IInd Year	कबड्डी	सहभागिता	
3	शिवाक्षी कसेरा	B.A. IInd Year	कबड्डी	सहभागिता	
4	पूजा कुशवाहा	B.A. Ist Year	कबड्डी	सहभागिता	
5	खुशी सिंह	B.A. Ist Year	कबड्डी	सहभागिता	

अन्तर्विश्वविद्यालयीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता 2018–19 चित्तकारा विश्वविद्यालय (हिमाचल प्रदेश) में प्रतिभाग करने वाली छात्राएं

क्र.स.	नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	दिनांक	स्थान	
1	अंकित प्रिया	B.A. IIrd Year	वॉलीबॉल	26.11.2018 से 29.11.2018	सहभागिता	

अन्तर्विश्वविद्यालयीय खो–खो प्रतियोगिता 2018–19 डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद में महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया

क्र.स.	नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	दिनांक	स्थान	
1	प्रिया कुमारी	B.A. Ist Year	खो–खो	29.11.2018 से 3.12.2018	सहभागिता	
2	मंजु	B.A. Ist Year	खो–खो	29.11.2018 से 3.12.2018	सहभागिता	
3	रितिका सोनकर	B.A. Ist Year	खो–खो	29.11.2018 से 3.12.2018	सहभागिता	

ईश्वर सरन अन्तर्महाविद्यालयीय ऐथलेटिक्स प्रतियोगिता 2019 में एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय को ओवर ऑल चैम्पियन का खिताब मिला। 27 से 28 जनवरी 2019 को महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

क्र.स.	नाम	कक्षा	प्रतियोगिता	स्थान	
1	गुलअफ्शा फातिमा	B.A. IIrd Year	गोला फेंक चक्का फेंक	प्रथम स्थान प्रथम स्थान	
2	रूबीना बानो	B.A. IIrd Year	ऊँची कूद 200 मी0 रेस	प्रथम स्थान तृतीय स्थान	

3	नजिया फातिमा	B.A.II[nd] Year	गोला फेंक	द्वितीय स्थान	
4	लक्ष्मी साहू	B.A.I[st] Year	ऊँची कूद	द्वितीय स्थान	
5	रूबीना बेगम	B.A.I[st] Year	200 मी0 रेस 100 मी0 रेस	तृतीय स्थान द्वितीय स्थान	
6	अदिती त्रिपाठी	M.Sc.I[st] Year	ऊँची कूद लम्बी कूद	तृतीय स्थान तृतीय स्थान	

महाविद्यालय में आयोजित वार्षिक क्रीड़ा सत्र 2018–19 मे चारों हाउस की छात्रों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में जैसे बैण्डमिण्टन, बास्केटबॉल, वालीबॉल, खो खो, एथलेटिक्स, रस्साकसी, हॉकी, चेस, कैरम एवं योग इत्यादि खेलों में प्रतिभागिता की महाविद्यालय मे खेल वातावरण निर्मित करने तथा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए सत्र भर खेल संम्बधी विभिन्न गतिविधियां संचालित की गयी जो इस प्रकार है:–

खेल वार्षिक उत्सव 2019 में ओवर ऑल चैम्पियन (बेस्ट प्लेयर) का खिताब रूबीना बानो बी.ए. तृतीय वर्ष को मिला।

1. 110 मी0 हर्डल रेस में प्रथम स्थान
2. ऊँची कूद में प्रथम स्थान
3. 100 मी0 रेस में प्रथम स्थान

Report

COLLEGE WITH POTENTIAL FOR EXCELLENCE PHASE II

It is a matter of great pleasure for the college that it has been selected by UGC under 'College with Potential for Excellence' Phase II. The amount of grant received under this scheme has been utilized for lab upgradation, library automation, computers, software, extension activities, research projects and enrichment of learning environment as well as educational development. For the fulfillment of this purpose, many programmes and events were organized under CPE Phase II which can be broadly classified into three groups.

[i] Personality Development—A summary of programmes undertaken under the banner of Personality Development is presented below:

- **Three months certificate course**
  A Three months certificate course on Personality Development was organised to promote strategic growth, leadership quality, team building spirit and communication skills among students. The programme focussed on stress management, time management, interpersonal skills and group dynamics among the participants. The students were skilled to be job oriented.
- **Self defence training**
  A 10 days self defence training by Mr. S. N. Vidyarthi was organized by Karate Association, Allahabad in order to instil confidence among the girls, build their morale and to make them well equipped to face any physical challenge.
- **20 days workshop by Mahindra Pride classes**
  A 20 days workshop was organised by Mahindra Pride for empowering the less privileged students with employable skills. The workshop offered suitable courses to the students depending upon their personality, aptitude and interest, which were judged through intensive written tests and personal interaction at the time of admission.
- **Educational Tour to Allahabad Museum**
  Museums are cultural hubs preserving traditions for future. With this objective an educational trip to the Allahabad Museum was organized for the students to obtain first

hand information about an ancient cultural heritage, artefacts, sculptures, paintings, art & architecture and books. It was a valuable source of information giving an insight into the history, culture and heritage.

[ii] Environmental Awareness—Another important part of extension activities under CPE Phase II is related to environmental awareness. A summary of programmes undertaken under the banner of Environmental Awareness is presented below:

- **Three months certificate course on Environmental Awareness**
  A three months certificate course on environmental awareness under CPE Phase II, UGC was organised. This is a non credit awareness course designed to promote more sustainable environmental practices within the students. After completing this course the students were able to define the terms associated with environment, understand the current concern about our impact on the environment and promote green practices at home and work.
- **Two days Workshop and power point presentation on environmental issues**
  A two-day PROJECT ASSESSMENT WORKSHOP (25th and 26th Feb 2019) was organized.This is one of the objectives under the category of Certificate Course for Environmental Awareness (CCEA-2018) of the CPE Phase-II at college, sponsored by UGC. 42 students of the college, participated in this workshop got a certificate for presentation. Saniya Rizwan (B.Sc III), Sudha (B.Sc III), Ayushi Yadav (M.Sc IV Sem), Divyangana Singh (M.Sc IV Sem),Tripti Rai (M.Sc IV Sem) and JyotiBaranwal(M.Sc IV Sem) were awarded for Best Presentation by the judges.
- **Poster Competition**
  A poster competition on the occasion of "International Day for the preservation of the Ozone layer" was organized by Eco club Under the aegis of **Environmental Awareness Programme (UGC, CPE-II)**on the eve of 15th September 2018. The theme of the poster competition was **"An Earth without Ozone is like a house without Roof"**More than 100 posters were displayed in which the participants expressed their ideas and suggestions to preserve the Ozone Layer. The evaluation of the posters was done by a panel including Dr.SangeetaGautam, DrPreeti Singh and Dr AkhlaqurRehman. First, Second and Third prizes were as follows:
  First Prize: Shivangi Banerjee and YashiPathak (B.Sc.Part II)
  Second Prize: IqraWaseem and Nazmeen (B.Sc.Part II)
  Third Prize: HumairaNaaz (B.Ed. Semester I)
- **Educational Tour to DIVYA KUMBH – BHAVYA KUMBHA 2019,**
  A one day Kumbh visit in ParmarthNiketanShivir was organized under the auspices of the Environmental Awareness Programme (UGC, CPE-II) in SS Khanna Girls' Degree College on 28 January 2019, in which 230 students and near about 60 faculty

members participated. The students were highly motivated by the visit and gave very positive feedback. Students of the college participated in the cultural programmes in the Shivir. The Special Guest of the event was Hon'ble Speaker of Lok Sabha, Smt. Sumitra Mahajan. The classical dance performance on Bhupen Hazarika's song 'Ganga Tum Behti Ho Kyun' won everyone's applause. It was followed by a Mime presented by M.Sc. students exhibiting the importance of the river "Ganga" based on **'Save Ganga- Save Earth'** through which students conveyed the message to put an effort to clean the banks of the Sangam and requested people not to pollute Ganga, keep it clean and avoid use of plastic bags, detergents etc in the Sangam area.

- **Educational Tour to Ganga Gallery at NASI and pledge for clean Ganga**
  Under the aegis of **Environmental Awareness Programme (UGC, CPE-II)**, S.S. Khanna Girls' Degree college organized an educational trip to the **Ganga Gallery,** National Academy of Sciences, India (NASI), Allahabad on 11January 2019. The 52 students of B.Sc., M.Sc., M.A. (Ancient History) and M.A. (Sociology) participated in this educational trip, where they come to know how Ganga effects the environment and ecology of Ganga basin and surrounding areas from Gangotri to Ganga Sagar. Dr. Neeraj Kumar (Executive Secretary, NASI) interacted with the students and highlighted the importance of the holy river Ganges, describing her as the life-line, a symbol of purity and virtue for millions of people, not only for those living on its banks but from all over the country because the Ganges represents their ethos, culture & identity in every form. The students were highly motivated by the tour and gave very positive feedback. All the students and teachers also took an oath to keep the river Ganga clean.
- **Cleanliness Awareness programme in college premises and at Gohri Village**
  An effort towards Cleanliness awareness was made among the students and with this motive, captions [flaxes] like 'Don't waste water', 'Keep the campus clean', 'Polythene bags prohibited', 'Smoking prohibited' were displayed in the campus for the purpose of cleanliness awareness drive.
  The students and faculty members visited Gohri village [SoraonTehsil] on 25th, 26th and 27th July 2018. They interactedwith the Gram Pradhan, Smt. Chamela Devi regarding cleanliness of the village. They also visited PrathmikVidyalaya'BECHU KA PURA, VILLAGE GOHRI' and interacted with the Principal of the School and teachers about cleanliness of campus.Posters made by students were displayed at Gohri on cleanliness, health, hygiene, use of dustbin; say no to polythene, pollution free nation. Students of the college also performed NukkadNatakon cleanliness.

[iii] Other Activities

- **Educational Tour to Kaushambi, [A Historical site]**
  Educational tours play a very pivotal role in the lives of students. These tours not only enhance the knowledge of students but they also take them out of the monotonous daily schedule. With this objective a trip to Kaushambi was planned. Important places of historical significance—Ashokan Pillar, GhoshitaramVihar, Raj Prasad, PraacheenPracheer and Digambarjain temple of Pabhosa were visited by the students.
- **One Day Symposium 'VICHAR KUMBH' on Prayagraj Kumbh 2019**
  Faculty of Arts organized a One Day National

Symposium under CPE Phase II Scheme on the topic "VicharKumbh" (Kumbh Prayagraj 2019) on 1st of February, 2019. The chief guest of the event was Prof. Raja Ram Yadav, Vice Chancellor, V.B.S Purvanchal University, Jaunpur, and presided over by Prof. K.N. Singh, Vice Chancellor, U.P. RajarshiTandon Open University, Prayagraj. The special invitee of the event was research scholar Ms. TomokaMushiga from Japan. Ms. Tomoka gave a detailed description of the kalpvasiesin Kumbhmela and laid stress that there is a difference between what we preach and what we practice. Prof. K.N. Singh said lifestyle is determined according to the geography of the place. Peace, security, progress and environmental protection are vital aspects of life. Vasudhaiva Kutumbakam visualised God in humanity. Prof. Raja Ram Yadav said that brotherhood is necessary in having a unanimous culture. We find global learning in Kumbh and when this learning is purified then it is beneficial and profitable. We are losing the independence of education. If India has to be established as a source of spreading education independently, we have a fire to spread this vicariously.

- **One day workshop on 'CHALLENGES BEFORE SOCIAL SCIENCES IN ERA OF SCIENCE & TECHNOLOGY '**

  On 19th November 2018, a one day workshop was organized on "Challenges before Social Sciences in Era of Science and Technology" by Social Science Association under CPE Phase II. Prof. Dhananjay Yadav, HOD, Education Department, Prof. A.R. Siddiqui, HOD, Geography Department and Prof. V.K. Rai, HOD, Political Science Department of the University of Allahabad were the main speakers in this workshop. It was unanimously agreed that social science subjects have to change their curriculum and teaching methodology according to need of present time. Social science subjects have to use ICT in the classrooms and teachers should have knowledge of ICT.

- **One day workshop on "INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS"**

  On 6th May 2019, a one day workshop was organized on "Intellectual Property rights". Prof. R. K. Tandon, Retired Professor, Department of Defence and Strategic Studies, University of Allahabad, Prof. K. K. Mishra and Prof. A. K. Mishra (Retired Professor), Department of Computer Science & Technology, MNNIT, Prayagraj and Dr. VibhutiTripathi, School of Management Studies, MNNIT, Prayagraj were the main speakers in this workshop. Various types of IPR were discussed in detail and speakers emphasized on avoidance of plagiarism and its consequences.

- **Research Projects**

  Under CPE Phase II, five projects were sanctioned to the following teachers:

[I] Dr. Lalima Singh , Dr. Shashi Pandey & Ms. Preeti Yadav, Department of Sociology, "Health status of SC Women in Baluaghat Area of Allahabad : A Sociological Analysis"

[ii] Dr. Ruchi Malviya, Department of English, "Dalit Women's life narratives and literature as experience"

[iii] Dr. Archana Jyoti & Dr. Sumita Sahgal, Department of Chemistry, "Green synthesis of substituted bezimidazoles and evaluation of their antimicrobial activity"

[iv]Dr. Sippy Singh, Department of Zoology," Physico –Chemical Analysis of drinking water used in schools of selected Tehsils of Allahabad"

[v] Dr. Rashmi Singh, Department of Education,"Exploring the dimensions and the relevance of Feminist Studies' as a subject"

Pretty-ugly nature of life

Fauzia Iftekhar, B.Ed. II Semester

Here I am again ready with my pen and diary,
To ink down my emotions without any fiery.
Endless questions have captured my mind,
The answers of which I still couldn't find.
Why people with pious heart always suffering ?
And punishment of criminals are still buffering.
Why honesty, skill & authenticity has no recognition ?
Fashion of fakeness is no more a denunciation.
Why physical appearance is still a priority ?
Has this educated crowd lost its intellectual capacity ?
White-Black, Slim-Fat, still a matter of concern,
which clearly shows mentally we have still not grown.
Why am I being judged, when I don't reciprocate the same ?
It is a pretty-ugly nature of life which has acquired fame.
Why is it assumed smiling face have no pain,
The witness of tears is only the rain.
Why weakness of an individual a matter of amusement ?
Not thinking the impact it has on their sentiment.
Why the morality is losing its importance ?
That's why every success has lost its true essence.
Why this injustice of life still continues ?
Evils are in the constant effort of greying the hues.
In spite of all, let your soul not get hampered,
Rest I guess few questions should be left unanswered !!

If the World Seems Cold to You, Kindle Fires to Warm it

Mobani Biswas, B.Ed. II Semster

I saw a child running towards his mother,
Complaining about the heartless world that bothers.
The mother gathered the child in her lap,
and gave him advice which was truly apt.
The simplicity with which the mother explained,
would have inspired anyone with the knowledge gained.
A beautiful piece of advice came from her,
necessary not only for the child but for all of us.
The child's eyes watched the face of his mother,
the tears were forgotten and the face become eager.
She said. if the world seems cold to you, kindle fires to warm it,
To see the change in the world, be the change in it.
The world will remain a heartless place to survive,
If you yourself would not be the light it needs to get revived.
Be the spark that can light a fire,
Become the warmth from which others get inspired.
The world is cold because the warmth is missing,
Kindness and human values are slowly sinking.
Bring love and hope into this desolate world,
Make them your light and brighten your surroundings up.
The cold world needs a light beacon,
Though you will be a small speck, yet it can work wonders.
Believe in yourself and your potential to bring light,
Be the first spark that illuminates the night.
Complaining about the world would not help the cause,
You will need to bring the negativities to a pause.
Make your heart the place where warmth resides,
Do your part to bring goodness, so that the world survives.

Ephemeral Bliss

Shayaan Iqbal, B.Ed. Second Semester

The breeze of sadness shook my feet,
I tried but flew along the breeze,
It took me where, I had no clue,
But certainly out of this cruel zoo.
The texture of sand, where I reached,
Gave me a clue that I was on a lonely beach.
The trees were high, their top touched the sky,
And the cold, calm zephyr which blew,
Signaled that I was no more in the cruel zoo.
All by myself, I could now be myself,
No one to peep, no one to sneak,
My feelings were now too deep,
But the bliss of staying all alone,
Was something that I had waited for long.
The sun was smiling at my liberty,
For around was no incivility.
I now wanted to live my life,
But I realized,
That the sun of my life,
Was to set and not followed by the rise.

"Voice of my heart"

Tabassum Bano, M.A., IV Semester

Believe me I have secret and sorrow,
Which no one wants to borrow.
And often I called a girl cool,
When I am sad and gloomy.
Once I stand in the cold
With my tormented soul,
This was full of dream
But I didn't get to make it cream.
How they can keep
My tormented soul to weep.
I'm not cruel just truthful,
I will always be grateful.
I want to make it disclose,
But didn't find someone to be so close.
Before some days it seems someone is mine,
But now, It seems,
No one has a single coin.
Sometime I feel to miss the life.
It's not because anyone did wrong,
It's because I didn't get the right things on.
O God! can I not save ?
Me myself from pitiless grave.

Raining Emotions

Dr. Shalini Rastogi, Assistant Professor
B.Ed. Faculty

Its raining heavily outside,
As if the clouds had too much worry,
I am completely drenched with its tears,
Like they were telling me about their story.
I don't hesitate
Neither do I groan
Because I know,
It's a natural state.
When I come back home, the tears have dried,
But, the emotions are still prolonging,
I kill the urge to run out at the porch
My hands spread out, my feet dancing.
When I am dry, I look out the window,
I do not know how, but I smile,
Those drops bring a sense of relief,
That you are ok, but just wait a while.
All I wish, was that you were a hero
I and you together holding hand in the rain
And marveling at each other's faces
I am tired of wishing-when its so in rain.

"Dare to be yourself"

Nitu Kumari, M.A., II Semester

Do you wonder at times, what you are all about ? One basic law of human existence is–

Find yourself, know yourself, be yourself, to the best of our knowledge from the beginning of time itself, there has never been anyone like you. The scientists say that if you had millions of brothers and sisters, none of them would be exactly like you, what a marvel of creation you are ! whatever you are, there is someone who thinks you are perfect. There is someone who would miss you if you were gone. There is a place that you alone can fill. There is no one quite like you.

We should dare to be ourselevs. It is a famous essay on self-reliance which says **"Imitation is Suicide."** This means that if you try to be anyone other than yourself you kill your own personality. If ever the idea comes to remember the saying **"Imitation is Suicide".** If you try to imitate someone else, you become second rate. You lose your originality and uniqueness, and become a copy of someone. All the ingredients of success are right there inside you. If you just turn your thinking around. Don't keep telling yourself, "You can't do this or that," You can do anything, anything if you think you can. Once you recognize your real self and the enduring power it gives you, you will not be able to settle for less. Being your real self, you will be as free and happy as a human being can be in this life. It is you who has to recognize your inner strength and make most of it.

'Never ever lose your authenticity.'

Beginning

Harshita Srivastava, B.Ed., II Semester

One time I was afraid of the ending of things
Of school, of childhood, of college, of friendship
I would spend my days wondering and thinking
Of how this change would change my life.
I didn't want a change to begin
I didn't want my world to end
But as they say
All good things must end
And I learned to accept my falls,
Of the changes that occurred and it made me strong
And it made me believe,
I could be what I wanted to be
And all the things I thought I had lost
Were found once again
And they made me believe
That with every ending
Starts a new beginning
Better than anything before
Because if has grown from inside you.

Women !!

Kaneez Sakeena Rizvi, B.Ed., II Semester

Women ! the boon of almighty
Becomes the curse for the society.
Women ! Faces every obstruction with courtesy
Underrated by their frailty
Women ! the enlightenment and spreader of knowledge
Always get less privilege.
Women ! the ointment of every wound
Embed with superstitions bound.
Women ! the generator of society faces the circumstances of inferiority.
Women ! the fountain of affection,
Sympathy and compassion
Get snatch their innocence identification,
Women ! the antidote for every disease
Generally faced their dignity decreases.

Tourism Business in India

Afzoom Jafri, B.Com. Part - Two

A Kaleidoscope of traditions, culture and vibrant geographies, India speaks for itself as a soul stirring journey. From its dusty snow trenches, frolic coasts, gripping natural green to the mystic ravines of spirituality and clusters of cultural shades defining the raw beauty, India captures the heart of every tourist. With the country's tourism branched into several forms, India has a chunk for every kind of a traveler. The Indian handicrafts particularly, jewelry carpets, leather goods, ivory and brass work are the main shopping items of foreign tourists.

Tourism is one of the fastest growing industries of the world. It plays vital role in the economic development of a country. India offers a wide array of places to see and things to do. A tourism business is a great way to share your passion with others looking to experience a new location or culture, be it in a business or leisure capacity. The most amazing thing about the tourism business is that they are perishable. The tourism industry builds entirely upon people. The interaction between the staff and the customer determines the perceived product quality. There are many benefits involved in travel and tourism. Tourists generate lots of economic activities. Firstly, tourism helps to create an impetus to economic activities which in turn draw investment, revenue and economic growth. The second tourism gives the economic and public benefits that act as powerful tools in sustaining local economy, creating jobs and ever generating capital. Thirdly, it forms a positive image that is formed in the eyes of the foreign and local tourism.

India can cater to almost every tourist's expectation and even surpass the expectations. India is quite blessed to have such a gracious natural beauty. If one analyses the history of development of tourist centric infrastructure, he will find that major investment was done when the government took the decision to host any international sports or conference but today our tourism industry is not keeping pace with tourism industry's volume of trade elsewhere in the world. India also faces many security risks. Active terrorist groups, regional border tensions make the areas volatile. The majority of tourist areas are safe, but border regions can be more dangerous and as the 2008 Mumbai terrorist attacks demonstrated even mainstream tourist destinations are at risk.

Tourism can be a significant contributor in foreign exchange, employment and income. We must promote tourism by opening centers in the advanced cities or countries. These centers should provide information about various places to visit and explore. It cannot be denied that India has a huge potential of tourism industry, however the facilities provided needs to be improved further. We must provide world class facilities to foreign as well as local tourists. Special tourism packages. e-visa facilities, better transport, boarding, lodging facilities, etc. will surely attract more tourists.

India could be a country with varied culture and traditions, commercial enterprise business in India has large potential for generating employment and earning great amount of interchange besides giving a positive stimulus to the country's overall economic and social development.

Report

N.S.S.

The National Service Scheme is an Indian Government- sponsored public service programme conducted by the Department of Youth Affairs and Sports of the Government of India. The programme aims to inculcate social welfare in students and to provide service to society without bias. In our college too, N.S.S. has been running as an important unit with the object of making students aware of their responsibilities. There are four units of N.S.S., running successfully under the supervision of four programme officers—Dr. Jyoti Kapoor [Senior Programme Officer-unit -1], Dr. Sumita Sahgal [unit 2] Dr. Ruchi Malaviya [unit -3] and Dr. Sheo Shankar Srivastava [unit-4].

In the session 2018-19multifarious activities were organized by the N.S.S. Programme officers. Some of them to be mentioned are like-

- Plantation in the month of July
- Swachh Bharat Summer Internship Progrmme in Gohri,
- Independence Day celebration
- International Youth Day on 12th August
- Sadbhawana Pakhwara [20th Aug-3rdSep],
- Teachers Day,
- World Literacy Day[8th Sep],
- SwachhtaPakhwara1st to 15th August and1st Sep to 15thSep
- Advisory Board Meeting on 14th August
- Cleanliness drive in Raj Andh Vidyalaya and Kushth Ashram in the month of September
- N.S.S. foundation day[24th Sep] – Lecture on Swachhta hi Seva
- 'Save The Nature Save To Future' painting competition -27th September
- Pulse Polio- 5th Oct
- Damodar Shree National Award for Excellence- 2nd Oct
- National Unity Day- 31st Oct
- Adult education-12th Nov
- Child Education -14th Nov
- Kaumi Ekta Week -19th -25th Nov
- Aids Day- 1st Dec
- Human Rights day- 10th Dec
- Swami Vivekanand Jayanti 12th January Swami
- National Youth Parliament-19th and 28th Jan
- National Voters Day -25th Jan
- Swachh Sarvekshan -25th Jan
- Republic day -26th Jan
- Kumbh Visit 28th Jan

- Pariksha Pe Charcha 29th Jan
- 16th Feb Visit to Kumbh -16th Feb
- Women's Day - 8th March
- Voter Awareness program -18th April

Apart from these activities one **special 7 day camp** was also held from **17th to 23rd Dec. 2018**. The N.S.S. volunteers exhibited their talents through various competitions like speech, essay writing, poster, painting ,slogan and debate competitions during this camp. Renowned guest speakers, from different fields of society, invited to deliver their motivating lectures on various contemporary issues were--Dr. Manishankar Dwivedi, President of Hudsa and the Principal of Moti Lal Nehru Degree College, Sri Vimal Chaube and Mr. Ashok Chauhan, CDPO, Ritambhara Mishra Senior Advocate, members of Aparajita, and Major Ghanshyam of Ganga Task Force. Our Principal Dr. Lalima Singh, in her thought provoking lecture, guided the students for their social responsibilities and attitude towards life. Not only this the N.S.S. volunteers were also privileged to listen thought inspiring words of some of their teachers- Dr. Rita Chauhan, Dr. Jyoti Kapoor, Dr. Sumita Sahgal, Dr. Ruchi Malaviya and Dr. Sheoshankar Srivastava. Besides these illuminating speeches a lecture on Sahaj yoga and some cultural activities like patriotic song competition,folk dance competition, skit on Demonetization, Avas Yojana and Beti Bachao Beti Padhao, S.U.P.W. Exhibition (kabad se jugad) and social activities like distribution of woolen clothes were some important events conducted during this camp. Dr. Manju Singh, N.S.S. Coordinator, University of Allahabad inspected the camp and attended the Closing ceremony of camp that was organized by the volunteers with great enthusiasm .

Women Empowerment : Indian Girls' Dream

Vandana Pal, B.Ed. IInd Semster

We are living in an age of women empowerment. Every were in the world the women are working shoulder to shoulder with men. By and large, they are now empowered to take decision about different aspects of their life and profession.

Women Empowerment adds to confidence to women in their ability to lead meaningful and purposeful lives. It removes their dependence on others and makes them individuals in their own right.

1.They are able to lead their lives with dignity and freedom.

2. It adds to their self esteem.

3. It gives them a distinct identity.

4. They are able to gain positions of respect in society.

Without women's empowerment, we cannot remove injustice and gender bias and inequalities.

Every year we celebrate Woman's Day on March 8th .

Education is the most important tool for woman. Without proper and adequate education, women cannot become empowered individuals. They need to be encouraged to go for higher studies so that they can contribute significantly in the creation of a knowledgeable society.

Women Empowerment helps to make the society and world a better place to line in the march forward on way to inclusive participation. It means increase happiness for the family and the organisation where women make a difference.

My mother is my role model. She is a strong woman and good mother as well. She is illiterate but it is not her weakness because she gave me good education. After the death of my father she always told me "I am a man of this home. I am your mother and father as well. I think she is the 'Iron lady for me. That's why she is my ideal. There are many other women who gave their 100% effort at home for their families.

There are so many circumstances which are hurdles to success of women. I want to talk about in the reference of Indian culture, most of the persons think, women are only puppets with whom we can do any thing. Our country is a "Male Dominant" country. We always think, Man is better than woman. How can they say this type of conservative thing.

We all are stronger than men. We can prove it. Women have lots of physical problems never the less she does her work properly.

In Indian culture there are lots of myths which show the weakness of men. In present era, we are living in open environment. Women are showing their qualities in different -different area. I can give a lot of example by which we can show, our women are stronger and more intelligent than men.

For example, loksabha speaker Sumitra Mahajan who broke the myth, that only a man can get the seat of speaker. Bollywood superstar Priyanka Chopra, who is playing multitype role in her life, she is youth icon also. She is inspiration for the Indian girls. Seven times World Boxing Championship winner M.C. Marycom who is playing multiple roles in her life like daughter, sister, wife, mother and a player as well.

Government of India also started lots of scheme **"Beti Bachao Beti Padhao".** The Brand Ambassador of Beti Bachao Beti Padhado is "Sakshi Malik who is a gymnaster and also won a bronze medal in "Sukanya Samriddhi Yojana" which is a small deposit scheme of the government of India for a girl child. We are Indian girls and not branded. We are free and can do anything in a right pathway. We all love freedom.

I am a girl I am strong
Every girl is wealth of one's family
Every girl is faith of one's family

I am a girl I am strong
Every girl is proud of one's family
Every girl is treasure of one's family
I am a girl I am strong

In the end, I want to say, women are potent. They can do anything in this world. They are not 'Bachari' They are self dependent. So please we all should respect woman,.

My mother is wonderful
Her work is powerful
Her relationship is coloureful
Her voice is beautiful
My mother is wonderful.

Father

Kashifa, M.A., IV Semester

A person who never demands,

A person who never argues,

A person who spreads love without any condition.

A person who never sleeps proper for his family dreams,

A person who ignores his desire for the others

A person who had nothing, but still collecting money for F.D.

Time has changed, year has gone but he never stopped never tired.

A person who has lot of tension in his mind but never pretent.

A person who understands everyone without saying a single word. A person who has lots of emotions but never breakdown.

A person who calls his daughter, Doll and treat her like a princess,

A person who is first love for his daughter, is known as "Father."

Gender Eqvality : Women Empowerment

Shreya Srivastava, M.A., IV Sem.

Gender equality will be achieved only when women and men enjoy the same opportunity, rights and obligations in all spheres of life. This means sharing equally, power and influence, and having equal opportunity in economic and social spheres. Gender equality demands the empowerment of women, with a focus on identifying and redressing power imbalances and giving women more autonomy to manage their own lives. When women are empowered, the whole family benefit, thus benefitting the society as a whole and these benefits often have a ripple effect on future generations.

As women constitute almost one-half of India's population, without their engagement and empowerment, rapid economic progress is out of question. Along with government, civil society organisations and all other state holders must come forward and involve in women empowerment process in the need of the hour.

Twin Sister

Sumaiya Ansari, B.Ed., II Semester

Time spend together becomes a bliss
In the life full of schedules and stress
You are my partner in crime
My poems rhyme
My mentor strict
But messy a little bit.
My supporting shoulder to cry on
Why those good old days are gone
When we used to share same shines
And people used to call us twins
From sharing the long talks to sharing
the same thoughts
Life has become a lesson
Yet to be fully taught.

Rebirth

Vasudha Verma, B.Ed. IInd Semster

There was a young girl. She was very simple in her nature. She belonged to lower middle class family. She lived in a town. Her father was a book seller and her mother was a housewife. She was the only child of her parents. She was very good in her study. Because of poor financial condition she could not find a good schooling. Because her father was footpath side book seller. But she got education in government school. Inspite of that she worked hard and passed the exam. That was only because of her hardwork.

After completing her schooling she enrolled in graduation. She was also giving her best there. But after few months. She met a young boy who was a good looking person and attractive. That was also the age of attraction. She could not stop her steps towards him. He told the young lady that he loved her so much. With the passage of time they came close to each other.

After passing few months he called the lady at his room. Because of her good and caring behaviour she was totally in his grip. So there was no reason to doubt him. The lady was totally impressed by him. The young lady who was the little princess of her parents, then became a love lady of her lover. The young lady did not tell anything to her parents, about that boy. But that day was the dark day for the lady. That day the boy physically molested her. Unfortunately she was raped. He was her lover but what was done with her that was without permission.

That was not the result of love while that was the result of lust, and that was done forcefully. The lady was only nineteen years old. After doing that worst thing the boy left her alone on the road.

She was unable to think that what she should do now ??...

There was so much stretches on her body. There was internal bleeding also. She was unable to understand what should be the next step ??...

She was just thinking one thing is this a love ??...

Is this a humanity ???...

She was just thinking about her parents. She went to her home. There was so much pain in her body. She was physically and mentally hurt. She wept so much in the arms of her mother. She was not in her senses. She told her parents the whole thing. Her mother had beaten her so much. But after beating she hugged her daughter. What could her parents do ???...

If they do any police case they will lose their reputation. The lady left her education because she was physically and mentally helpless.

She started to spend her time in loneliness. For many days she was unable to sleep. She wept so much. Because that moment was terrible for her.

But one night when she sat on her roof and just looked towards the sky. That was the time when almost one and half years passed. She thought that what was her dream...???

and what she did with herself ???...

It this a woman ??...

Only touching by a man physically she became impure. Is this the existence of woman ??... She thought she loved him but what did she find ???... She told herself that her existence cannot be so weak. Her dreams cannot be so weak.

It she is right then why she put the burden of another. wrong doing with herself. That was also her fault. But that punishment was enough for her. May be from the society's point of view she is guilty and impure but in her own eyes she is pure... because her soul is pure. She did not know the criteria of society. But she can make her own criteria which will prove safe for her.

Once her parents gave birth to her but this time she got a rebirth by her own thoughts and strength. That was a journey of a young lady from birth to rebirth. After that she did not feel helpless because of her own power and that power was her will power. She started her education again for her dreams and for her parents.

'My Second Home'

Kashifa Itrat, M.A., IInd Semster

The day is repeatedly knocking in my memory,

When I entered the huge college gate of S.S. Khanna timidly,

Five years in a stretch have I spent my days here,

Experienced myself grow as an individual under the guidance of my teachers with love and care,

the lush green gardens with blooming

flowers that adds vivacity to my soul,

I shall not forget the gatekeeper checking on the helmets daily, fulfilling his role,

The echo of the students with books and I-cards shall reverberate in my ears as I walk past the Art faculty,

I shall dearly miss the long corridors of department of education, English, Economics and Sociology,

Let me sit once more and take down the lectures taught,

Oh ! Please let me once more relax in the garden and play a sport,

Let me once more match my friends of science faculty performing experiments,

Let me for one more time hear the girls playing music on their instruments,

The chairs of the food court shall wait for our friends gathering,

Oh! let me for the last time match the B.Ed. students perform their activities and practice teachings,

The giant Pathshala Auditorium's stage shall miss my speeches where once I fretted to stand at,

Let me once for the very last time speak at the podium or dress myself as 'Macbeth' to enact,

Let me for the last time walk throught the B.Com faculty and at last search for my last self between the piles of books at the Library,

I fail to express my gratitude for my second home- My Alma Mater,

I bend down my head to Almighty and pray for my teachers, staff members, colleagues and everyone together.

Spread Humanism Not Hate

Ritika Adhikari, B.Ed.., IInd Semster

Spread humanism not hate is so that it pauses me for a second to ponder about the positivity it spreads.

Drowned by the overflowing love,

Moved by the killing hatred, blinded by the constructive glimpse of the wheel of fortune, courage to continue a step forward towards spreading love and making land a place of gardens with blossoming flowers all overs.

Build bridges not walls,

Make love not war

spread positivity not hatred,

Live life, be happy.

–Cherlynn Shakespeare

Harted would just start up a chain reaction of discord and propogate all kinds of vices in the society, whereas love would ensure that good things come back to us sometime in some form.

There are people living their individual lives of which we have no knowledge of, they might have been in their depressed states, cribbing their existence. At times like these, we could be an agent of happiness possible in small amounts but atleast we would make a difference and help them regain their faith in the existence of goodness in the world.

In a world which is full of wrath, anger and revenge the idea of love can come as a recluse to all human kind.

As a Gandhian idea its not a tit for tat method which can bring us greater glory but please love and kindness.

Human beings as many studies have shown are naturally loving being and the hatred going around is the result of political, social and economic conditioning, strife etc.

If humans naturally tend towards love then why spread hatred. Lets keep our grudges and ego apart and spread brotherhood and not let ourselves be the victim of negative forces.

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"

द्वारा वार्षिक देय स्थाई छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2018–19

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति/पदक की शर्त	छात्रवृत्ति/पदक का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति/पदक
1.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी० कॉम० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1975	1000/-
2.	श्री भोला नाथ कपूर श्री राजीव खन्ना 645/560 ए, मालवीय नगर, इला०	बी० कॉम० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती रमा कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1977	100/-
3.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला०	बी० ए० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सदनलाल एवं श्रीमती भगवान देई खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1979	400/-
4.	श्री कृष्ण कपूर 13, म्योर रोड, इलाहाबाद	बी० कॉम० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एन० सी० कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1979	500/-
5.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला०	बी० ए० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री नट्टूमल एवं श्रीमती ज्वाला देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1980	400/-
6.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला०	बी० ए० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री शिवचरण दास एवं श्रीमती अचम्मी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1981	400/-
7.	श्री राम किशोर खन्ना श्री अरूण किशोर खन्ना 71, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी० कॉम० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम किशोर खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1983	100/-
8.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/73, रानी मंडी, इला०	बी० ए० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती छगन देवी एवं कु० मंजू खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1985	400/-
9.	श्री राजा राम मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इला०	बी० कॉम० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी माधोराम मेहरा एवं श्रीमती बिब्बो बीबी स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1987	500/-
10.	श्री संजय कपूर 619, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी० कॉम० प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती सावित्री कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1988	400/-
11.	श्री दामोदर दास खन्ना श्री नीरज खन्ना ब्लाक आर. ई., 7 फ्लोर, पूर्वा रिवीरिया, मुन्ने कोलाला विलेज, व्हाइट फील्ड, मराठा हल्ली रोड, बैंगलोर–37	बी० एस–सी० द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चुन्नी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	2000/-	1988	200/-
12.	श्री वृज किशोर टण्डन श्रीमती राज टण्डन मे० काशी आर्नामेन्ट हाउस 393, रानी मण्डी, इलाहाबाद	बी० कॉम० तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कामता प्रसाद टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	1991	1500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति / पदक
13	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्ड्रस्ट्रीज (प्रा0) लिमिटेड गाँव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला, खंडासा रोड, गुड़गाँव – 122 001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1991	500/-
14.	श्री पन्ना लाल कपूर श्री अंकित कपूर सैमसन ड्रेस डीपो 27 / 12 महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कु0 मन्जू कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1992	500/-
15.	श्री संजय मेहरोत्रा डी–501 विशप्रेंज पाम्स एक्सक्यूजिव लोखण्डवाल अकरौली रोड काम्पलेक्स कॉदीवली, ईस्ट, मुम्बई 400101 मो0 09324805186	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलराम किशोर मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1994	500/-
16.	श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1994	500/-
17.	श्री ए. सी. सहगल श्री मुकुल सहगल EG-3/2 गर्डन इस्टेट महरौली गुड़गाँव रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती शिव प्यारी सहगल स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	1995	1000/-
18.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1998 2016	500/- 500/- 1000/-
19.	डॉ0 सुशीला टण्डन डॉ0 राम कृष्ण टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 55% अंक से अधिक अंक प्राप्त करने वाली खत्री छात्रा को	श्री हर नारायण जी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
20.	श्री अशोक कुमार मेहरोत्रा C/O, हरीशचन्द्र खन्ना 536 मालवीय नगर, इलाहाबाद।	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री हीरा लाल एवं श्रीमती विजय कुमारी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	3000/- 10000/-	1996 2016 2018	300/- 800/- 600/-
21.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ति कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
22.	डॉ0 इन्द्रा मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राज कुमार कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
23.	श्रीमती निर्मला टण्डन ब्लाक नं0 9, फलैट नं. 407 हेरिटेज सिटी अपार्टमेन्ट गुडगाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति / पदक
24.	डॉ0 एस0 एस0 खन्ना 1616 / 899–ए, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी एवं जरूरतमन्द बी0 एस–सी0 तृतीय वर्ष की छात्रा को	श्री सत्य नारायण कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
25.	डॉ0 भारती गेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन, एम0 एस0 39211, यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0, प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
26.	डॉ0 भारती गेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन एम0 एस0 39211 यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	8000/-	1998	800/-
27.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
28.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-	1998	1000/-
29.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती विट्टन देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1999	500/-
30.	श्री आनन्द प्रकाश वर्मा श्रीमती मधु वर्मा 1140, कल्याणी देवी इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलदेव कृष्ण वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2000	600/-
31.	श्री अखिल मेहरोत्रा साहित्य बिहार, किरन उत्सव मंडप कीरत पुर रोड, बिजनौर 246701	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
32.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सप्रू रोड इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
33.	डॉ0 रागनी मदान द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सप्रू रोड इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
34.	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्डस्ट्रीज प्रा0 लिमिटेड गॉव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला खंडासा रोड, गुड़गॉव –122001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2002	1000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति / पदक
35.	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा बी 8–1302 एल एण्ड टी सातथ सिटी, अरकेरे माइक्रो लेआउट बैंगलूरु	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा छात्रवृत्ति	5000/-	2002	500/-
36.	श्री रईस मोहम्मद 10 / 10ए, ताशकन्द मार्ग इलाहाबाद –211001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती महमूदा बेगम स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
37.	श्री श्याम नारायण कपूर श्री विवेक कपूर 16/11A महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं को जिनकी न्यूनतम 50% अंक, पढ़ाई शुल्क का 50%।	अमर शहीद त्रिलोकी नाथ कपूर स्मृति छात्रवृति	60000/-	2003	6000/-
38.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डा. आशा सेठ A10 अग्निपथ, 7 सप्रू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भाग्यवती मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृति	6000/-	2003	600/-
39.	श्री अमर नाथ कक्कड 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम नाथ कक्कड़ स्मृति छात्रवृति	14000/-	2004	700/-
40.	श्रीमती उमा मोहिले 3 / 7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी.एड. में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	20000/-	2006	1400/-
41.	श्रीमती उमा मोहिले 3 / 7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी0 कॉम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	48000/-	2006	3600/-
42.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए / 5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	विज्ञान संकाय की छात्राओं को।	श्री श्रवण टण्डन स्मृति छात्रवृति	500000/-	2008	45000/-
43.	श्रीमती सरोजनी मेहरोत्रा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम भूषण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2008	1000/-
44.	डॉ. शालिनी रस्तोगी 8–डी / 1 तपोवन बिहार पोन्नपा रोड, इलाहाबाद	बी.एड. संकाय की जरूरतमन्द छात्रा को।	प्रो. दामोदर दास खन्ना स्मृति छात्रवृति	10000/-	2011	800/-
45.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए / 5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	बी.एड् संकाय की सर्वगुणोन्मुखी / उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्रवण टंडन स्मृति पुरस्कार	135000/-	2012	11000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति / पदक
46.	श्रीमती शोभा मल्ला सी 159 सन सिटी, सेक्टर–54 गुडगाँव हरियाणा	ऑफिस मैनेजमेन्ट में प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को।	श्री वी. के. मल्ला स्मृति छात्रवृत्ति	125000/- 31000/-	2013 2013	4000/- 4000/- 4000/-
47.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री उदय पाल मिश्र स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
48.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भगवती शुक्ला स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
49.	श्री गोपाल चोपड़ा श्रीमती अंजली चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	2 विकलांग छात्राओं को।	श्रीमती शकुन्तला चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	50000/- 50000/-	2014 2014	5000/- 5000/-
50.	श्रीमती इन्द्रा चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं को।	श्री राम लाल चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	100000/-	2014	10000/-
51.	श्रीमती उर्मिला संड 1116 कल्याणी देवी इलाहाबाद।	बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष में प्रतिभाशाली खत्री या सारस्वत छात्रा को।	श्री अतुल कुमार संड स्मृति छात्रवृत्ति	16000/-	2014	1200/-
52.	श्रीमती मीना टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष की खत्री छात्रा जिसने XII कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये हो।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2015	800/-
53	डा0 प्रभा कक्कड 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0ए0 प्रथम वर्ष एवं बी0ए0 द्वितीय वर्ष के शिक्षा शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओ को	श्रीमती शांति देवी कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	20000/-	2016	800/- 800/-
54	डा0 रीता सरीन 14, जवाहर लाल नेहरू, इलाहाबाद	बी0 ए तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री विजय नारायण टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	55000/-	2016	3500/-
55	डा0 इन्द्रा मेहरोत्रा 8 नवाब युसूफ मार्ग, इलाहाबाद	एम0 एस सी प्रथम वर्ष में विज्ञान संकाय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री गणेश प्रसाद सेठ स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2016	1000/-
56	डा0 सुधा मलहोत्रा इलाहाबाद	बी0 एड0 में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	डा0 संतोष मलहोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	51000/-	2016	3300/-
57	श्रीमति सरल टण्डन मैनेजिंग ट्रस्टी, सार–ला एजूकेशन ट्रस्ट मुम्बई डी–2 /ए–5 बसन्त बिहार (मेज) नई दिल्ली 110057 saraltandon@yahoo.com	कम्प्यूटर विषय में ओ लेबिल कोर्स हेतू जरूरत मन्द 08 छात्राओं को जरूरत मन्द एवं मेधावी चित्रकला एवं संगीत विषय की 10 छात्राओं का	श्री श्रवण टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	800000/-	2017	40000/(रू 5000/- (प्रत्येक) 12000/(रू 5000/- (प्रत्येक)
58	डॉ0 रूची दुबे 32 एलगिन रोड, सिविल लाईन्स इलाहाबाद	बी0 एड0 में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती बीना दुबे स्मृति छात्रवृत्ति	20000/-	2017	1200/-

नयी छात्रवृत्ति सत्र 2018–19

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"
द्वारा वार्षिक देय अन्य छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2018–19
एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय विभाग

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	छात्रवृत्ति / पदक
1.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती कश्मीरो देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
2.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती जयन्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
3.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती चुन्नी देवी कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
4.	श्रीमती मीरा खन्ना "मनोहर" 645/560– ए मालवीय नगर, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चन्दो खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1100/-
5.	श्रीमती मोनी खन्ना "मनोहर" 645/560, मालवीय नगर, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्री संजीव खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	600/-
6.	श्री अशोक कुमार सण्ड 1116ए / 1337 ए, कल्याणी देवी, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	श्रीमती माधुरी सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
7.	श्री अशोक कुमार सण्ड 62 / 10 प्राईमरोज वाटिका सिटी सेक्टर 49, सोहाना रोड गुड़गाँव 122018	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	पं0 विश्व नाथ सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
8.	न्यायमूर्ति अरूण टण्डन 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती हीरो देवी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
9.	श्री वाई. एन. मेहरा श्री अतुल मेहरा 5 ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री इन्द्र नरायण मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	5100/-
10.	डॉ0 लालिमा सिंह एस0 एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0ए0 तृतीय वर्ष में अर्थ शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	प्रो0 डी0 एस0 कुशवाहा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	छात्रवृत्ति / पदक
11.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1, पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	देव गंगोत्री स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
12.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को बी0 एस–सी0 प्रथम /	मेजर वी0 पी0 स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
13.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	द्वितीय वर्ष में गणित विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एम0 पी0 गांगुली स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
14.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष की संगीत गायन में 60% से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री जी0 सी0 सान्याल स्मृति छात्रवृत्रि	500/-
15.	डा. अल्पना अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में दर्शन शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री प्रताप चन्द्र जैन स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
16.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रो. राजेन्द्र कुमार वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
17.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में हिन्दी विषय मे अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	पो. रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
18.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रबृत्ति	500/–
19.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
20.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महाविद्यालय इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती शिव दुलारी त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति / पदक की शर्त	छात्रवृत्ति / पदक का नाम	छात्रवृत्ति / पदक
21.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महाविद्यालय इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–
22.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून–248001	बी.काम. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
23.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
24.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
25.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
26.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में मेधावी खत्री छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
27.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष में एक मेधावी छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
28.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में गणित विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
29.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एड. प्रथम वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
30.	डा. शिव शंकर श्रीवास्तव एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में मध्य कालीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम विलास स्मृति छात्रवृत्ति	500/–

College - Governing Body

Prof. Ranjana Kakkar	Chairperson
Mr. Dilip Mehrotra	Treasurer
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	Member
Prof. Indira Mehrotra	Member
Dr. R. K. Tandon	Member
Prof. Prahlad Kumar	Member
Dr. Asha Seth	Member
Mr. Dheeraj Khanna	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Sri. Arun Kishore Khanna	Member
Prof. Lalima Singh	Principal/Ex Off. Secretary

Members Nominated by Vice Chancellor

Prof. Sangeeta Srivastava	University of Allahabad
Prof. S. A. Ansari	University of Allahabad
Prof. Jagdamba Singh	University of Allahabad
Prof. S.K. Rai	University of Allahabad

Teacher Representative

Dr. Archana Tripathi	Teacher Representative & Co-ordinator B.Ed.
Dr. Jyoti Kapoor	Teacher Representative
Dr. Rachana Anand Gaur	Teacher Representative & D.S.W.

Permanent Invitees

Mr. Rajiv Khanna	President, S.K.P. Society
Mr. Amit Khanna	Secretary, S.K.P. Society
Mrs. Nirmala Tandon	

Special Invitees

Mr. Harish Chandra Khanna	Chief Patron, S.K.P. Society
Dr. Alpana Agarwal	Co-ordinator Arts Faculty (UG & PG)
Smt. Gunjan Sharma	Bursor
Dr. Neerja Sachdeva	Co-ordinator Commerce Faculty
Dr. Manjari Shukla	Proctor
Dr. Archana Jyoti	Co-ordinator Science Faculty

Joint Managing Committee of Saroj Lalji Mehrotra Science Faculty & Centre of Legal Studies

Mr. S.K. Seth	Chairperson
Dr. (Smt.) Asha Seth	Member
Mr. Vinayak Tandon (FCA)	Member
Mr. Sudhir Tandon	Member
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	Member
Mr. Rajeev Khanna	Member
Mr. Dilip Mehtrotra	Member
Prof. Lalima Singh	Principal/Ex. Off. Member

Permanent Invitee

Mr. Chetan Mehrotra	Executive Trustee Sar-La Education Trust

Special Invitees

Mrs. Gunjan Sharma
Dr. Archana Jyoti
Dr. Vikas Singh

Board of Directors - B.Ed.

Dr. Asha Seth	Chairperson
Hon'ble Mr. Justice Arun Tandon	Member
Mr. Rajeev Khanna	Member
Mr. Dilip Mehrotra	Treasurer
Dr. R. K. Tandon	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Prof. Lalima Singh	Principal
Dr. Archana Tripathi	Co-ordinator
Dr. Rachna Anand Gaur	Member
Dr. Ritu Jaiswal	Member
Dr. Ranjana Tripathi	Teacher Representative
Dr. Shalini Rastogi	Teacher Representative

UBUNTU

The college believes in and teaches the philosophy of Ubuntu, which simply translated means, "I am because we are."
'How can one be happy when the others are sad?'
Let all of us always have this attitude and spread happiness wherever we go.
Let's have a "Ubuntu" Life...

शिक्षक वर्ग

प्रो. लालिमा सिंह
प्राचार्या

स्थायी शिक्षक वर्ग

कला संकाय

डॉ. अल्पना अग्रवाल	उप प्राचार्या / एसोसिएट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
डॉ. रीता चौहान	एसोसिएट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
श्रीमती गुंजन शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
डॉ. नीरजा सचदेव	एसोसिएट प्रोफेसर– अंग्रेजी
डॉ. आशा उपाध्याय	एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. मीनू अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
डॉ. अर्चना त्रिपाठी	एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
डॉ. ज्योति कपूर	एसोसिएट प्रोफेसर– संस्कृत
डॉ. रचना आनन्द गौड़	एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. मंजरी शुक्ला	एसोसिएट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
डॉ. संध्या अरोरा	एसोसिएट प्रोफेसर– संगीत वादन
डॉ. रीतू जायसवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
कैप्टन डॉ. रेखा रानी	एसोसिएट प्रोफेसर– संगीत गायन
डॉ. संगीता गौतम	एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला
डॉ. ताहिरा परवीन	असिस्टेंट प्रोफेसर– उर्दू
डॉ. रुचि मालवीस	असिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी
डॉ. आरिफा बेगम	असिस्टेंट प्रोफेसर– उर्दू
डॉ. आदित्य कुमार त्रिपाठी	असिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. शशी पाण्डेय	असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
सुश्री सदफ सिद्दीकी	असिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी
श्री सुगंध कुमार चौधरी	असिस्टेंट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
सुश्री रिया मुखर्जी	असिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी
सुश्री प्रीति यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
सुश्री सौम्या कृष्णा	असिस्टेंट प्रोफेसर– संस्कृत
डॉ. हरीश कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
डॉ. नीता साहू	असिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
डॉ. रश्मि सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
डॉ. विनीता मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफेसर– मध्यकालीन इतिहास
डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर– मध्यकालीन इतिहास
डॉ. निशी सेठ	असिस्टेंट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
डॉ. श्रद्धा राय	असिस्टेंट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
श्री पार्थ डे	असिस्टेंट प्रोफेसर– संगीत वादन
सुश्री प्रियंका गुप्ता	असिस्टेंट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
सुश्री नेहा राय	असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
डॉ. प्रियंका मलिक पाण्डेय	असिस्टेंट प्रोफेसर– संगीत गायन

विज्ञान संकाय

डॉ. अर्चना ज्योति	एसोसिएट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. प्रीति सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान
डॉ. आलोक मालवीय	असिस्टेंट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान
डॉ. ऋचा टण्डन	असिस्टेंट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान
डॉ. सुमिता सहगल	असिस्टेंट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. शुभ्रा मालवीया	असिस्टेंट प्रोफेसर– जन्तु विज्ञान
डॉ. अनुराधा सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. सिप्पी सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर– जन्तु विज्ञान

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

कला संकाय

श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर– कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा
डॉ. सीमा पाण्डेय	अतिथि प्रवक्ता– समाजशास्त्र
डॉ. मनोज कुमार	अतिथि प्रवक्ता– राजनीति विज्ञान
डॉ. सुलभ श्रीवास्त	अतिथि प्रवक्ता– भूगोल
श्रीमती शालिनी तिवारी	अतिथि प्रवक्ता– कार्यालय एवं प्रबन्धन
डॉ. रंजना सिंह	अतिथि प्रवक्ता– मनोविज्ञान
डॉ. कल्पना मिश्रा	अतिथि प्रवक्ता– हिन्दी

विज्ञान संकाय

डॉ. प्रमिला गुप्ता	असिस्टेंट प्रोफेसर–भौतिक विज्ञान
डॉ. शर्मिला वैश्य	असिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
डॉ. अचला श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर – वनस्पति विज्ञान
डॉ. मनोज अग्निहोत्री	असिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
डॉ. अर्चना यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर – जन्तु विज्ञान
श्री पृथ्वी राज सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर – भौतिक विज्ञान
डॉ. मो. अखलाकुर रहमान	असिस्टेंट प्रोफेसर – बायोटेक्नोलाजी
डॉ. शिवम मिश्रा	अतिथि प्रवक्ता– जन्तु विज्ञान
डॉ. देवेन्द्र सिंह	अतिथि प्रवक्ता– रसायन विज्ञान
डॉ. शबनम परवीन	अतिथि प्रवक्ता– वनस्पति विज्ञान
डॉ. सरिता अग्रवाल	अतिथि प्रवक्ता– जीव विज्ञान
सुश्री स्वास्तिका सिंह	अतिथि प्रवक्ता–रसायन विज्ञान

वाणिज्य संकाय

डॉ. मीना चतुर्वेदी	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शिखा अग्रवाल	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. तनुश्री रॉय	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. विकास सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शिव शंकर शुक्ला	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. श्रुति आनन्द	असिस्टेंट प्रोफेसर

बी.एड संकाय

डॉ. विनोद कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. अरुणा त्रिपाठी	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. मंजू मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. सुरेन्द्र कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. रंजना त्रिपाठी	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शालिनी रस्तोगी	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. ममता भटनागर	असिस्टेंट प्रोफेसर
सुश्री मीनाक्षी श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. ज्योति बैजल	असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री राजेन्द्र भारतीय	असिस्टेंट प्रोफेसर
सुश्री बलदीप कौर	असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षणेतर कर्मचारी वर्ग

स्थायी

श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता	सहायक लेखाकार
श्री विनय कुमार यादव	स्टेनो
श्री रवि कान्त सिंह	पुस्तकालय अध्यक्ष
श्री शिवशंकर लाल	कार्यालय सहायक
श्री रमेश चन्द्र	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रशेखर जोशी	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रकान्त पाण्डेय	कार्यालय सहायक
श्रीमती प्रियंका सिंह	कार्यालय सहायक
श्री घनश्याम सिंह	बुक लिफ्टर
श्री राधा कृष्ण	परिचर
श्री राम मिलन सेन	परिचर
श्री दया राम	परिचर
श्री राम लाल यादव	परिचर
श्री सुशील कुमार शुक्ला	परिचर
श्री मुरारी लाल	प्रयोगशाला परिचर
श्री नीम बहादुर थापा	प्रयोगशाला परिचर
श्री बच्ची सिंह बिष्ट	प्रयोगशाला परिचर
श्री राजेश कुमार	बुक लिफ्टर
श्री मोती लाल	परिचर
श्री मुकेश कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री अनोखे लाल	चौकीदार

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

कला संकाय

श्री उमेश चन्द्र शर्मा	कार्यालय अधीक्षक
श्री राजेश टण्डन	डाटा इन्ट्री लिपिक
श्री राम कृपाल	कार्यालय सहायक
श्री सन्त लाल	कार्यालय सहायक
श्रीमती मिथिलेश कुमारी	पुस्तकालय सहायक
श्री फूल चन्द्र यादव	परिचर
श्री गोविन्द त्रिपाठी	पुस्तकालय परिचर
श्री विक्रम कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री रामकेश पाल	माली
श्री संतोष कुमार विश्वकर्मा	ड्राइवर
श्री अजीत कुमार	सफाई कर्मचारी

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

विज्ञान संकाय

श्री गुरूदास भट्टाचार्या	कार्यालय सहायक
श्री जितेन्द्र कुमार	प्रयोगशाला सहायक
श्री मृदुल कुमार यादव	प्रयोगशाला सहायक
श्री आलोक कुमार साहू	कार्यालय सहायक
श्री राहुल चटर्जी	प्रयोगशाला सहायक
श्री सन्तोष कुमार यादव	कार्यालय सहायक
श्री मोहित कनौजिया	कार्यालय सहायक
सुश्री जैनब फातीमा सिद्दीकी	प्रयोगशाला सहायक
सुश्री अपेक्षा श्रीवास्तव	प्रयोगशाला सहायक
श्री शरद चन्द्र यादव	प्रयोगशाला सहायक
श्री विजय कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सूर्यमणि यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री दिनेश कुमार गुप्ता	प्रयोगशाला परिचर
श्री विनोद कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी	प्रयोगशाला परिचर
श्री राजेन्द्र प्रसाद कुशवाहा	प्रयोगशाला परिचर

वाणिज्य संकाय

सुश्री रूपाली सक्सेना	पुस्तकालय लिपिक
श्री अंकुर कपूर	लिपिक
श्रीमती सोनू मेहरोत्रा	पुस्तकालय सहायक
श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी	कार्यालय सहायक
श्रीमती सन्तोष देवी	सफाई कर्मचारी
श्री बृजेश कुमार	परिचर
श्री वीरेन्द्र कुमार	परिचर

बी.एड. संकाय

श्री सतीश कुमार धूरिया	टेक्निकल सहायक
श्री उमेश चन्द्र कुशवाहा	अंशकालिक लेखाकार
श्री संजय मेहरोत्रा	कार्यालय सहायक/स्टोर कीपर
श्रीमती विनीता कपूर	पुस्तकालय सहायक
श्री धनन्जय कुमार शुक्ला	परिचर
श्री यशपाल	सफाई कर्मचारी
श्री कुलदीप कुमार	परिचर
श्री अनूप कुमार	चौकीदार
श्रीमती नीतू सिंह	परिचर

ہے۔ کیونکہ عورت ابھی تک عزت اور وقار اور آدرشوں کے سہارے ہی جیتی رہی ہے اور جیتی بھی کیوں نہ؟ کیونکہ اس کے اندر بچپن ہی سے اس کے ذہن میں یہ چیزیں ٹھونس کر بھر دی گئی تھیں۔ اور جب وہ اس کے برعکس میدان جنگ میں اترتی ہے تو مرد سوسائٹی میں ایک عجیب انقلاب برپا ہو جاتا ہے کہ ابھی تک انھوں نے ایسی عورت نہیں دیکھی تھی۔ یہی سب عورت کے اندر کی چھپی ہوئی آگ ہے، جو اس کو اس کی منزل کے اقدام کے لئے آمادہ اور مشتعل کرتی ہے۔

شاہدہ حسن نے اپنی نظم ''نئی زمینوں کا خون'' میں لکھا ہے:

میں کہاں آ گئی دائرے میں کہیں
مثل پرکار میں
اور نقطے پہ رکھی ہوئی سرد مہریاں
خوف کا ذائقہ
روز چکھتی ہوئی زندگی
قوس در قوس کٹتی ہوئی زندگی

یہ بیان دراصل اس زندگی کا ہے جس کے درمیان سے دبی کچلی اور کراہتی ہوئی نئی عورت گزر رہی ہے، جس پر بیرونی دباؤ بھی ہے اور جو اپنے اندر کی اظہاریت کے لئے بے چین بھی ہے۔ اس نئی عورت کی یہ بے جنسی اوپر کے مصرعوں میں ڈھل گئی ہے۔ شاید ان تمام حالات سے آج کی نئی عورت جب کامیابی کے ساتھ گزرے گی تب ہی اس کو وہ پھول مل سکیں گے جس کا خواب شاہدہ حسن نے ''یہاں کچھ پھول رکھے ہیں'' میں کہہ کر کیا ہے۔

☆☆☆

جسم اندر سے تبدیل ہو جائیں گے
ہاں مگر اس کو تبدیل کرنے کی صورت ہے کیا

یہاں شاہدہ حسن جین کی بدلتی شکلوں کو کیا انسان کی مجبوری سمجھتی ہیں اور پھر جو کچھ ہو رہا ہے، اس کو تسلیم کر لیتی ہیں؟ تو پھر کوئی ذہنی یا سماجی تبدیلی کی صورت کیسے پیدا ہوگی؟ پھر ''اس کو تبدیل کرنے کی صورت ہے کیا؟'' جیسے مصرعے سے حالات کے لئے بھی ان کی پریشانی ہے یا صرف جین کی ہی فکر ہے۔ یہاں کچھ صاف پتہ نہیں چلتا۔ بلکہ کبھی کبھی تو یہ اندازہ ہوتا ہے کہ شاہدہ حسن ایک قدم آگے بڑھتی ہیں تو دو قدم پیچھے ہٹنا انھیں احتیاطاً اچھا لگتا ہے۔ تھوڑا گھر سے باہر جھانک کر اندر چلے جانے ہی میں وہ شاید عافیت سمجھتی ہیں۔

آج بدلتے ہوئے ماحول میں سیکس کے مسئلوں اور طریقوں میں بہت تبدیلی آ گئی ہے۔ جس کے تحت پرانی قدریں، تہذیب اور نئے رویے میں کافی کچھ تبدیل ہوتا نظر آ رہا ہے۔ جس میں مرد، گھر کی عورت ہونے کے باوجود بیرونی اور بازاری عورتوں سے اپنے رشتے بنا لیتے ہیں۔ پہلے کی عورتیں اسے برداشت کر لیتی تھیں مگر آج اس سے عورت کے اندر احتجاج کی چنگاری پنپتی ہے۔ اور وہ کسی بھی صورت میں اس حالت سے سمجھوتہ کرنے کے لئے تیار نہیں ہوتی۔ اس کے اندر ایک تڑپ پیدا ہوتی جاتی ہے کہ وہ اس کو چاہے بھوکا رکھے مگر وہ اس کے پیار میں پوری زندگی گزار دیتی ہے۔ اور زندگی کی گاڑی کو اکیلے ہی دم پر کھینچتی رہتی ہے۔ یہاں یہ جین کا معاملہ ایک طرفہ ہے۔ اور مرد جب چاہے اپنی مرضی کے مطابق جین بدل سکتا ہے۔ کیا یہ حق صرف مرد کو ہی ہے؟ عورت کو یہ حق کیوں نہیں ہے؟ لیکن اب اکیسویں صدی میں یہ عورت کو پسند نہیں۔ یہیں سے ایک استحصال بھی پیدا ہوتا ہے اور یہی وجہ ہے کہ ٹوٹتے اور بدلتے ہوئے رشتوں کی آج کے دور میں کوئی اہمیت نہیں رہ گئی ہے۔ یہیں پر عورت کے اندر ایک نئی سوچ پیدا ہوتی ہے۔ وہ یہ بخوبی سمجھتی ہے کہ اگر ہمارے رشتے اتنے کھوکھلے اور کمزور ہو گئے ہیں تو واقعی ان کو ٹوٹ جانا ہی چاہئے۔ کیونکہ شاید تم (مرد) یہ سمجھتے ہو کہ شادی کرنے کا مطلب صرف یہ ہے کہ ساتھ رہو زندگی بھر چاہے اندر ہی اندر رشتوں کی دیوار کھوکھلی ہی کیوں نہ ہو جائے مگر اسے برداشت کرتے رہو۔ یہاں پر عورت کی نظر میں جین یعنی سیکس، سیکس نہیں ہے بلکہ ایک ہوس پرستی کا روپ لے چکا ہے۔ وہ سیکس سے کہیں زیادہ اس کی شرکت چاہتی ہے۔ لیکن جب یہ ممکن نہیں ہوتا تو عورت کے ہزاروں روپ جو کہ اس کے غصے و بغاوت کی علامت میں ظاہر ہوتے ہیں تو پھر وہ بھی ایک نئی تنبیہ کی طرف متوجہ ہوتی ہے۔ یہیں سے نئی عورت کی ذہنی پرتیں کھلتی ہیں جو اس کے نئے امکانات اور چیلنجوں کو ظاہر کرتی ہیں۔ ایسے میں شاہدہ حسن کے احساسات اور اقدام یوں نظر آتے ہیں:

میں احساسات کی قندیل سے روشن ان آنکھوں سے
بہت ہی دور تک اب دیکھ سکتی ہوں
مری ہر بات میں، ہر تجربہ میں
فکر کا ایک رنگ ہوتا ہے
میں اب دانشوروں کی میز سے اپنے مقابل کو
سبک سر کر کے اٹھتی ہوں
مگر پھر بھی نہ جانے کیوں مرے دل سے
مری ماں کی بہت گہری خموشی میں گزاری عمر کا دکھ کم نہیں ہوتا

سچ بات یہ ہے کہ اب عورت کی یہی نئی سوچ اور فکر ہے تب ہی عورت سماج میں اکیلی دکھ درد سے جوجھتی اور سنگھرش کرتی نظر آ رہی ہے۔ اور جب وہ اکیلے کھڑے ہو کر ان چنوتیوں کو قبول کرتی ہے تو اس کے ارد گرد ایک عجیب و غریب تضاد پیدا ہوتا

میں جیسے ہچکچاتی ہے۔ جب کہ اس کا دل اندر سے اس کے لئے اسے تیار رکھنا چاہتا ہے:

اک حصار درودیوار کی خواہش بھی ہے خواب
گر سفر شرط ہے، پھر گھر تو نہیں رکھ سکتی

لیکن جب تک دھوپ میں خود کو کھلے سر رکھنے سے یہ عورت ڈرتی رہے گی اور ابد کی چادر ہی کا سہارا لے کر اس کڑی زندگی کو جھیلنے کی خواہشمند رہے گی، وہ مرد کی جارحیت کے خلاف ایک احتجاجی اور اپنا حق طلب کرنے والی عورت نہیں بن پائے گی۔ شاہدہ حسن عورت کے حقوق کی طلب گار تو ہیں مگر بیچ کا راستہ اختیار کر کے۔ اور اسی لئے عورت کے لئے جا بجا ان کے یہاں ایک پس و پیش، کشمکش، ڈر اور خوف دکھائی دیتا ہے:

ڈھونڈتے ڈھونڈتے میں تھک بھی چکی
کھو گئے میرے ماہ و سال کہاں
داستاں لکھ رہی تو ہوں لیکن
کوئی بھی حرف حسب حال کہاں
میری سب حالتوں کو جان سکے
کوئی اپنا شریک حال کہاں

یہ وہی بے یقینی، بے آسرا اور اقدام کی کمی اور بقول اقبالؔ طرز کہن پر اڑنے والی کیفیت ہے جو شاہدہ حسن کی عورت کو اپنے دباؤ میں لئے ہوئے ہے یا اپنی جنس کے لئے ان حالات میں کوئی بہتر راستہ بھی تلاش کرے گی؟ کیا اس کا اپنا کوئی اصول اور معیار زندگی بنے گا کہ وہ دوسروں کے ہی بنائے ہوئے اصولوں پر اپنی زندگی کے معمول گزارتی رہے گی۔ لیکن تانیثی ادب کی بیداری نے عورت کی ذہنی آزادی اور ان کے مخصوص سماجی اور نفسیاتی تجربہ کو بیدار اور فعال کر دیا ہے۔ جس کا شاہدہ حسن اپنی نظم "قابیل کی جین (gene)" میں یوں اظہار کرتی ہیں:

یہ دنیا معرکہ ہے کہ اب
جسم انسان میں
جین کے فرق کو
ظاہری باطنی
خوبیوں خامیوں
عادتوں اور اطوار کے
ہر تعلق سے سمجھا یا جانے لگے گا
کون سی جین کس جسم میں
کس تناسب سے موجود ہے
کوئی رنگت
گلابی ہے کیوں کوئی چہرہ
بہت ماہتابی ہے کیوں
آنکھ کوئی
بلا کی ذہانت سے معمور ہے کس لئے
کوئی لہجہ
اگر اس قدر رزم ہے
تو وہ ہے کس طرح
اور وراثت میں پائے ہوئے
سارے امراض سے
جاں چھڑانا بھی آسان ہو جائے گا
اس تناسب کو جب بھی
بدلنے کی کی ضرورت پڑی
حسن ترتیب کے
اک نئے رنگ سے
تجربہ گاہ کی میز پر

اور سروں پر خوف کی چادر تنی ہے
روح سے ہر جسم جیسے کٹ گیا ہے
سوچ کی راہیں
الجھتی جا رہی ہیں
ساری تدبیریں ہی گمراہی کی جانب ہیں
نگاہیں تھک گئی ہیں
اور یہاں ہر سو شکاری جال پھیلے ہیں
بہ کثرت حملہ آوری ہیں

نظم کا موڈ، مصرعوں کا ارتکاز، نظم کی فضا سب عورت کو اکسا کر سماج سے بغاوت کے لئے تیار کر رہے ہیں اور ان کا کلام خود اس کا ثبوت فراہم کرتا ہے۔ ان کے یہاں عورت اقتصادی مسائل، سماجی اتھل پتھل اور آزادی نسواں کے متعلق تمام پہلوؤں کی طرف حالات کے تحت متوجہ ہے۔ لیکن عورت کی مشکل یہ بھی ہے کہ اس کے ان گنت روپ ہیں۔ عورت جب ماں کا روپ اختیار کرتی ہے تو اس کے اندر ممتا جھلکتی ہے۔ اور اسی ممتا میں پھنس کر وہ سب کچھ برداشت کرنے لگتی ہے کیونکہ اس وقت اس کے سامنے اس کا بچہ ہوتا ہے۔ اس بچے کا مستقبل اور بچے کو باپ کا نام دینے کے لئے اس کی ضرورت رہتی ہے۔ یہ عورت کی عجب مجبوری ہے۔ کیونکہ اس کے بغیر اس کا مستقبل ادھورا ہوتا ہے اور سماج؟ اس کا کیا کہنا۔ لیکن اس کے برعکس جب وہ مسائل سے جوجھتی ہے اور تمام طرح کی اذیتیں سہتی ہے تو پھر وہ بھیانک تجربات کا زہر انڈیل دیتی ہے۔۔ یہاں پر شاہدہ حسن کے خیال میں بدلتے زمانے کی رفتار میں مرد سوسائٹی کے پینتروں اور اور اقدام کا اندازہ لگانا مشکل ہو گیا ہے۔۔ مرد سوسائٹی پوری طرح سے عورت کو اپنے دباؤ میں آج بھی رکھنا چاہتی ہے۔ اور اس کی فکر اور سوچ میں یہ بات پوری طرح بیٹھ گئی ہے کہ تم کیا جانتی ہو اور کتنا جانتی ہو؟ تم مرد کے بغیر بے اعتبار ہو گئی یعنی عورت بیکار محض ہے اور سوا افزائش نسل کے وہ کچھ نہیں کر سکتی۔ اگر اس روایتی تصور کو توڑ کر عورت آگے بڑھ بھی جاتی ہے تو اس کو معاشرے میں یہ کہہ کر خارج کر دیا جاتا ہے کہ عورت بھلا ادب تہذیب اور امکانی دنیا میں کیا کر سکتی ہے؟ یہ عجب المیہ ہے۔ سماجی اور سیاسی مسائل پر اس کی گرفت ہی کتنی ہے۔ یہ صدیوں سے چار دیواری میں رہنے والی، اس کا تجربہ ہی کتنا ہے، لیکن اس بیجا دباؤ اور چیلنج ہی نے عورت کو اپنی صلاحیتوں کی طرف متوجہ کیا ہے۔ لکھنے کی ضرورت اس لئے بھی درپیش آئی کہ جب عورت کو سرے سے Ignore کیا جانے لگا تو اس کو اپنے وجود کا اظہار کرنا بھی ضروری محسوس ہوا۔ تاکہ یہ احساس مرد سوسائٹی کو ہو جائے کہ عورت اکیلی ہوتے ہوئے بھی بہت کچھ کر سکتی ہے۔۔ اپنی نظم میں کہتی ہیں:

امید و خوف کے رستوں پہ چلتی جا رہی ہوں میں
انھیں رستوں پہ گر گر کر سنبھلتی جا رہی ہوں میں
کسی روٹھے ہوئے دل سے تخاطب چاہتا ہے دل
کسی احساس کی لو سے پگھلتی جا رہی ہوں میں

شاید اس میں عورت کی نفسیات اور محرومیاں بھی بول رہی ہیں۔ ان احساسات کو شاہدہ حسن کے دور کی تاریخ سمجھنا چاہئے۔ کیونکہ ہر دور کے اپنے مسئلے ہوتے ہیں اور ہر ادب اپنے دور کو پیش کر کے اس کی تاریخ بن جاتا ہے اور مسئلوں کو بھی تاریخ بنا دیتا ہے۔ شاہدہ حسن کی شاعری اپنے دور کی متحرک تاریخ ہے، جسے محسوس کرنے والے ہی دیکھ اور سمجھ سکتے ہیں۔

آج کی یہ عورت شاہدہ حسن کے یہاں جیسے ایک عجیب کشمکش سے گزر رہی ہے۔ شاہدہ حسن کی عورت، فہمیدہ ریاض اور کشور ناہید کی طرح دباؤ اور رکاوٹوں کو دور جھٹک کر آگے بڑھنے

شاہدہ حسن کی شاعری میں نئی عورت کا اضطراب

ڈاکٹر طاہرہ پروین
شعبہ اردو، ایس ایس بھٹہ گرلس ڈگری کالج، الہ آباد

تحریک نسواں سے عورت کے اندر ایک نئی ذہنی بیداری پیدا ہوئی ہے۔ جس کے سبب عورت اپنے تمام تر سماجی اور معاشی گتھیوں کو سلجھانے کی طرف اب متوجہ ہوئی ہے۔ جس میں سماج میں آبروریزی کی شکار عورت، اشتہار کی عورت، سماجی اور معاشی حالت کے تحت کمزور عورت، برقعے والی عورت اور اسی طرح کے اور بھی بہت سے پہلو ہیں جن میں عورت ہمیشہ سے استحصال کا شکار رہی ہے۔ لیکن عورت نے اس دباؤ کو کہاں تک باشعور ہو کر ہٹانے کی کوشش کی ہے؟ اسے چولہے چکی اور دو سے حالات میں ایسا جکڑ دیا گیا ہے کہ وہ اس سے ابھر نہیں پاتی ہے اور اگر کبھی کسی نے کوشش بھی کی تو اسے سماج، اصول اور ''لوگ کیا کہیں گے'' جیسے حالات پیدا کر کے دبا کر پھر اسی جہنم میں ڈھکیل دیا گیا ہے۔ بقول سردار جعفری:

جب تلک تو خود نہ توڑے گی طلسم رنگ و بو
تیری قسمت ایک عورت کے سوا کچھ بھی نہیں

اس سماجی نظام میں پڑھی لکھی تعلیم یافتہ عورت بھی ایک طرح کی مشین بنا دی گئی ہے۔ جو گھر اور خاندان سے سیکس ورکر تک کی محض ایک استحصال کی شے ہو کر زندہ رہنے کی اجازت پاتی ہے۔ حالات کا تقاضہ کچھ اس طرح رہا ہے کہ وہ ان سب کو اوڑھ لے تا کہ بچپن کی تھوپی گئی پابندیاں، آدرش اور پتی ورتا سماج میں پتی کی پوجا کو وہ اپنا دھرم ایمان سمجھتی رہے۔ ایسے تمام طرح کے 'ان گنت رنگوں کی عورت' شاہدہ حسن کی شاعری میں نظر آتی ہے۔

ایسے کئی سوالات شاہدہ حسن کی شاعری میں ان گنت روپ لے کر آتے ہیں جن میں زندگی اور زندگی کی سچائیاں اور اس کے پیچ وخم جڑے ہوئے ہیں۔ اور ان کی سچائیاں، اچھائیاں، برائیاں سب سے لڑتا جھگڑتا نسوانی طبقہ شامل ہے۔ لیکن ان مسائل کے ساتھ ساتھ شاہدہ حسن نے ان سے چھٹکارا پانے کا مداوا بھی پیش کیا ہے۔ جیسے وہ ''میں'' (یعنی عورت) اور ''اس'' (یعنی مرد) کافی کچھ چیلنج بھی کیا ہے۔ اپنی ایک غزل میں کہتی ہیں۔

قربت کو جو فاصلے میں بدلا
احساس بھی اک نشے میں بدلا

یہاں پر 'احساس'، 'قربت'، 'فاصلے' یہ تمام لفظ اپنے معنی اور مفہوم کھو چکے ہیں۔ اس بدلتے ہوئے ماحول میں کسی چیز کی قربت کا احساس ہونے سے اچھا ہے کہ اب دوری ہی بہتر ہے۔ کیونکہ اب نہ وہ قربتیں رہیں۔ نہ وہ محبتیں اور نہ ہوا حساس۔ اب ان سب کی جگہ دوریوں نے لے لی ہے۔ اسے بے اعتباری اور احساس کے لئے یقین کو بار بار جنم لینا پڑتا ہے۔ اور یہ یقین پھر بار بار دھوکوں میں بدلتا رہتا ہے۔ اسے مضبوطی کبھی نہیں ملتی۔ اپنی ایک دوسری نظم میں کہتی ہیں:

ایک حشر برپا ہے
جدھر بھی دیکھتی ہوں
وحشی ہیں

ہے۔ کیونکہ نفس پرستی کا رشتہ کہیں نہ کہیں مادیت پرستی سے جڑا ہوتا ہے اور مادیت کہیں نہ کہیں میکانکیت سے جڑی نظر آتی ہے اور یہ میکانکیت سائنس اور ٹیکنالوجی کی پیداوار ہے۔ سائنس اور ٹیکنالوجی نے انسانوں کے لئے طرح طرح کی آسائش اور آسانیاں فراہم کردی ہیں۔ جس نے زندگی کو آرام دہ بنادیا ہے لیکن ان سے جہاں ایک طرف انسانوں نے فائدہ حاصل کیا ہے وہیں دوسری طرف انسانی مزاج و عادات میں بھی تبدیلیاں آگئی ہیں لوگوں میں اخلاقی قدروں کی بجائے ایک طرح کا روکھا پن پیدا ہوگیا ہے رشتوں کی اہمیت زندگی میں کہیں کھوگئی ہے۔ زندگی میں خلفشار اور عدم توازن کی کیفیت پیدا ہوگئی ہے۔ اس بات کا اندازہ اقبال کی دور بیں نگاہوں نے پہلے ہی کرلیا تھا۔ اس لئے وہ مغربی تعلیم اور جدید ٹیکنالوجی کے لئے کچھ اس طرح کا اظہار اپنی نظم ''لینن خدا کے حضور میں'' میں کرتے ہیں۔

یورپ میں بہت روشنی علم و ہنر ہے
حق یہ ہے کہ بے چشمۂ حیواں ہے یہ ظلمات
وہ قوم کہ فیضان سماوی سے ہو محروم
حداس کے کمالات کی ہے برق و بخارات
ہے دل کے لئے موت مشینوں کی حکومت
احساس مروت کو کچل دیتے ہیں آلات!

ان اشعار میں صنعتی تہذیب پر بھی پورا طنز کیا گیا ہے ساتھ ہی اس بات کی طرف بھی اشارہ کیا گیا ہے کہ حد سے بڑھی ترقی انسان کے اندر اخلاقی قدروں کو ختم کردیتی ہے وہ محض مشینوں کی طرح زندگی گزارنے لگتا ہے۔ یہ سب علامتیں ہر اس تہذیب کے زوال کا سبب بنتی ہیں جو صرف مادی ترقی اور آسودگی کو زندگی کا مقصد قرار دیتی ہے۔ ان ہی خیالات کے پیش نظر اقبال نے بہت پہلے کہہ دیا تھا۔

تمہاری تہذیب اپنے خنجر سے آپ ہی خودکشی کرے گی
جو شاخ نازک پہ آشیانہ بنے گا ناپائدار ہوگا

چونکہ عہد حاضر کا دور برق رفتار تبدیلیوں کا دور ہے جگہ جگہ مغربی نظام حاوی ہے۔ شاید اسی وجہ سے آج انسان اخلاقی روحانی اور وجودی بحران کا شکار ہے۔ ان سب باتوں کی روشنی میں یہ تصور واضح ہو جاتا ہے کہ اقبال مشرقی نظام تعلیم کے حامی تھے اور وہ اسی کو قوم کے لئے بہتر خیال کرتے ہیں۔

جہاں تک بات اقبال کے تعلیمی تصور کی عصری معنویت کی ہے تو میرا یہ خیال ہے کہ جدید ٹیکنالوجی کے اس دور میں جہاں سود و زیاں کی کسوٹی پر ہر چیز کو پرکھا جاتا ہے۔ ایک ایسے دور میں جہاں انسان اپنی اخلاقی اقدار کو بھول کر اپنی قدروں سے بھٹک گیا ہے۔ اقبال کا یہ تصور نہ صرف ہمیں ہماری پرانی تہذیبی قدروں سے روشناس کرائے گا بلکہ ہمیں ایک سیدھا راستہ دکھانے، ہماری اخلاقی اقدار کو مضبوط مستحکم کرنے اور ساتھ ہی ہمیں ہماری شخصیت کا محاسبہ کرنے میں مددگار ثابت ہوگا۔ یہ ہمیں زندگی اور اس کے حقائق کو سمجھنے میں مدد کرے گا۔ یہ تو اقبال کے افکار و نظریات تھے۔

لیکن میرا خیال ہے کہ آج پوری دنیا میں ہر طرح کی تعلیم کا رواج عام ہوگیا ہے جدید علوم سے یہ دنیا گھری نظر آتی ہے اور سائنس اور ٹیکنالوجی نے عقل و خرد کے ہوش اڑا دئے ہیں۔ لیکن ان تمام ترقیوں و تبدیلیوں کے باوجود ایک کمی کا بہر حال احساس رہتا ہے کہ علم سے روشنی کم، سود و زیاں کا غلبہ زیادہ پیدا ہو رہا ہے۔ مادیت سے روحانیت زخمی ہو رہی ہے۔ تہذیب و تمدن کے ٹھوس معاملات بکھرے جاتے ہیں۔ ایسے میں اقبال کا تصور تعلیم یاد آتا ہے جہاں اخلاقیات و روحانیت پر زیادہ زور تھا۔ لیکن ساتھ ہی ہم عصر تعلیم کی بھی اہمیت و افادیت سے انکار نہیں کرسکتے کیونکہ سماجی و معاشی ترقی اور استحکام زندگی کے لئے یہ بھی لازم و ملزم ہوگئی ہیں۔ بس اس میں ایک توازن ہونا ضروری ہے۔ اور شاید استحکام زندگی کے لئے ہی اقبال نے کہا تھا۔

صاحب ساز کو لازم ہے کہ غافل نہ رہے۔

☆☆☆

اقبال کا تصور تعلیم اور اسکی عصری معنویت

عارفہ بیگم

شعبہ اردو، ایس ایس کھنہ گرلس ڈگری کالج، الہ آباد

۲۰ صدی کے مشہور مفکر و دانشور علامہ اقبال نے اپنی شاعری کے ذریعہ اردو شاعری میں ایک نئی روح پھونک دی۔ کسی بھی قوم کی ترقی اس کے اخلاقی اقدار و کردار میں مضمر ہوتی ہے اور اس کا بہترین ذریعہ ہے تعلیم۔ علامہ اقبال تعلیم کو کسی بھی قوم کی ترقی کے لئے بہترین آلہ مانتے ہیں۔

علامہ کا تصور تعلیم کا نظریہ مسائل حیات و کائنات سے بحث کرتا ہے۔ وہ اسلامی نظام تعلیم و تربیت کے حامی نظر آتے ہیں۔ اقبال اس علم کو ہی سچا علم تصور نہیں کرتے جس کی تصدیق قرآن و حدیث سے نہ ہو سکے، شاید یہی وجہ ہے کہ اقبال ان حوالوں کا استعمال اپنی شاعری میں کرتے ہیں اور اسے مضبوط و مدلل انداز میں پیش کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ اقبال تعلیم و تربیت میں ایک رشتہ قرار دیتے ہیں ان کے خیال میں محض کتابی علم ناقص ہوتا ہے۔ شاید اسی لئے وہ فرماتے ہیں۔

علم میں دولت بھی ہے قدرت بھی ہے لذت بھی ہے
ایک مشکل ہے کہ ہاتھ آتا نہیں اپنا سراغ

شاید اقبال ایسے علم کے متا قاضی نظر آتے ہیں جو ہماری صرف ظاہری شخصیت کی تعمیر نہ کرے بلکہ ہماری باطنی شخصیت کو بھی منور کر دے اور اس علم کی کمی وہ شدت سے محسوس کرتے ہیں تبھی کہتے ہیں۔

ڈھونڈنے والا ستاروں کی گزر گاہوں کا
اپنے افکار کی دنیا میں سفر کر نہ سکا

اقبال اپنے پورے کلام میں گھوم پھر کر ایک ہی بات کہتے نظر آتے ہیں کہ دماغ کے ساتھ اپنے دل کو بھی منور کرو تا کہ تمہارے اندر شعور سخت کوشی، جد و جہد اور اولوالعزمی جیسی صفات پیدا ہو سکے۔ جو زندگی کو ارتقاء پذیر کرنے میں مددگار ثابت ہو۔ اس کے لئے وہ شاہین جیسے پرندے سے سبق حاصل کرنے کی صلاح دیتے ہیں وہ کہتے ہیں۔

شاہیں کبھی پرواز سے تھک کر نہیں گرتا
پر دم سے اگر تو نہیں خطرۂ افتاد!

کیونکہ آج کا انسان ان سب جذبات و خیالات سے خالی ہے وہ صرف مشینی انداز میں زندگی گزار رہا ہے۔ شاید ان ہی کے لئے اقبال نے کہا ہے کہ۔

خدا تجھے کسی طوفان سے آشنا کر دے
کہ تیرے بحر کی موجوں میں اضطراب نہیں

اقبال کا تصور تعلیم ان تاریخی تناظر سے وابستہ نظر آتا ہے جس کی جڑیں کہیں نہ کہیں ہمارے ماضی میں پیوست ہیں شاید اسی لئے وہ اس نظام تعلیم کی حمایت کرتے ہیں جو ہمارے مشرقی اقدار سے وابستہ ہیں۔ وہ مغربی تعلیم کے مکمل طور پر مخالف نہیں تھے بلکہ اس تعلیم کے ان اثرات سے قوم کو بچانا چاہتے تھے جس سے ہماری اخلاقی اقدار کو خطرہ تھا اور شاید یہ خطرا اقبال نے محسوس کر لیا تھا تبھی وہ کہتے ہیں۔

عذاب دانش حاضر سے باخبر ہوں میں
کہ میں اس آگ میں ڈالا گیا ہوں مثل خلیل

یہاں دانش حاضر کو علامہ نے محض اصطلاح میں استعمال نہیں کیا ہے بلکہ وہ اس پوری جدید بدتہذیب کی اس کے ذریعہ نمائندگی کرتے ہیں جس کے اثرات اس آگ سے کم نہیں جس میں حضرت ابراہیم علیہ السلام کو ڈالا گیا تھا۔ اقبال اس تعلیم کو بھی بہتر خیال نہیں کرتے جو ہمارے نفس کے سکون کا سبب بنتی

گل جہان تسکین
بی۔اے۔سال اول

بچپن

یہ دولت بھی لے لو یہ شہرت بھی لے لو
بھلے ہی بھلا دو میری عمر بھر کی کہانی
مگر مجھ کو لوٹا دو بچپن کا ساون
وہ کاغذ کی کشتی وہ بارش کا پانی

فقیرانہ

فقیرانہ آ کر یہ کیا کر چلے
جو بن پائے ہم سے بنا کر چلے
ٹھکانہ بدوشی کی ایجاد کی
ٹھکانے ٹھکانے لگا کر چلے

دعائیں

رنج میں اور کڑے وقت کی رسوائی میں
دل کی ناداری میں اور ذہن کی تنہائی میں
پاس رکھنے میں اور گنوانے میں
اسے ساتھ لئے پھرتی ہوں

☆☆☆

ہماانصاری
ایم.اے.سال دوم (انگریزی)

خوبصورت غزل

زندگی کے میلے میں خواہشوں کے ریلے میں
تم سے کیا کہیں جاناں اس قدر جھمیلے ہیں
وقت کی روانی ہے بخت کی گرانی ہے
سخت بے زمینی ہے سخت لامکانی ہے
ہجر کے سمندر میں
تخت اور تختے کی ایک ہی کہانی ہے
تم کو جو سنانی ہے
بات گو ذرا سی ہے
عمر بھر کی باتیں کب دو گھڑی میں ہوتی ہیں
درد کے سمندر میں
ان گنت جزیرے ہیں بے شمار موتی ہیں
آنکھ کے دریچے میں تم نے جو سجایا تھا
بات اس دیئے کی ہے
بات اس گلے کی ہے
جو لہو کی خلوت میں چور بن کے آتا ہے
لفظ کی فصیلوں پر ٹوٹ ٹوٹ جاتا ہے
زندگی سے لمبی ہے بات رت جگے کی ہے
راستے میں کیسے ہو
بات تخلئے کی ہے
تخلئے کی باتوں میں گفتگو اضافی ہے
پیار کرنے والوں کو اک نگاہ کافی ہے
ہو سکے تو سن جاؤ ایک دن اکیلے میں
تم سے کیا کہیں جاناں کس قدر جھمیلے ہیں

☆☆☆

زنیرا انصاری
بی.اے.سال اول

غریبوں کی اوقات

غریبوں کی اوقات نہ پوچھو تو اچھا ہے
ان کی کوئی ذات نہ پوچھو تو اچھا ہے
چہرے بے نقاب ہو جائیں گے
اپنی کوئی بات نہ پوچھوتو اچھا ہے
کھیلو نہ سمجھ کر جو کھیلتے ہیں رشتوں سے
ان کی نجی جذبات نہ پوچھو تو اچھا ہے
باڑھ کے پانی میں بہہ گئے چھپر جن کے
کیسی گذری رات نہ پوچھوتو اچھا ہے

بھوک نے نچوڑ کر رکھ دیا جسے
ان کے تو حالات نہ پوچھو تو اچھا ہے
مجبوری میں جن کی لاج لگی داؤ پر
کیا لائی سوغات نہ پوچھو تو اچھا ہے

غریبوں کی اوقات نہ پوچھو تو اچھا ہے
ان کی کوئی ذات نہ پوچھو تو اچھا ہے

☆☆☆

صدیقہ خان
ایم.اے. سال دوم (انگریزی)

قیمتی تحفہ

ایک گاؤں میں ایک زبردست سیلاب آیا۔ لوگوں کے گھر بار مکان سامان اور مویشی وغیرہ سیلاب میں بہہ گئے۔ کچے مکان مٹی کا ڈھیر ہو گئے۔ ہر طرف تباہی اور بربادی کا دردناک منظر دکھائی دے رہا تھا، فصلیں تباہ ہو گئی تھیں۔

اصل بات یہ تھی کہ اس گاؤں کے لوگ بے حد کاہل اور سست واقع ہوئے تھے اور محنت سے جی چراتے تھے۔ انھوں نے سیلاب سے بچنے کے لئے پہلے سے کوئی حفاظتی اقدامات نہ کر رکھے تھے نہ ہی حفاظتی پشتے وغیرہ بنائے تھے اور نہ ہی کوئی بندوبست کیا گیا تھا۔ نتیجہ یہ نکلا کہ سیلاب کی تباہ کاریوں سے ان لوگوں کا بہت زیادہ جانی و مالی نقصان ہوا۔

کئی روز بعد جب سیلاب کا زور ٹوٹا تو وہ لوگ اپنی بربادی پر افسوس کرتے ہوئے ایک جگہ جمع ہوئے۔ شام کو غروب آفتاب کے بعد اچانک ان میں سے ایک شخص نے دور سے ایک روشنی کو گاؤں کی سمت آتے ہوئے دیکھا تو چیخ کر لوگوں کو اس کی طرف متوجہ کیا۔

سب لوگ وہ پراسرار روشنی دیکھ کر حیران و پریشان ہوئے۔ اور ہر شخص کی زبان پر یہی الفاظ تھے ''الٰہی خیر! یہ کیا چکر ہے؟ یہ کیا بھید ہے؟''

چند لمحوں بعد روشنی کا ہالا بہت قریب آ گیا اور پھر لوگوں نے دیکھا کہ اس ہالے کے اندر سے ایک خوبصورت پری نمودار ہوئی، جس کو دیکھ کر لوگ ہکا بکا رہ گئے۔ حسین و جمیل پری کے ہونٹوں پر مسکراہٹ کھیل رہی تھی۔ دیہاتیوں کے مجمع میں سے ایک نے اٹھ کر پری سے سوال کیا۔

''کون ہو تم؟''

پری نے جواب دیا ''میں آپ لوگوں کی مدد کرنے آئی ہوں اور مجھے محنت کی پری کہتے ہیں۔''

''محنت کی پری؟''

''ہاں''

''مدد، کیسی مدد؟''

''آپ لوگوں کو یہ بتانے آئی ہوں کہ اگر آپ لوگ سستی اور غفلت سے کام نہ لیتے اور سیلاب سے بچنے کے لئے مناسب حفاظتی انتظامات کر لیتے تو آج آپ لوگوں کا اتنا جانی اور مالی نقصان نہ ہوتا۔ اس مرتبہ تو جو ہونا تھا وہ ہو گیا لیکن آئندہ آپ اپنے اندر سے کاہلی، سستی اور غفلت کو دور اور ختم کر دیں۔ اپنی حکومت کے ساتھ ساتھ اپنے فرائض کو بھی سمجھیں، اس میں آپ سب کی ترقی اور سلامتی کا راز پوشیدہ ہے۔''

''یہ نصیحتیں اور مشورے ہی آپ کے لئے میرا تحفہ ہے۔''

پھر پری غائب ہو گئی اور اس کے بعد اس گاؤں کے لوگوں نے سستی، کاہلی اور غفلت جیسی برائیوں کو ترک کر دیا۔ خوب توجہ اور محنت سے اپنے گاؤں اور اس کے باشندوں کی ترقی اور خوشحالی کے کاموں میں دن رات محنت کرنے لگے۔

☆☆☆

یسرا انصاری
بی۔سے۔سال اول

فکر آخری سانس کی

ہم مر گئے تو سب کو دفنانے کی فکر ہو گی
کسی کو قبر کی تو کسی کو لے جانے کی فکر ہو گی

میرا نام پکارا جائے گا مسجد کے میناروں میں
کہیں دیر نہ ہو جائے جنازے کی فکر ہو گی

پہلے روتے تھے میرے مرنے کے افسوس میں
ہم چلے گئے تو ان کو کھانے کی فکر ہو گی

جوں ہی شام ہو گی پریشانی بڑھ جائے گی
کتنے مہمان آ گئے سلانے کی فکر ہو گی

پھیکے چاول بنائیں گے سب گوشت بنائیں گے
سب کو برادری میں عزت بنانے کی فکر ہو گی

☆☆☆

یسرا انصاری
بی۔سے۔سال اول

نادان دوست

کسی جنگل میں ایک ہرن رہتا تھا۔ وہ بہت خوش مزاج ہونے کی وجہ سے جنگل کے دوسرے بہت سے جانوروں میں بے حد مقبول اور پسندیدہ تھا۔

بیماری کے سبب ہرن بیچارہ بہت کمزور ہو گیا اور کچھ کھائے پئے بغیر تازہ گھاس میں ایک لکڑی کے تختے پر لیٹا رہتا تھا۔ جنگل کے بہت سے جانور اس کو دیکھنے کے لئے آتے رہتے تھے۔

دوستوں کی ہمدردی کی وجہ سے ہرن کو بہت ڈھارس ہوتی لیکن آہستہ آہستہ ہرن کے آس پاس بہت سے جانوروں کا جمگھٹا رہنے لگا اور وہ بیچارہ ہرن ان کی خاطر مدارات کرتے کرتے تھک جاتا تھا۔

ہرن بیچارہ مزاج پرسی کو آنے والے دوستوں کو اپنے آس پاس اگی ہوئی گھاس کاٹ کاٹ کر کھانے کو دیتا۔ یوں کچھ دنوں کے اندر ہی اندر ساری گھاس صاف ہو گئی۔

جب آنے والے جانوروں کو کھانے کے لئے کچھ نہ ملا تو انہوں نے ہرن سے آنکھیں پھیر لیں۔

اب ہرن کو سمجھ آ گیا کہ مطلب پرست دوست میری مزاج پرسی کے بہانے گھاس کھانے آتے تھے کیونکہ یہ گھاس بہت عمدہ اور لذیذ تھی۔

کچھ روز بعد ہرن صحت یاب تو ہو گیا لیکن اب اس کے اپنے کھانے کے لئے کچھ بھی موجود نہ تھا کیوں کہ گھر کے پاس اگی ہوئی گھاس صاف ہو چکی تھی۔ آخر کار بیچارہ بھوک کے مارے مر گیا۔

اس کے مرنے پر بھی کوئی جانور نہ آیا۔ شاید اس لئے کہ اب ہرن کے یہاں کھانے کو کچھ نہ ملتا تھا۔

☆☆☆

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी
253/179ए अतरसुइया रोड, इलाहाबाद - 211 003
फोन : 0532-2451367
E-mail : katripathshala@gmail.com
www.skpallahabad.com

Printed at : Rajiva Offset & Printers Pvt. Ltd. 9415340241